लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़–13

लावारिस लड़की और दूसरी कहानियॉ

बूची ओफ़ोडिल

2001

दूसरा भाग

हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Series Title: Lok Kathaon Ki Classic Pustaken Series–13
Book Title: Lavaris Ladaki Aur …. -2 (The Orphan Girl and Other Stories-2)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2019
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Africa

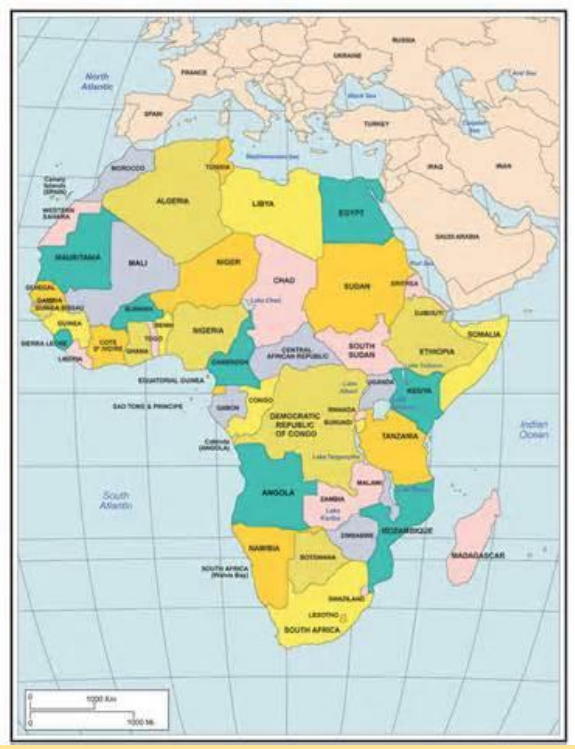

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें 5

लावारिस लड़की और दूसरी कहानियॉ–2 7

22 कैलेबाश का बच्चा 9

23 शिकारी और शेर 21

24 लैचकी राजकुमार 28

25 चीते हिरन को क्यों ढूँढते रहते हैं 41

26 जादू का ढोल 53

27 जादू की छड़ी 66

28 एक लावारिस लड़की 81

29 एक की ताकत 97

30 रबर का आदमी 103

31 बात करने वाला पेड़ 116

32 कछुआ और सूअर 126

33 रस्सा कसी 138

34 बाज़ मुर्गे क्यों खाता है 149

35 काइट जंगली आग के पीछे क्यों भागता है 159

36 मच्छर क्यों भिनभिनाते हैं□ 169

37 तुमने बुलाया है 181

38 शाही मछली 191

39 बादलों में मॉ 198

40 सबसे बड़ा चोर कौन 207

41 सूअर की थूथनी छोटी क्यों 212

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुईं और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र करके 2500 से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक और सीरीज़ शुरू की गयी – "एक कहानी कई रंग"[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में 20 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें"। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन 19वीं सदी से आरम्भ होता है। जिनका मूल रूप अब पढ़ने के लिये मुश्किल से मिलता है और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में चार प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. अफ्रीका की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
2. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
3. 19वीं सदी की लोक कथाओं की पुस्तकें
4. मध्य काल की तीन पुस्तकें – डैकामिरोन, नाइट्स औफ स्ट्रापरोला और पैन्टामिरोन। ये तीनों पुस्तकें इटली की हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

---

[1] "One Story Many Colors"

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

लावारिस लड़की और दूसरी कहानियॉ–2

एशिया के बाद अफ्रीका ही संसार में दूसरे नम्बर का महाद्वीप है जनसंख्या में भी और क्षेत्रफल में भी। नाइजीरिया अफ्रीका के पश्चिमी तट पर दक्षिण की ओर स्थित है। यह अफ्रीका का सबसे ज़्यादा जनसंख्या वाला देश है। इसकी जनसंख्या इस समय लगभग **200** मिलियन है। इसकी जनता भी बहुत भिन्न प्रकार की है।

अफ्रीका में केवल **2–4** देशों का ही साहित्य प्रकाशित रूप में मिलता है जैसे नाइजीरिया मिश्र दक्षिण अफ्रीका तनज़ानिया आदि इसलिये जहॉ भी हमें अफ्रीका की लोक कथाओं की पुस्तकें दिखायी देती हैं हम उनका हिन्दी अनुवाद कर लेते हैं। इससे पहले हमने अफ्रीका के तनज़ानिया देश के ज़ंज़ीबार द्वीप की लोक कथाओं की एक पुस्तक प्रकाशित की थी।[2] अफ्रीका की लोक कथाओं की एक पुस्तक हमने और प्रकाशित की थी जो दक्षिण अफ्रीका के भूतपूर्व राष्ट्रपति नेलसन मन्डेला की सम्पादित की हुई थी।[3] उसके बाद हमने तीसरी पुस्तक प्रकाशित की थी नाइजीरिया की योरुबा लोक कथाओं की फूजा अबायेमी की लिखी हुई "चौदह सौ कौड़ियॉ... ।"[4] उसके बाद चौथी पुस्तक थी ए सैनी की लिखी हुई "अफ्रीका की लोक कथाऐं"[5]।

आशा है ये सभी पुस्तकें आप सबको बहुत पसन्द आयी होगी। तो लीजिये अब प्रस्तुत है आपके हाथों में अफ्रीका की लोक कथाओं की यह पॉचवीं पुस्तक बूची ओफ़ोडिल की लिखी हुई "लावारिस लड़की और दूसरी कहानियॉ"।[6] इस पुस्तक में **41** लोक कथाऐं हैं जो एक पुस्तक में प्रकाशित करने के लिये बहुत अधिक हैं इसलिये हम इसे दो भागों में प्रकाशित कर रहे हैं। इसका पहला भाग तो हम पहले ही प्रकाशित कर चुके हैं यह है अब उसका दूसरा भाग अब आपको हाथों में।

हमें पूरी आशा है कि यह पुस्तक भी आपको उतनी ही पसन्द आयेगी जितनी इससे पहले वाली चार पुस्तकें आयी थीं। आशा है कि ये लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें आपको हिन्दी में पढ़ कर बहुत अच्छा लगेगा। तो लीजिये पढ़िये अफ्रीका की ये लोक कथाओं की पुस्तक की कहानियों को अब हिन्दी में।

---

[2] Bateman, George W. "Folktales of Zanzibar". Chicago: AC McClurg. 1901. 10 tales.

[3] Mandela, Nelson. "Nelson Mandela's African Favorite Folktales". WW Norton Company. 2002. 32 tales.

[4] Fuja, Abayomi. "Fourteen Hundred Cowries: traditional stories of the Yoruba". Ibadan: OUP. 1962. 31 tales.

Fuja, Abayomi. "Fourteen Hindred Cowries and Other African Tales." NY: Lothrop, Lee and Shepard. 1971. 1st American edition.

[5] Ceni, A. "African Folktales". Barnes & Nobles. 1998. 128 p. 18 tales.

[6] Offodile, Buchi. "The Orphan Girl and Other Stories". 2001. 41 tales

22 कैलेबाश का बच्चा[7]

एक बार की बात है कि नाइजीरिया में एक राजा और रानी थे। उनकी शादी को कई साल हो चुके थे पर उनके कोई बच्चा नहीं था। जैसे जैसे राजा बड़ा होता जा रहा था वह सोचता रहता था कि उसके बाद उसका वारिस कौन बनेगा।

उसकी पत्नी भी इस बात को ले कर बहुत चिन्ता करती थी। वे दोनों दिन रात अपने भगवान "ची"[8] से एक बच्चे के लिये प्रार्थना करते रहते।

इस राजा ने भी बहुत सारे राजाओं की तरह कई एकड़ जमीन में खेती की थी और रानी ने भी जैसा कि अक्सर रानियॉ नहीं करती हैं उन खेतों की देखभाल में बहुत समय लगाया था।

रोज वह बहुत सारे नौकर ले कर खेत पर जाती और उनकी देखभाल करती। शाही घर की स्त्री होते हुए भी उसने कोकोआ याम, बीन्स और कैलेबाश[9] के खेत लगाये थे।

[7] The Calabash Child (tale No 22) – an Igbo folktale from Nigeria, Africa.

[8] Chi – their personal god

[9] Calabash is a dry outer cover of a pumpkin-like fruit used to keep dry or wet things. See the third picture above

इस साल रानी के खेतों की फसल बहुत अच्छी हुई थी। कोकोआ याम की पत्तियॉ पहले से ज़्यादा हरी और चौड़ी थीं। बीन्स और कैलेबाश के पौधे भी अपने खेतों की हदों से बाहर निकले पड़ रहे थे।

रानी यह सब देख कर बहुत खुश थी। उसको पूरी उम्मीद थी कि इस बार उसकी फसल बहुत अच्छी होगी। समय आने पर पौधे बड़े हुए, उनमें कलियॉ आयीं और फिर फल भी आने लगे।

एक दिन रानी सुबह मुर्गे के बॉग देने से भी पहले जाग गयी। उसने अपनी सुबह की प्रार्थना की और हमेशा की तरह भगवान से अपने लिये एक बच्चा मॉगा। फिर वह अपनी खेती की देखभाल के लिये अपने खेतों पर चली गयी।

उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने कैलेबाश के एक पौधे के पास एक छोटी सी बच्ची को बैठे देखा। रानी को देखते ही वह बोली — "ओजीफ़ी[10] नमस्ते।"

"नमस्ते मेरी बेटी। तुम यहॉ इतनी सुबह सुबह इस खेत पर क्या कर रही हो? और तुम्हारी मॉ कहॉ है? क्या उसको पता है कि तुम यहॉ इस तरह अकेली बैठी हो?"

लड़की ने जवाब दिया — "यही मेरा घर है।"

रानी तो यह सुन कर गड़बड़ा गयी। उसकी कुछ समझ में ही नहीं आ रहा था कि वह लड़की कह क्या रही थी। यह खेत तो

[10] Ojiefi

गॉव के किसी भी घर से बहुत दूर है और उसको लगा कि उस लड़की को तो मालूम ही नहीं कि वह कह क्या रही है।

उसने फिर कहा — "पर बेटी, सबसे पास के घर से यहॉ तक आने के लिये तो एक मजबूत आदमी को भी मुर्गे की दूसरी बॉग से ले कर दोपहर तक का समय चाहिये। और मेरे बच्चे तुमको तो इससे भी ज़्यादा समय चाहिये। तुम यहॉ आ कैसे गयीं?"

पर वह लड़की केवल मुस्कुरा दी। उसने अपने आपसे ही कुछ शब्द बड़बड़ाये और अचानक वह एक कैलेबाश में बदल गयी और वह कैलेबाश रानी के पैरों की तरफ लुढ़क गया। रानी के पैरों में आ कर वह फिर से एक बच्ची में बदल गया।

रानी तो यह देख कर आश्चर्य और डर में डूबी खड़ी रह गयी। पर उसकी बच्ची को पाने की इच्छा ने उसके हर डर को जीत लिया और उसने बच्ची को अपने घर चलने के लिये कहा। उसने बच्ची से वायदा किया कि वह उसकी बहुत अच्छी तरीके से देखभाल करेगी।

लड़की यह सुन कर बहुत खुश हुई कि रानी उसको अपनी बेटी बनाना चाहती थी पर उसको लग रहा था कि यह कोई अच्छा विचार नहीं था।

वह रानी से बोली — "मुझे आपकी बेटी बनना बहुत अच्छा लगेगा। मुझे मालूम है कि जो कोई स्त्री किसी बच्चे की इतनी अच्छी देखभाल करेगी वह जरूर ही बहुत अच्छी मॉ बनेगी।

मैं दूसरे लोगों के साथ भी रही हूँ पर मुझे उनके साथ रहने का कोई बहुत अच्छा अनुभव नहीं है। इसी लिये मैंने यहाँ अकेले रहने का निश्चय किया है।"

पर रानी अपने इरादों में पक्की थी। उसने लड़की से बहुत जिद की कि वह उसके साथ चले। उसने फिर से उससे वायदा किया कि वह उस लड़की को बहुत अच्छी तरह से रखेगी न कि और दूसरे लोगों की तरह।

लड़की बोली — "ठीक है, मैं तुम्हारे साथ चलूँगी पर मेरी एक शर्त है। मुझे मालूम है कि मैं एक कैलेबाश से निकली हूँ फिर भी मैं एक कैलेबाश की बेटी कहलाने से नफरत करती हूँ। जिस दिन भी कोई मुझे कैलेबाश की बेटी कहेगा वह दिन मेरा तुम्हारे साथ आखिरी दिन होगा।"

रानी बोली — "मैं तुमसे वायदा करती हूँ कि कोई तुमको कैलेबाश की बेटी नहीं कहेगा। मैं राजा की पत्नी हूँ और जो मेरे पति कह देते हैं वह कानून होता है।"

वह बच्ची राजी हो गयी और रानी के साथ उसके घर चली गयी। राजा की पत्नी बहुत खुश थी। वह उसको गले से लगा कर खुशी से रो पड़ी।

आखिर उसको अपना एक बच्चा मिल गया था जिसको वह गले से लगा सकती थी, जिसके लिये वह खाना बना सकती थी और जो उनके बुढ़ापे में उनको खुशी देता।

जब वे घर आये तो रानी ने खेत पर जो कुछ भी हुआ वह राजा से कहा और फिर उसको यह बताया कि किस तरह उसने इस बच्ची को पाया था।

राजा भी उस बच्ची को देख कर बहुत खुश हुआ। उसने अपने सारे आदमियों को बुलाया और गॉव भर में बहुत खुशियॉ मनायी गयीं। राजा को भी आखिर एक बच्चा मिल गया था जो उसका वारिस बनता।

राजा ने उस लड़की का नाम ओनूनेलियाकू[11] रखा जिसका मतलब होता है "पैसा खाने वाली", और रानी ने उसका नाम रखा इफ़ेयिन्वा[12] जिसका मतलब होता है "बच्चे के बराबर कोई नहीं"।

इसके बाद राजा ने सबको मना कर दिया कि वे उसको कभी भी कैलेबाश की बच्ची कह कर नहीं पुकारेंगे। अगर किसी ने भी कभी भी उसे इस नाम से पुकारा तो उसे मौत की सजा दी जायेगी।

लोगों ने राजा की लड़की की खबर को बड़े अच्छे तरीके से लिया और वे बहुत दिनों तक दावतें खाते रहे और नाचते रहे। राजा भी बहुत खुश था। उसने अब अपना दूसरा नाम रख लिया था ओबियाजुलू[13] जिसका मतलब होता है "आखीर में शान्ति"।

ओनूनेलियाकू बड़ी हो कर एक बहुत ही सुन्दर स्त्री बन गयी। पास और दूर देशों से राजकुमार उससे शादी की इच्छा प्रगट करने

---

[11] Onunaeliaku – means "born to consume wealth".

[12] Ifeyinwa – means "nothing like a child"

[13] Obiajulu – means "finally at peace"

लगे पर राजा ने उसकी शादी करने से मना कर दिया। उसने कहा यह मेरी एकलौती बच्ची है मैं चाहता हूँ कि मेरे मरने के बाद यही मेरी वारिस हो इसलिये मैं इसकी शादी नहीं करूँगा।

हालॉकि कुछ लोग एक लड़की के राजा होने के विचार से खुश नहीं थे पर उनके पास और कोई चारा नहीं था सिवाय इसके कि वे भी राजा की खुशी में खुशी मनायें।

राजा अपनी बेटी ओनूनेलियाकू को कभी अपनी ऑखों से दूर नहीं करता था। उसके पास इतने नौकर थे कि उसने कई नौकर तो केवल उसी की देखभाल और सेवा के लिये दे रखे थे। उसने उसे वह सब कुछ दे रखा था जो उसे चाहिये था।

ओनूनेलियाकू ने भी अपने आपको गॉव की ज़िन्दगी में ढाल लिया था और वह राजकुमारी लगती भी थी।

एक दिन राजा और रानी को कहीं बाहर जाना था। उन्होंने अपने सारे नौकरों को बुलाया और कड़ी ताकीद कर दी कि वे राजकुमारी को एक मिनट के लिये भी अपनी ऑखों से ओझल न होने दें और जो वह कहे वह कर दें। उसको कोई नुकसान नहीं पहुँचना चाहिये।

राजा और रानी के जाने के काफी देर बाद ओनूनेलियाकू को भूख लगी सो उसने नौकरों से अपने लिये खाना बनाने के लिये कहा। उन्होंने कहा कि खाना अभी तैयार होता है।

वह इन्तजार करती रही पर उसका खाना नहीं आया। अब उसको भूख और ज़्यादा लगने लगी तो वह देखने गयी कि क्या मामला है। वह बोली — "मुझे बहुत भूख लगी है। क्या अभी तक खाना तैयार नहीं है?"

नौकरों ने कहा — "कैसा खाना? हा हा हा हा।"

नौकर उसके ऊपर हॅस पड़े और बोले — "अगर तुमको खाना खाना है तो अपना खाना खुद बना लो।

हम लोग तो इसी दिन के इन्तजार में थे कि कब राजा और रानी यहॉ से जायें तो हम लोग भी कुछ आनन्द मनायें। क्या यह काफी नहीं है कि वे हमको तुम्हारे आस पास छोड़ गये हैं। ओ कैलेबाश की बच्ची।"

यह सुन कर ओनूनेलियाकू बहुत दुखी हुई। उसकी ऑखें रोते रोते लाल और भारी हो गयीं। वह अपने कमरे में वापस चली गयी और वहीं लेटी लेटी बहुत देर तक रोती रही।

फिर उसने वह सारी चीज़ें छोड़ दीं जो राजा ने उसे दी थीं। उसने अपने पुराने कपड़े पहने जिनमें रानी ने उसको पहली बार देखा था और वह पिछले दरवाजे से निकल कर राजा के महल की चहारदीवारी से बाहर चली गयी।

राजा और रानी उसी शाम को वापस लौट आये पर उनको अपनी बेटी ओनूनेलियाकू कहीं दिखायी नहीं दी जो उनका स्वागत करती और उनके गले लगती।

राजा ने पुकारा ओनूनेलियाकू, ओनूनेलियाकू। पर उसका कोई जवाब नहीं था। राजा ने सोचा शायद वह सो गयी हो सो वह घर के अन्दर गया, फिर उसके कमरे में गया पर वह कहीं नहीं मिली। उसका कमरा वैसा ही था जैसा पहले रहता था।

ओनूनेलियाकू – राजा एक बार और चिल्लाया पर उसे कोई जवाब नहीं मिला। अबकी बार रानी ने महल के ऑगन की तरफ भागते हुए पुकारा "इफ़ी, बहुत हो गया। तुम जहॉ भी हो मुझे जवाब दो।"

राजा ने तुरन्त ही अपने सारे नौकरों को बुलाया और उनसे पूछा कि राजकुमारी को क्या हुआ जिसको वह उनकी देखभाल में छोड़ कर गया था।

उनमें से एक नौकर बोला — "हमने तो उसको नहीं देखा।"

पर राजा ने कहा — "तुमको पता होना चाहिये कि वह कहॉ है और उसको क्या हुआ? क्योंकि मैं तुम लोगों से कह कर गया था कि तुम उसको अपनी ऑखों से एक मिनट के लिये भी ओझल मत होने देना।"

राजा के इस तरह कहने पर एक नौकर ने कहा — "हमने उसको पुराने कपड़े पहने हुए खेतों की तरफ जाते देखा था।"

तुरन्त ही राजा और रानी अपनी बेटी के पीछे भागे। कई गॉव पार करने के बाद वह उनको दिखायी दे गयी। रानी ने पूछा — "क्या बात है इफ़ी तुम यहॉ से क्यों भागी जा रही हो?"

पर इफ़ेयिन्चा कोई भी बात करने के लिये बहुत दुखी थी। रोते रोते उसकी ऑखें लाल थीं। उसने अपने हथेली के पीछे से अपनी ऑखों के ऑसू पोंछे और गाना शुरू किया —

मेरी मॉ ने मुझे पैदा किया, टुमान्वे
और मेरा नाम रखा पैसा खर्च करने वाली, टुमान्वे
मेर पिता ने मुझे पैदा किया, टुमान्वे
और मेरा नाम रखा पैसा खर्च करने वाली, टुमान्वे

मेरे अपने नौकरों ने मुझे देखा, टुमान्वे
और उन्होंने मुझे पुकारा कैलेबाश की बच्ची, टुमान्वे
मैं कैलेबाश की बच्ची हूॅ या नहीं, टुमान्वे
मैं अपने घर जा रही हूॅ, टुमान्वे
मैं कैलेबाश की बच्ची हूॅ या नहीं, टुमान्वे
मैं अपने घर जा रही हूॅ, टुमान्वे

राजा और रानी दोनों बहुत दुखी थे। उन्होंने ओनूनेलियाकू से बहुत प्रार्थना की कि वह उनके साथ वापस घर चले।

राजा बोला — "हमारे साथ घर वापस चलो बेटी। मेरे घर के एक नौकर की इतनी हिम्मत कि वह मेरी बेटी को उस नाम से पुकारे जिसको मैंने मना किया है? यह नहीं हो सकता।

तुम मेरे साथ चलो और कम से कम चल कर मुझे यह तो बताओ कि वह कौन है जिसने तुमको इस नाम से पुकारा। मैं उसको

उसकी करनी का सबक सिखाऊँगा और उसको इज़्ज़त करना सिखाऊँगा, चाहे मैं घर में हूँ या नहीं।"

पर ओनूनेलियाकू तो अपनी जिद पर अड़ी थी कि उसको वहीं वापस जाना है जहाँ से वह आयी थी और इस तरह से उसको बहलाया नहीं जा सकता।

वह बोली — "नौकरों ने मेरा विश्वास तोड़ा है, मेरी इज़्ज़त को बट्टा लगाया है। मुझे नहीं मालूम कि इस तरह से मैं किस तरह से एक राजा के घर में रह सकती हूँ। मुझे वहाँ वापस जाने दीजिये जहाँ मैं शान्ति से रह सकूँ और मेरे भेद कोई न जान सके।"

यह देख कर कि उसने अपनी बेटी को हमेशा के लिये खो दिया है राजा बहुत रोया और रोते रोते उसकी आखें लाल हो गयीं।

हम सब जानते हैं कि एक आदमी के लिये रोना कितना मुश्किल होता है। किसी आदमी का रोना उन सबके दिलों में एक बोझ पैदा कर देता है जो उसको रोते हुए देखता है।

और यहाँ तो केवल एक आदमी ही नहीं बल्कि एक राजा रो रहा था जिसके पास कुछ भी करने की ताकत थी पर फिर भी वह उस छोटी लड़की को उसकी इच्छा के खिलाफ नहीं रोक सका।

इस बात से ओनूनेलियाकू का दिल पिघल गया। राजा के प्यार का विश्वास देख कर उसने सोचा कि वह उनके साथ घर वापस जायेगी।

उसके इस फैसले से राजा और रानी बहुत खुश हुए और ओनूनेलियाकू को अपने साथ अपने गॉव वापस ले गये। जब वे सब गॉव पहुँचे तो ओनूनेलियाकू ने राजा को बताया कि वह कौन सा नौकर था जिसने उसको उस नाम से बुलाया था।

राजा का गुस्सा फिर से बढ़ गया और इतना बढ़ गया कि उसने अपने सब नौकरों को मरवाने का हुक्म सुना दिया। सारे नौकरों को मरवाने से राजा को लगा कि शायद वह ओनूनेलियाकू से फिर से इज़्ज़त पा सकेगा।

पर इससे हुआ कुछ और भी। नौकरों को मरवाने से ओनूनेलियाकू के ऊपर पड़ा एक आत्मा का डाला हुआ जादू टूट गया। उस आत्मा ने उससे कहा था कि "तुम हमेशा कैलेबाश ही बनी रहोगी जब तक कि तुम्हारे लिये किसी आदमी का खून नहीं बहेगा।"

सो जैसे ही वे नौकर मारे गये उसके ऊपर का वह जादू टूट गया और ओनूनेलियाकू अब एक साधारण लड़की बन गयी।

जब राजा और रानी मर गये तो ओनूनेलियाकू गॉव की ऐज़े न्वान्यी[14] बन गयी। उसके लोग उसकी बहुत इज़्ज़त करते थे और वह भी उनके ऊपर दया से राज करती थी जैसे उसके पहले उसके पिता किया करते थे।

[14] Eze Nwanyi – queen

यहीं से उस गॉव में स्त्री का राज शुरू हुआ जहॉ पहले केवल आदमी ही राजा हुआ करते थे।

23 शिकारी और शेर[15]

बहुत पहले की बात है कि एक देश के एक गॉव में एक शिकारी रहता था। एक दिन उसने अपना तीर कमान उठाया और जंगल में शिकार करने गया।

जंगल में उसने उस दिन सारे दिन में एक हिरन और दो खरगोश मारे और वह अपने इस शिकार से बहुत खुश था। उसने हिरन अपनी गर्दन में लटका लिया और दोनों खरगोश अपनी कमर में बॉध लिये।

वह खुशी से सीटी बजाता चला जा रहा था और सोचता जा रहा था कि वह अपने शिकार को अपने लोगों में कैसे बॉटेगा कि तभी उसका ध्यान किसी की सहायता के लिये पुकारने की चीख ने खींच लिया।

उसको लगा कि वह चीख किसी शेर की थी। वह चौंक गया और डर भी गया। पहले तो उसने सोचा कि "यह शायद यह मेरे शिकार के पीछे होगा।"

पर फिर उसे लगा कि वह किसी सहायता के लिये चीख रहा था सो वह जल्दी से चीख आने वाली दिशा की तरफ मुड़ा पर

---

[15] The Hunter and the Lion (Tale No 23) – a Yoruba folktale from Nigeria, West Africa.
[My Note: This story is similar to the story "Aadmee Aur Sher" given in the book "Mere Bachpan Ki Kahaniyan" by Sushma Gupta written in Hindi language.]

उसको ऐसा कुछ दिखायी नहीं दिया जिससे वह यह जान सके कि वह शेर किस तरह की सहायता के लिये चीख रहा था।

इतनी ही देर में वही चीख फिर सुनायी दी। इस बार वह समझ गया कि यह चीख किस तरफ से आयी थी। यह शेर था यह तो पक्का था पर कहॉ था यह उसको दिखायी नहीं दे रहा था।

उसने ऊपर नीचे देखा तो देखा कि एक शेर एक पेड़ की दो डालों के बीच से तकिये की तरह लटक रहा है।

शिकारी ने बड़ी नाउम्मीदी से अपना सिर हिलाया और बुदबुदाया — "जैसा कि मैंने सोचा था यह तो वही है।"

उसने अपना हिरन तो नीचे जमीन पर रखा और अपना तीर कमान उठाया। शेर को देखते हुए उसने अपना तीर कमान पर चढ़ाया और कमान की रस्सी धीरे से खींची।

उसको लगा कि शेर तो हिल भी नहीं रहा कि तभी शेर बोला — "मेहरबानी कर के मेरी सहायता करो आदमी भाई मैं यहॉ फॅस गया हूँ।"

यह सुन कर शिकारी ने अपना तीर कमान नीचे कर लिया और बहुत ही सावधानी से उस पेड़ का चक्कर लगाया।

वह यह देखना चाहता था कि शेर उसके साथ कहीं कोई चाल तो नहीं खेल रहा पर उसने देखा कि नहीं वह चाल नहीं खेल रहा बल्कि वह सचमुच में ही फॅस गया है और दर्द में है।

शिकारी ने पूछा — "अरे तुम यहाँ कैसे आये? और यह सब तुम्हारे साथ किसने किया?"

शेर बोला — "पहले मुझे नीचे उतारो फिर मैं तुम्हें बताता हूँ।"

शिकारी ने शेर को नीचे उतरने में सहायता की। उसने उसको फँसने वाली जगह से निकाला और नीचे उतारा।

शेर बोला — "तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद। यह उस बदमाश हाथी का काम है। उसी ने मुझे ऊपर फँसा दिया था और मैं तीन दिन से यहीं लटका हुआ हूँ।"

शिकारी बोला — "वह तो ठीक है पर अब तो तुम नीचे आ गये हो अब तुम जाओ। मुझे भी अपने परिवार के पास जाना है।"

अब जैसा कि तुमको मालूम है बच्चो, शेर उस पेड़ के ऊपर तीन दिन से फँसा पड़ा था। बह भूखा था, थका हुआ था और प्यासा था सो उसने शिकारी से एक और चीज़ के लिये प्रार्थना की।

शेर बोला — "भाई तुमने मेरे ऊपर बड़ी दया की जो मुझे इस पेड़ से आजाद कर दिया पर केवल इससे मेरा क्या भला होगा अगर तुम मुझे यहाँ अकेला मरने के लिये छोड़ जाओ। अभी मैं कोई भी शिकार करने के लिये बहुत कमजोर हूँ क्या तुम मुझे कुछ खाने को दोगे मुझे बहुत भूख लगी है। मैंने तीन दिन से कुछ खाया नहीं है।"

शिकारी बोला — "मैं तुम्हारे लिये खाना कहाँ ढूँढू?"

शेर बोला — "यह हिरन मेरे लिये काफी है। यह हिरन मुझे दे दो। मुझे तो तुम सच्चे दोस्त लगते हो जिसकी मैं अपनी किसी भी मुसीबत में सहायता ले सकता हूँ।

मेहरबानी कर के अभी तुम मेरी सहायता कर दो और जब मैं अपना शिकार करने के लिये थोड़ा ठीक हो जाऊँगा तब मैं तुम्हारी इस दया का बदला जरूर चुका दूँगा।"

शिकारी ने कुछ देर सोचा फिर अपने हिरन को दो हिस्सों में काटा और उसमें से एक हिस्सा शेर को दे दिया और बोला — "ठीक है, इसके लिये तुमको मुझे कुछ देने की जरूरत नहीं है। तुम इसे खाओ और जाओ। अब मैं चलता हूँ।"

शिकारी ने मुश्किल से अपनी बात खत्म ही की थी कि शेर ने एक बार में ही अपने हिस्से का हिरन निगल लिया और उससे और मॉस मॉगा। शिकारी ने हिरन का दूसरा हिस्सा भी उसको दे दिया।

शेर ने उसको भी तुरन्त ही खा लिया और फिर शिकारी की कमर में बॅधे हुए खरगोशों की तरफ देखते हुए खाने के लिये कुछ और मॉगा। बेचारे शिकारी ने वे दोनों खरगोश भी उसको दे दिये। उसने उनको भी खा लिया और फिर और खाना मॉगा।

शिकारी बोला — "पर अब तो मेरे पास कुछ भी नहीं है। जो कुछ मैंने आज पकड़ा था वह सब तो मैं तुमको दे चुका।"

शेर बोला — "पर मेरा तो अभी पेट नहीं भरा है। मुझे तीन दिन हो गये हैं खाना खाये हुए। मैं क्या करूँ।"

इस बीच शेर की निगाह शिकारी के कुत्ते की तरफ थी।

शिकारी बोला — "नहीं नहीं, मेरा कुत्ता नहीं।"

शेर बोला — "पर मेरा तो अभी पेट नहीं भरा। मुझे अभी और खाना चाहिये।"

शिकारी के पास और कोई चारा नहीं था सो उसने शेर को अपना कुत्ता भी खाने के लिये दे दिया।

कुत्ता खा कर शेर बोला — "मुझे अभी और खाना चाहिये।"

अब शिकारी और शेर दोनों आपस में बहस करने लगे।

शिकारी बोला — "तुम्हारे साथ भलाई करने का क्या यही फल है जो तुम मुझे अपनी जान बचाने के बदले में दे रहे हो? क्या भगवान मुझे तुम्हारे साथ भलाई करने के बदले में यही सजा दे रहा है?"

वे जब आपस में इस तरह की बातें कर ही रहे थे कि तभी उनको एक खरगोश आता दिखायी दिया। खरगोश बोला — "लगता है यहाँ कुछ गड़बड़ है। क्या बात है तुम लोग आपस में क्या बहस कर रहे हो?"

जैसे शिकारी खरगोश का ही इन्तजार कर रहा हो और जैसे कि वह कोई जज हो शिकारी ने तुरन्त ही अपना मामला खरगोश के सामने रखा। फिर खरगोश शेर की तरफ देखता हुआ बोला कि वह भी अपनी कहानी बताये।

शेर बोला — "यह ठीक कह रहा है। पर मुझे अभी भी भूख लगी है और मुझे अभी और खाना चाहिये।"

खरगोश ने शेर से पूछा — "पर तुम वहाँ उस पेड़ पर फँसे कैसे?"

इस पर शेर ने उसको बताना शुरू किया कि वह उस पेड़ पर कैसे फँस गया था। पर खरगोश बोला कि उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था।

वह बोला — "जिस तरीके से तुम यह सब मुझे बता रहे हो न, यह सब बहुत ही गड़बड़ घोटाले वाला मामला है। यह कैसे हो सकता है कि तुम तीन दिन तक वहाँ उस पेड़ पर ही फँसे पड़े रहे?

क्योंकि अगर तुम झूठ बोल रहे होगे तो फिर मेरे पास इसके अलावा और कोई चारा नहीं है कि मैं शिकारी की तरफ अपना फैसला सुना दूँ।

मुझे यकीन है कि मैं इसे तब ज़्यादा अच्छी तरह समझ पाऊँगा और ज़्यादा अच्छी तरह से फैसला दे पाऊँगा अगर मैं तुमको उस जगह वैसे ही बैठा देख पाऊँ जैसे कि शिकारी ने तुमको वहाँ बैठे देखा था।"

फिर वह शिकारी की तरफ मुड़ा और उससे बोला कि वह शेर को वहीं रख दे जहाँ वह फँसा हुआ था और जहाँ उसने उसको देखा था ताकि वह देख सके कि वह कहाँ था।

सो शेर मरे जैसा पड़ गया। शिकारी ने उसे उठाया और फिर से उसे उन शाखों के बीच फॅसा दिया। शेर बड़े दर्द के साथ बोला — "मैं यहॉ ऐसे ही फॅसा हुआ था।"

खरगोश बोला — "तो फिर ओ शिकारी। ज़रा यह तो बताओ कि एक टिड्डा जिसको हौर्नबिल[16] ने मारा वह तो बहरा था पर तुम तो आदमी हो और शेर एक जानवर है। तुमने उसको बचाया ही क्यों?

तुमने तो उसे जो कुछ तुम्हारे पास तो वह सब कुछ दे दिया और फिर भी उसको और चाहिये – यानी कि तुम। मार दो इसको।" यह सुन कर शिकारी ने शेर को मार दिया और उसको अपने घर खाने के लिये ले गया।

उस दिन के बाद उसने कसम खायी कि वह जैसे जैसे उसके सामने चीज़ें आती जायेंगी वैसे वैसे उनको लेता जायेगा।

और तब से वह हमेशा से ही वैसा करता चला आ रहा है खास करके जब भी वह किसी शेर को देखता है।

[16] Hornbill – a kind of bird with bent beak. See its picture above.

24 लैचकी राजकुमार[17]

एक बार की बात है कि नाइजीरिया के एक गॉव में बहुत ही अमीर और ताकतवर राजा रहता था। वह इतना ताकतवर था कि पड़ोस के गॉव के राजा भी उसको टैक्स देते थे। इसके बदले में वह उनकी उनके दुश्मनों से रक्षा करता था।

इस राजा के पास सब कुछ था जो वह चाहता था पर फिर भी उसके पास एक चीज़ नहीं थी जिसकी उसको बहुत इच्छा थी और वह था एक बेटा।

जैसा कि इस देश में रिवाज था राजा के चार पत्नियॉ थीं। हालॉकि उन सबसे उसके **15** बच्चे थे पर वे सब लड़कियॉ थीं, लड़का कोई नहीं।

हालॉकि ये चारों पत्नियॉ उसकी रिवाज के अनुसार थीं पर फिर भी वह अपनी पहली पत्नी के कहने से अपनी मैबू[18] नाम की आखिरी पत्नी से बहुत ही बुरा बर्ताव करता था।

उसने अपनी जमीन पर अपने महल के पास अपनी तीनों पत्नियों के लिये बहुत सुन्दर सुन्दर घर बनवाये। पर अपनी चौथी

[17] The Latchkey Prince (Tale No 24) – an Igbo folktale from Nigeria, West Africa.
Latchkey is a child who does have a parent or parents but when he comes home from school no parent is at home to take care of him. This is the story of such a prince.

[18] Mebu – the name of the King's fourth queen

पत्नी के लिये उसने एक झोंपड़ा बनवाया जो था तो उसकी अपनी जमीन पर ही पर उसके महल से सबसे ज़्यादा दूरी पर था।

जब भी वह अपनी पत्नियों के लिये बाहर से चीज़ें ले कर आता तो वह हमेशा अपनी तीन पत्नियों को ही याद रखता। उसकी चौथी पत्नी राजा की जमीन पर इतनी गरीब थी कि उसके पास भर पेट खाना भी नहीं था।

राजा ने बेटा पाने के लिये बहुत कुछ किया पर सब बेकार गया। वहॉ के रीति रिवाजों के अनुसार उसकी कोई भी लड़की उस गॉव की बागडोर अपने हाथ में नहीं ले सकती थी, यानी कोई भी लड़की उसकी वारिस नहीं बन सकती थी।

आखिर में राजा अपने पुरखों के मन्दिर के बड़े पुजारी के पास गया और उससे अपना दुखड़ा रोया। वहॉ उसने राजा को उसकी चारों पत्नियों के लिये एक खास किस्म के पाम के चार बीज[19] दिये।

उसने राजा से कहा — "तुम्हारी हर पत्नी इस बीज को तोड़े पर बजाय इसकी गिरी खाने के वे इनके छिलके खाये और इसकी गिरी फेंक दें।"

राजा बोला — "मैं उनको कह दूँगा।" और अपने महल को चला गया।

[19] Palm Kernels – edible seed of the oil palm tree. See their picture above.

जब वह अपने घर पहुँचा तो उसने वे पाम के बीज अपनी तीनों पत्नियों को दे दिये और बड़े पुजारी जी का बताया हुआ उसको खाने का तरीका भी बता दिया। चौथा बीज उसने नदी में फेंक दिया।

राजा की तीनों पत्नियाँ बहुत घमंडी थीं। पहले तो वे यह ही नहीं समझ सकीं कि कोई पाम की गिरी खायेगा ही क्यों? क्योंकि वह तो गरीब लोगों का खास खाना है फिर उसके छिलके को तो खाने का सवाल ही पैदा नहीं होता।

एक ने कहा — "मैं समुद्र में घुस कर यह शिकायत कैसे कर सकती हूँ कि साबुन मेरी आँखों में लग रहा है?"

दूसरी बोली — "मैं पाम के बीज का छिलका कैसे खा सकती हूँ? मैंने तो कभी पाम की गिरी भी नहीं खायी।"

तीसरी बोली — "मैंने ऐसी बेकार की बात तो कभी नहीं सुनी कि पाम की गिरी फेंक दो और उसका छिलका खा लो।"

सो उन सबने अपने अपने पाम के बीज तोड़े और उनके छिलके फेंक दिये और राजा की बात रखने के लिये उनकी गिरी खा लीं।

एक बोली "उफ़"। दूसरी बोली "फू।" और उसने उस गिरी का छूँछ थूक दिया। तीसरी बोली "मैं सोच सकती हूँ कि इस बीज का छिलका कैसा होगा।" कह कर उसने पाम की गिरी तो किसी तरह से खा ली पर उसका छिलका फेंक दिया।

राजा का वह नौकर जिसको उसने अपनी तीनों पत्नियों को यह सब कहने को लिये भेजा था राजा का मेबू के साथ का बर्ताव बिल्कुल पसन्द नहीं करता था। सो जब भी उसको मौका लगता वह मेबू के लिये महल से छिपा कर खाना निकाल कर ले जाता और उसको दे देता।

जब उसने देखा कि राजा की दूसरी पत्नियों ने उन पाम के बीजों का क्या किया तो उसने पाम के बीज के वे छिलके उठाये और उनको मेबू को दे कर बोला — "ये छिलके तुमको खाने ही हैं मेबू। मुझे अफसोस है कि तुम सोच रही होगी कि आज मैं तुम्हारे लिये क्या ले कर आया पर आज मैं तुम्हारे लिये बस यही ला सका।"

मेबू बोली — "कोई बात नहीं। तुम तो मेरा हमेशा ही बहुत ख्याल रखते हो। तुम तो मेरे ची[20] की तरह हो। इसके अलावा एक पिता जो याम[21] अपनी बेटी के हाथ की हथेली पर रखता है वह उसको कभी जलाता नहीं।"[22]

मेबू ने पाम के वे छिलके उस नौकर के हाथ से ले कर खा लिये।

---

[20] Chi – their personal god

[21] Yam is tuber like vegetable. It is a staple food of West African countries, especially of Nigeria. See its picture above.

[22] Notice here the faith of younger people in their elder respectable wellwishers

पाम के वे बीज अपनी पत्नियों को देने के बाद राजा को यकीन था कि उसकी तीनों प्रिय पत्नियॉ लड़कों को जरूर जन्म देंगी।

उसने यह भी निश्चय कर लिया था कि उन लड़कों के जन्म के बाद जो कोई भी लड़की उसके घर में जन्म लेगी वह उसको घर से बाहर निकाल देगा।

कुछ दिन बाद राजा की उन तीनों प्रिय पत्नियों ने एक एक करके तीन लड़कियों को जन्म दिया तो उसने उनको तुरन्त ही बाहर फेंक दिया गया।

पर जब मेबू की बारी आयी तो राजा की बड़ी पत्नी उसकी दाई बना कर भेजी गयी। राजा की बड़ी पत्नी रानी ऐजो या मीनी[23] के नाम से जानी जाती थी। वह अपने नाम जैसी थी। मेबू को जब बच्चा हुआ तो वह एक लड़का था।

यह देखते ही ऐजो ने उस लड़के को तो नदी में फेंक दिया और मेबू से कहा कि उसने एक मरी हुई बच्ची को जन्म दिया है। मेबू बेचारी और क्या करती वह अकेली ही अपनी झोंपड़ी में चली गयी और अपनी बदकिस्मती पर रोती रही।

पर वह भगवान जो बच्चों की देखभाल करता है जरूर ही उस भगवान से कोई दूसरा भगवान होता होगा जो बड़े लोगों की देखभाल करता है।

[23] Ajo or Meany – the name

क्योंकि उस भगवान ने बजाय उस बच्चे को नदी में डुबोने के उसे तैरा दिया और वह नदी के बहाव के साथ नदी में नीचे की तरफ बहता चला गया।

नीचे नदी में एक अकेली बूढ़ी स्त्री अपने कपड़े धो रही थी। वहाँ जा कर वह बच्चा उसकी टाँगों में अटक गया। उसको लगा कि शायद कोई मछली आ कर उसकी टाँगों से लिपट गयी है।

सो जैसे ही उसने अपना मुँह फिरा कर अपने बड़े चाकू[24] को उठाने के लिये हाथ बढ़ाया ताकि वह उस मछली को मार सके तो उसने देखा कि वह तो मछली नहीं एक बच्चा था।

वह आश्चर्य और खुशी से चिल्लायी — "ओह बच्चा?" फिर तुरन्त ही उसके मुँह से निकला "किसका बच्चा है यह और इसकी माँ कहाँ होगी?"

उसने उस बच्चे को उठा लिया और उसे पानी पिलाया। उसने सोचा — "लगता है किसी ने इसको राजा के कानून के डर से नदी में फेंक दिया है।"

पहले तो वह बहुत देर तक उस बच्चे की माँ का इन्तजार करती रही कि अगर वह उसको ढूँढ रही हो तो आ कर उसे ले जाये पर जब उसे लेने के लिये काफी देर तक कोई नहीं आया तो वह उसको अपने घर ले गयी और उसको पालने पोसने लगी।

---

[24] Translated for the word "Matchet" or "Cutlass" – a long blade knife or short blade sword mostly used for cutting grass or trees etc. See its picture above.

घर जाते समय वह कहने लगी — "आखिर भगवान ने आज मेरी प्रार्थना सुन ही ली।"

वह बच्चा बड़ा हो कर अच्छा सुन्दर लड़का हो गया। वह बुढ़िया उस बच्चे को बहुत प्यार करती थी पर साथ में इस बात के लिये चिन्ता भी करती थी कि जरूर ही कभी कोई आयेगा और उसको ले जायेगा।

इसलिये जब भी कभी वह बाहर जाती तो वह उसको घर में ताले में बन्द कर जाती और इस बात का ध्यान रखती कि उसके लिये घर में खाना और पानी काफी रहे। इस तरह वह छोड़ा हुआ बच्चा एक सुन्दर लैचकी बच्चे के रूप में बढ़ने लगा।

एक दिन राजा का कुत्ता एक गिलहरी का पीछा कर रहा था। पीछा करते करते वह उसी मकान के पीछे की तरफ आ गया जहाँ यह लड़का रहता था।

इतने में वह गिलहरी उस कुत्ते की आँखों से ओझल हो गयी। सो वह कुत्ता इधर उधर सूँघता हुआ घूमने लगा और उस बुढ़िया के मकान की बाँस की चहारदीवारी लाँघ कर अन्दर चला गया। वह कुत्ता वहाँ तक आ गया जहाँ वह लड़का खाना खा रहा था।

लड़के ने उसे पुकारा — "डौगी डौगी। यहाँ आ।"

और उसको थोड़ा सा खाना और हड्डी खाने के लिये दी। फिर उसने कुत्ते को थपथपाया। थोड़ी देर में वह कुत्ता वापस जाने लगा तो उस लड़के ने गाया —

ओ राजा के कुत्ते तूने मुझे ढूँढ लिया, ला ला ला ला
मेरे पिता ने यह कानून बनाया, ला ला ला ला
लड़कियों को फेंक देना चाहिये, ला ला ला ला
लड़कों को पालना चाहिये, ला ला ला ला

उसने मुझे पैदा किया और फेंक दिया, ला ला ला ला
राजा बहुत नीच है, ला ला ला ला
राजा की पत्नी भी नीच है, ला ला ला ला
राजा का नौकर मेरा भगवान है, ला ला ला ला

जब उसका गाना खत्म हो गया तो कुत्ता वहाँ से अपने मालिक के पास भाग गया और वहाँ जा कर बहुत ज़ोर ज़ोर से अपनी पूँछ हिलाने लगा पर राजा उसकी पूँछ हिलाने का मतलब न समझ सका और उसने उसको केवल थपथपा कर बाहर भेज दिया।

अगले दिन वह कुत्ता फिर से उस लड़के के पास गया। अबकी बार कुत्ते को वह लड़का अपना दोस्त लग रहा था। पहले की तरह से वे दोनों खूब खेले और उन्होंने साथ साथ खाना खाया।

फिर लड़के ने उसको थपथपाया और जब वह कुत्ता अपने घर जाने लगा तो लड़के ने उस कुत्ते के लिये अपना वही गाना फिर से गाया —

ओ राजा के कुत्ते तूने मुझे ढूँढ लिया, ला ला ला ला
मेरे पिता ने यह कानून बनाया, ला ला ला ला
लड़कियों को फेंक देना चाहिये, ला ला ला ला
लड़कों को पालना चाहिये, ला ला ला ला

उसने मुझे पैदा किया और फेंक दिया, ला ला ला ला
राजा वहुत नीच है, ला ला ला ला
राजा की पत्नी भी नीच है, ला ला ला ला
राजा का नौकर मेरा भगवान है, ला ला ला ला

कुत्ता फिर से अपने घर दौड़ गया और फिर से अपने मालिक के पास जा कर अपनी पूँछ ज़ोर ज़ोर से हिलाने लगा।

अबकी बार राजा बोला — "क्या बात है कि तुम मेरे पास रोज इस समय आते हो और अपनी पूँछ ज़ोर ज़ोर से हिलाते हो?"

कुत्ते ने एक दोस्ती की सी शक्ल दिखायी और बोला — "म्म, म्म, म्म, म्म। वुफ़, वुफ़।" उसने राजा की तरफ देखा और फिर दरवाजे की तरफ बढ़ गया। वहाँ वह राजा के आने का इन्तजार करने लगा।

राजा उठते हुए बोला – "ठीक है ठीक है। चलो दिखाओ मुझे कि तुम मुझे क्या दिखाना चाहते हो और क्या पा कर तुम इतने खुश हो।"

राजा कुत्ते के पीछे पीछे चलते चलते उस लड़के के घर तक आ गया। जब उसने वह सुन्दर लड़का चहारदीवारी के भीतर देखा वह तो चुपचाप उसको खड़ा देखता ही रह गया।

लड़के के नाक नक्श राजा को इतने अच्छे लगे कि वह उसको तुरन्त ही चाहने लगा। वह लड़का अपने पिता की हूबहू नकल था। राजा को लगा कि जैसे उसमें वह अपना छोटा रूप देख रहा हो।

उसने निश्चय कर लिया कि वह यह जरूर मालूम करेगा कि उस लड़के के मॉ बाप कौन हैं और फिर वह उनको अपने घर बुलाना चाहेगा।

सो वह लड़के से बोला — "अगर तुम्हारे माता पिता मुझे तुम्हारे पास आने देंगे और तुम्हें मेरे बेटे की तरह से मानने देंगे जो मेरा कभी नहीं था तो मुझे बहुत सन्तोष मिलेगा।"

जब वह उस लड़के से यह बात कर रहा था कि उसी समय वह बुढ़िया घर वापस आ गयी। आपस में काफी देर तक बात करने के बाद उस बुढ़िया ने जो भी कुछ उसे उस लड़के के बारे में मालूम था राजा को वह सब बता दिया।

कि किस तरह उसने उस लड़के को नदी में पाया और फिर कैसे उसको इतना बड़ा किया। फिर कैसे किसी पुजारी[25] ने उसको यह भी बताया था वह एक राजा का बेटा था – हॉ, एक लैचकी राजकुमार।

राजा ने पूछा — "मेरी कौन सी पत्नी इस बच्चे की मॉ है?"

बुढ़िया बोली — "मैं नहीं जानती पर इस बात को जानने का एक तरीका है।"

राजा बोला — "तुम मुझे वह तरीका बताओ और उसकी कीमत बताओ। मैं तुमको दूँगा।"

[25] Translated for the word "Diviner" – who know the things through divine means

बुढ़िया बोली — "राजा साहब, इसमें पैसे की बात नहीं है इसमें तो प्यार की बात है और प्यार की हमेशा जीत होती है।"

जैसे ही यह बात राजा की पत्नियों के पास पहुँची कि राजा का खोया हुआ बेटा मिल गया है तो राजा की हर पत्नी यह कहने लगी कि वह मेरा बेटा है और उसको अपना बेटा बनाना चाहने लगी।

पर उसकी असली माँ को पहचानने का एक ही तरीका था – उसके लिये खाना बनाना। जिस किसी रानी के हाथ का बनाया खाना वह लड़का खा लेगा उसी से राजा यह निश्चय करेगा कि उसकी माँ उसकी कौन सी पत्नी है।

इस काम के लिये एक दिन निश्चित किया गया। राजा ने अपनी तीनों प्रिय पत्नियों को कुछ पैसे दिये और खाने में कोई भी सबसे अच्छी चीज़ जो भी वे जानती थीं बनाने के लिये कहा।

हर बार की तरह से उसने अपनी चौथी पत्नी मेबू को कुछ नहीं दिया पर उससे भी कुछ बनाने के लिये कहा।

तीनों पत्नियों ने अपना खाना बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उन्होंने बहुत पैसा लगा कर बहुत ही स्वादिष्ट खाना बनाया और उसको सुन्दर सी मेज पर सजाया।

जब कि मेबू ने अपनी झोंपड़ी के आस पास में लगी सब्जी तोड़ी और राजा के कूड़े से जो कुछ भी उसको मिला उस सबको मिला कर एक अजीब सा खाना बनाया। उस खाने को उसने राजा के

अस्तबल के पास की राजा की जमीन पर बिना किसी मेज के घास पर ही रख दिया।

राजा ने अपने बेटे को एक राजकुमार के लायक अच्छे शाही कपड़े पहनाये क्योंकि वह तो अब युवराज था और फिर उसको एक राजकुमार की हैसियत से महल से बाहर मैदान में निकाला। उसकी शान सारे गॉव को लुभा रही थी।

जब वह पहले खाने की तरफ आया तो हर एक के मन में एक उत्सुकता जागी कि वह किसका खाना खायेगा। उसने उस खाने को देखा और आगे चल दिया। उसने दूसरी मेंजें भी खाना बिना चखे ही पार की।

फिर वह अपने पिता से बोला — "राजा साहब, आपकी तो चार पत्नियॉ हैं पर मुझे तो आपके राजकुमार के लिये यहॉ केवल तीन मेजें ही दिखायी दे रही हैं।"

यह सुन कर नौकरों ने राजा की घुड़साल की तरफ इशारा किया जहॉ मेबू ने अपना खाना लगा कर रखा था। राजकुमार तब उस घुड़साल की तरफ बढ़ा और बिना किसी हिचक के उसने वह सारा खाना खा लिया जो मेबू ने वहॉ सजा कर रखा था।

सारे लोग खुशी से भर गये। पर वे यह देख कर बहुत ही आश्चर्यचकित हुए कि वह लड़का राजा की एक ऐसी पत्नी से था जिसको राजा ने छोड़ रखा था।

ऐसी पत्नी ने उनके होने वाले राजा को जन्म दिया था। राजा ने उस लड़के को उसके केवल जन्म के हालात की वजह से ही खो दिया था।

इसके बाद राजा ने अपनी तीनों पत्नियों को तलाक दे दिया और केवल मेबू को ही अपनी पत्नी बना कर रखा। उसने फिर एक कानून बना दिया कि उसके देश में कोई भी आदमी एक बार में एक से ज़्यादा पत्नी नहीं रखेगा।

राजा ने अपनी नौकरानियों से कहा कि वे मेबू को महल में ले जायें और उसे उसके राज्य का सबसे अच्छा तेल लगा कर नहलायें धुलायें। अच्छे से अच्छे शाही कपड़े पहनायें। अच्छे से अच्छी खुशबू लगायें। उसके सिर पर रानी के लायक ताज रखें क्योंकि वह अब हमेशा के लिये उसकी सच्ची पत्नी हो जायेगी।

फिर उसने मेबू को गले से लगाया और उसकी नौकरानियॉ मेबू को महल के अन्दर ले गयीं।

उस दिन के बाद से राजा और मेबू खुशी खुशी रहने लगे। राजा के मरने के बाद लैचकी राजकुमार जिसको उसकी बड़ी रानियों ने मरा हुआ घोषित कर के फेंक दिया था राजा बन गया और उसने उस देश पर बहुत दिनों तक राज किया।

25 चीते हिरन को क्यों ढूँढते रहते हैं[26]

यह बहुत साल पुरानी बात है कि एक चीता[27] और एक हिरन बहुत अच्छे दोस्त थे। वे दोनों पड़ोसी थे और अक्सर आपस में ऑख मिचौली खेला करते थे।

चीते के घर के पीछे के ऑगन में एक बकरा रहता था जिसको उसने कई दिन पहले एक कुश्ती के मुकाबले में जीता था। जबकि हिरन एक बहुत अच्छा किसान था। उसके पास काफी बकरे और बकरियॉ थे।

हिरन के बकरे अभी छोटे थे सो जब बकरियों के बच्चे देने का मौसम आया तो वह चीते के पास गया और उससे उसका बकरा उधार मॉगा ताकि उस बकरे से वह अपनी बकरियों के बच्चे पैदा कर सके।

क्योंकि चीता उसका अच्छा दोस्त था वह उसको अपना बकरा देने के लिये तुरन्त ही तैयार हो गया। हिरन खुश हो कर बोला — "बहुत बहुत धन्यवाद मेरे दोस्त। मैं इसको इससे ज़्यादा खुश और तन्दुरुस्त कर के तुमको इस मौसम के बाद वापस कर दूँगा।

---

[26] Why Leopards Hunt Deer (Tale No 25) – an Igbo folktale from Nigeria, West Africa.

[27] Translated for the word "Leopard". See its picture above.

उसके साथ मैं तुम्हें एक बकरी भी दूँगा ताकि तुम भी अपने लिये बकरे बकरियॉ पैदा कर सको।"

चीता बोला — "यह तो बहुत अच्छी बात है। मैं उन सारी बकरियों को इस्तेमाल कर लूँगा जो भी मेरे हाथ लगेंगी।"

सो हिरन चीते का बकरा ले कर अपने घर अपनी बकरियों के पास आया। उसने एक बहुत बड़ा बाड़ा बनाया और अपनी सारी बकरियों को उस बकरे के साथ उस बाड़े में रख दिया।

मौसम के बाद हिरन ने एक छोटी बकरी ली और चीते का बकरा लिया और उनको अपने दोस्त चीते को देने चला।

हिरन ने चीते को नमस्ते की और बोला — "लो यह रहा तुम्हारा बकरा जैसा कि मैंने तुमसे वायदा किया था, ब्याज के साथ, एक बहुत ही तन्दुरुस्त बकरी के साथ। अब तुम भी बकरियों को पैदा कर सकते हो ताकि तुम्हारे पास तुम्हारा अपना बकरे बकरियों का झुंड रहे।"

चीता बोला — "यह तो बड़ी अच्छी बात है पर मैं इनको अभी नहीं ले सकता क्योंकि जैसा कि तुम जानते हो मैंने अभी तक इनको रखने के लिये कोई बाड़ा नहीं बनवाया है।

इसलिये अभी तुम इनको अपने पास ही रखो। जैसे ही मैं अपना बाड़ा बनवा लूँगा मैं इनको लेने के लिये खुद तुम्हारे पास जल्दी ही आ जाऊँगा।"

यह सुन कर हिरन बकरे और बकरी को अपने बाड़े में वापस ले गया। वह उनको भी खाना खिलाता रहा पानी पिलाता रहा जैसे वह अपनी बकरियों को खिलाता पिलाता था।

जब दूसरा बच्चे पैदा करने का मौसम आ कर भी चला गया तो हिरन फिर से चीते का बकरा और वह बकरी ले कर चीते के पास गया पर चीते ने इस बार भी यह कहते हुए उनको उसे वापस कर दिया कि अभी उसने अपना बाड़ा नहीं बनाया था।

ऐसे कई और बच्चे पैदा करने के मौसम निकल गये और इस बीच में हिरन के बकरे बकरियों ने भी बहुत सारे बच्चे दे दिये।

करीब करीब 10 ऐसे मौसम निकलने के बाद हिरन के बाड़े में अब इतने सारे बकरे बकरियॉ हो गये थे जितने कि आसमान में तारे – जैसा कि चीता सोचता था।

एक दिन चीता हिरन के घर आया और उसने उसके घर का दरवाजा खटखटाया। चीता बोला — "हलो हिरन भाई, कैसे हो? अब तो अपने जानवर खूब सारे हो गये हैं। मैं सोचता हूॅ कि अब समय आ गया है जब हम इनका बॅटवारा कर लें ताकि तुमको अकेले ही इन सबको खिलाना पिलाना न पड़े।"

हिरन आश्चर्य से बोला — "क्या कहा तुमने "अपने जानवर?" और "बॅटवारा कर लें?"।

चीता बोला — "हॉ भाई "अपने जानवर" और "बॅटवारा कर लें"।"

हिरन बोला — "जहॉ तक मैं जानता हूँ वहॉ तक तो तुम्हारा केवल एक बकरा और एक बकरी ही मेरे बाड़े में है। मैं उन दोनों को अभी तुम्हारे लिये ले आता हूँ।"

यह सुन कर चीता हिरन पर ज़ोर से हॅसा — "हा हा, हा हा। इतने सालों से तुम मेरे बकरे और बकरी को बच्चे पैदा करने के लिये इस्तेमाल कर रहे हो और तुम कह रहे हो कि मेरे यहॉ केवल दो ही जानवर हैं, उनके बच्चों का क्या हुआ?

मैं तो तुमसे केवल दयालु हो कर ही बॅटवारे के लिये कह रहा हूँ वरना मुझे तो तुमसे सारे जानवर मॉग लेने चाहिये थे।"

हिरन ने जानवर बॉटने से इनकार कर दिया। वह बोला यह सब जानवर उसके अपने हैं और वह वे दो जानवर उसको दे कर केवल न्याय ही कर रहा था।

क्योंकि बकरा चीते का था इसलिये, और एक बकरी इसलिये क्योंकि उसका उसने उसको देने का वायदा किया था।

हिरन फिर बोला — "मैंने तो तुम्हारा बकरा और बकरी लौटा दी थी पर तुमने ही उनको लेने से मना कर दिया। मुझे चाहिये था कि मैं उनको तुम्हारे घर के बाहर जंगली जानवरों के खाने के लिये छोड़ आता।

पर मैं उनको न केवल अपने घर ले आया बल्कि तुम्हारे लिये उनको मैंने खाना भी खिलाया और पानी भी पिलाया। तुमको यह

दिखाने के लिये कि मैंने उनको ठीक से रखा मैं तुमको तुम्हारा बकरा और बकरी और चार बकरियॉ और दे सकता हूँ।"

पर चीता इस बात पर नहीं माना और हिरन ने भी अपने जानवर बॉटने से इनकार कर दिया तो चीते ने जंगल के राजा शेर की अदालत में मामला पेश किया।

शेर ने तुरन्त ही जानवरों की एक मीटिंग बुलायी और उनको चीते और हिरन का मामला सुलझाने के लिये कहा।

शेर ने अपने दूत के हाथों यह कहते हुए हिरन को एक खास नोटिस भेजा कि चीते ने तुम्हारे ऊपर मुकदमा दायर किया है कि वह तुम्हारे बकरे बकरियों को बराबर बराबर बॉटना चाहता है। इसलिये तुम जंगल के राजा के सामने कल सुबह ही हाजिर हो। तुम्हारी सारी बकरियों पर भी मुकदमा है।

यह सुन कर हिरन तो बहुत दुखी हुआ। वह बेचारा अपने बाड़े के चारों तरफ अपने आपसे बात करते हुए काफी देर तक घूमता रहा। उसकी आवाज भर्रा रही थी और उसको लग रहा था कि वह एक हारी हुई लड़ाई लड़ने जा रहा था।

उसकी ऑखों में ऑसू आ रहे थे। उसने सोचा कि अगर मैं चीते को कुछ और जानवर दे दूँ तो शायद वह अपना मुकदमा वापस ले ले। पर उनको बॉटना? नहीं नहीं। इसका तो सवाल ही

पैदा नहीं होता। मैं उससे अपने जानवर नहीं बॉट सकता। वह मुझे अपना दोस्त कैसे कह सकता है?

तभी वहॉ से एक खरगोश जा रहा था। उसने हिरन को बोलते सुना तो उससे बोला — "अरे तुम फिर अपने आपसे बात कर रहे हो हिरन भाई? क्या बात है? कुछ परेशान हो?

अगर तुम्हें अपना दिमाग दिखाना हो तो मैं कछुए को बुलाऊॅ वह देवता से पूछ कर तुमको बतायेगा कि तुमको क्या हुआ है। उसके ऊपर मेरा एक एहसान है सो तुम्हें उसको कुछ देना भी नहीं पड़ेगा।"

हिरन बड़ी दुखी आवाज में बोला — "तुम चले जाओ यहॉ से, खरगोश भाई। मुझे किसी पुजारी वुजारी की जरूरत नहीं है। मैं तो खुद ही बहुत परेशान हूॅ।"

खरगोश बोला — "अरे तुम तो रो रहे हो हिरन भाई। तुमको तो वाकई सहायता की जरूरत है। बात क्या है कुछ बोलो तो?"

तब हिरन ने उसे बताया कि क्या बात थी और वह क्यों दुखी था। वह चीते को पॉच बकरियॉ भी देने को तैयार था पर वह तो बस अपने जानवरों को आधा आधा बॉटने को तैयार नहीं था। और चीता उसके जानवर आधे आधे बॉटना चाहता था।

खरगोश ने उसे विश्वास दिलाया कि उसको अपने जानवर आधे आधे बॉटने की कोई जरूरत थी ही नहीं। वह उसकी परेशानी का हल निकालेगा।

फिर उसने हिरन से कहा — "मैं तुम्हारी तरफ से शेर के सामने बोलूँगा और तुमको अपने बकरे बकरियॉ बॉटने की बिल्कुल भी जरूरत नहीं पड़ेगी। इसकी कीमत होगी केवल .... ।"

हिरन बीच में ही बोला — "इससे पहले कि मैं तुम्हारे साथ कुछ करूँ तुम चले जाओ यहॉ से। मुझे किसी की दिलासा की भी जरूरत नहीं है। मेरा मामला साफ है और मैं अपना मुकदमा जरूर जीतूँगा।"

खरगोश मुस्कुरा कर बोला — "अगर तुम्हारा मुकदमा इतना साफ है तो फिर रो क्यों रहे हो? और उसको चार की बजाय पॉच बकरियॉ देने के लिये भी क्यों तैयार हो?"

हिरन चिल्लाया — "मैंने कहा न तुमसे कि भाग जाओ यहॉ से।"

यह सोचते हुए कि उस समय हिरन अपने आपे में नहीं था खरगोश फुदकता हुआ वहॉ से चला गया।

अगले दिन हिरन ने अपने सब जानवरों को इकट्ठा किया और उन्हें ले कर शेर की अदालत में जा पहुँचा। जब तक वह वहॉ पहुँचा सारे जानवर वहॉ आ चुके थे।

चीता एक तरफ बैठा हुआ था। जब उसने देखा कि हिरन अपने सब जानवरों को ले कर वहाँ आ रहा था तो वह खुशी से मुस्कुरा पड़ा और अपने दाहिने पंजे के नाखूनों को जमीन पर धीरे धीरे मारने लगा।

चीते ने सोचा — "अब मैं देखता हूँ। अगर मैं एक बकरी हर तीसरे दिन भी खाऊँ तो **50** बकरियाँ कितने दिन चलेंगीं? **50** दिन? नहीं नहीं, **80** दिन? कोई बात नहीं। मैं तो बस इतना जानता हूँ कि मैं हर तीसरे दिन एक बकरी खाता रहूँगा जब तक वे खत्म होंगी।"

कुछ पल बाद शेर उस मैदान में आया और अपनी जगह पर आ कर बैठ गया। बबून ने चीते से अपना मामला पेश करने के लिये कहा।

जब चीता बोल चुका तो शेर ने हिरन से पूछा — "क्या तुम भी इस मामले को इसी तरह से देखते हो?"

हिरन बोला — "जी हाँ, पर... ।"

इसी बीच वहाँ खरगोश आ गया और बोला — "जंगल का राजा अमर रहे।"

वह कुछ जल्दी में दिखायी दे रहा था क्योंकि उसने शेर के सामने झुकने की भी जरूरत नहीं समझी बल्कि वह खुशी से गाता हुआ इधर उधर कूदता रहा।

शेर ने पूछा — "यह कौन है जो मुझे इतनी दूर से सलाम कर रहा है? और मेरे सामने बिना झुके हुए मेरी अदालत में बीच में दखल दे रहा है?"

शेर की आवाज से किसी को भी गलतफहमी हो सकती थी क्योंकि उससे ऐसा लग रहा था कि खरगोश शेर का बड़ा भरोसे का हीरो था जो अपने राजा को ललकार रहा था। तुरन्त ही शेर के दूत खरगोश के पीछे उसको अदालत में लाने के लिये दौड़े।

शेर दहाड़ा — "बॉध लो इसको और इसको सिखाओ कि यह मेरी अदालत में फिर कभी दखल न दे।"

खरगोश चिल्लाया — "मैंने क्या किया, मैंने क्या किया? मैंने क्या किया है जो मुझे मुजरिम की तरह से बॉधा जा रहा है?"

शेर ने पूछा — "इज़्ज़त? क्या यह शब्द तुम्हारे लिये कुछ मतलब रखता है? पहली बात, तुम मेरे पास से मुझे बिना सिर झुकाये गुजर गये। दूसरे, तुमने मेरी अदालत में सीटी बजा कर दखल दिया। तीसरे, तुमको मेरी अदालत में और लोगों की तरह से आना चाहिये था जो तुम नहीं आये।

यह सब कुछ कम है क्या तुमको अपराधी साबित करने के लिये? या कुछ और भी कहूॅ? इससे पहले कि मैं तुम्हारे ऊपर कोई और इलजाम लगाऊॅ तुम्हें अपनी सफाई में कुछ कहना है?"

खरगोश बाला — "हॉ, मेरा मतलब है नहीं। आपके पहले सवाल का जवाब है हॉ, और आपके आखिरी सवाल का जवाब है नहीं।

मैं तो बस इसलिये खुश हूॅ कि आज सुबह जब मैं उठा तो मैंने देखा कि मेरे घर के सामने वाले पाम के पेड़ पर पाम के पके हुए बीजों के गुच्छे पाम की पत्तियों से लटके हुए थे।

और मेरे लिये जैसे यही एक आश्चर्य काफी नहीं था, क्योंकि मेरे पिता के बच्चा होने वाला था, और जमीन आसमान पर गिर पड़ी। यह देख कर मैं अपनी मॉ को लड़ाई के मैदान से बुलाने चला गया ताकि वह यह सब अपनी ऑखों से देख ले।"

सारे जानवर एक साथ चिल्लाये — "नामुमकिन। यह सब कैसे हो सकता है? यह खरगोश क्या बक रहा है।"

शेर ने उसको धमकी दी — "खरगोश यह तुम क्या कह रहे हो। अगर तुमने मुझसे झूठ बोला तो मैं तुमको जान से मार दूॅगा। पाम के फल पाम की पत्तियों पर नहीं उगते।

क्या तुम्हारे कहने का कहीं यह मतलब तो नहीं कि तुम्हारी मॉ को बच्चा होने वाला था और तुहारे पिता लड़ाई पर थे? और यह तुम क्या कह रहे हो कि जमीन आसमान पर गिर पड़ी? यह सब तुम क्या अनाप शनाप बक रहे हो?"

खरगोश बोला — "नहीं जनाब, मैं अनाप शनाप बिल्कुल भी नहीं बक रहा। मेरा मतलब वही है जो मैंने कहा। और आप सब इसको नामुमकिन क्यों कह रहे हैं?"

हाथी बोला — "क्योंकि ओ बेवकूफ, आदमी बच्चे पैदा नहीं करते इसलिये।"

खरगोश बोला — "तो फिर चीते का लगाया हुआ इलजाम हिरन के ऊपर क्यों?"

तब शेर के दूतों ने शेर को समझाया कि चीता हिरन के खिलाफ क्या मुकदमा ले कर आया था।

शेर बोला — "उसको खोल दो। मुकदमे का फैसला हो गया।"

शेर ने चीते और हिरन से कहा — "चीते, तुम्हारा एक बकरा है जो हिरन को तुमको देना है और हिरन, तुम्हारी पॉच बकरियॉ हैं जो तुमको चीते को देनी हैं।"

चीता और हिरन एक साथ बोले — "जी हुजूर।"

तब शेर ने चीते से कहा — "तुम हिरन से अपना बकरा ले लो और वे पॉच बकरियॉ ले लो जो हिरन तुमको देना चाहता है और अपने घर जाओ। बस फैसला हो गया। जाओ।"

फिर उसने हिरन से कहा — "तुमको अपने जानवर चीते से बॉटने की जरूरत नहीं है क्योंकि बकरे बच्चे नहीं दिया करते।"

इस तरह यह मामला हिरन की तरफ रफा दफा कर दिया गया। पर हिरन को डर था कि चीता कानून अपने हाथ में भी ले सकता था और उसके जानवर जबरदस्ती उससे ले सकता था।

इसलिये चीते को उसका एक बकरा और पॉच बकरियॉ देने के बाद हिरन सीधा अपने सारे जानवरों को कुछ दूर के एक बाजार में ले गया और सबको वहॉ बेच आया।

इस बीच में चीता अपनी सब बकरियों को खा गया और हिरन से अपना बदला लेने का निश्वय किया।

जब चीते ने हिरन के बाड़े में उसकी बकरियॉ लेने के लिये झॉका तो उसको आश्चर्य भी हुआ और गुस्सा भी आया कि वहॉ तो कोई भी बकरी नहीं थी। वहॉ से तो सारी बकरियॉ जा चुकी थीं।

उसने गुस्से में आ कर सारे बाड़े को तोड़ दिया और चिंघाड़ता हुआ अपने घर चला गया।

जब वह अपने घर जा रहा था तो उसने देखा कि हिरन बाजार से वापस आ रहा था सो वह तुरन्त ही उसके पीछे भाग लिया।

चीता बोला — "अगर मैं तुम्हारी बकरियॉ नहीं ले सका तो कम से कम उनके पालने वाले को तो मैं ले ही सकता हूँ।" पर हिरन तो यह जा और वह जा।

तभी से चीता और हिरन दोनों आपस में एक दूसरे के दुश्मन हैं और आज भी चीता हिरन को खा जाने के लिये उसके पीछे दौड़ता रहता है।

26 जादू का ढोल[28]

बहुत साल पुरानी बात है कि अफ्रीका के नाइजीरिया देश में एक राजा राज करता था जिसका नाम था ओबिओमा[29]। ओबिओमा का मतलब होता है दयालु।

एक बार वह बहुत बीमार पड़ा। और इतना बीमार पड़ा कि लोगों को लगा कि वह मरने वाला था। लोग यह देख कर बहुत दुखी हुए।

पर एक दिन उसको सपने में एक आवाज सुनायी दी — "ओ राजा ओबिओमा, क्योंकि ज़िन्दगी भर तुम सबके लिये बहुत दयालु रहे हो इसलिये मैं तुम्हारी ज़िन्दगी तुमको बख्शता हूँ और तुम्हें एक चीज़ देता हूँ।

तुम्हारे अपने कमरे के एक कोने में एक जादू का ढोल रखा है। तुम उससे जो कुछ भी मॉगोगे वह तुमको देगा पर तुम उस ढोल को कभी धोना नहीं।"

सुबह को जब राजा उठा तो सीधा अपने कमरे में गया तो देखा तो वाकई उस कमरे के एक कोने में एक छोटा सा ढोल रखा हुआ था। उसने उस ढोल को अपने गले में लटकाया और कमरे से बाहर निकल आया।

---

[28] The Magic Drum (Tale No 26) – an Igbo folktale from Nigeria, Africa.

[29] Obioma – the name of the Nigerian King

उसको वह ढोल बहुत अच्छा लगा। वह ढोल चमड़े का बना हुआ था। उस समय क्योंकि खाने की बहुत कमी थी सो उसने ढोल से खाना मॉगा। उसने उसको एक होशियार ढोल बजाने वाले की तरह से बजाया और गाया —

पाम पुटु, पाम पुटु, ओ मेरे जादू के ढोल
पाम पुटु, पाम पुटु, मुझे खाना दे, पानी दे, जो स्वादिष्ट हो

तुरन्त ही उस ढोल से बहुत सारा स्वादिष्ट खाना और शराब प्रगट हो गयी। राजा और उसके आदमियों ने वह खाना खूब पेट भर कर खाया।

एक दिन दूसरे गॉव के लोगों ने राजा ओबिओमा पर हमला कर दिया। उनके सिपाहियों के पास भाले और तीर थे। उनके चेहरे लाल स्याही से रंगे हुए थे और उनकी ऑखों के चारों तरफ सफेद चौक से घेरे बने हुए थे।

उनके कमान्डर ने हाथी की शक्ल का चेहरा पहना हुआ था। बाकी सिपाहियों ने शुतुरमुर्ग और सफेद तोते[30] के पंख लगे टोप पहने हुए थे और वे सब लड़ाई के गाने गाते हुए चले आ रहे थे —

उनको हिला दो, दुश्मनों को हिला दो
उनको रौंद दो कुचल दो, दुश्मन को कुचल दो

[30] Translated for the word “Cockatoo”

राजा ओबिओमा ने उनके लड़ाई के गीत सुने तो अपना जादू का ढोल बजा दिया। इससे वह सारी जगह ऐसे बढ़िया बढ़िया स्वादिष्ट खानों से भर गयी जैसे कभी उन दुश्मनों ने देखे भी नहीं थे। उन्होंने अपने भाले और तीर तो फेंक दिये और खाना खाने बैठ गये।

जब उन्होंने खाना खा लिया तो उन्होंने राजा ओबिओमा को उस स्वादिष्ट खाने के लिये धन्यवाद दिया और बिना लड़े ही अपने गॉव वापस चले गये।

हर आदमी और जानवर राजा के इस जादू के ढोल को लेना चाहता था पर राजा इसकी बड़ी सावधानी से रक्षा करता था।

पर कछुआ चुप नहीं बैठा। उसको तो राजा का वह ढोल चाहिये था सो उसने राजा से उस ढोल को लेने की एक तरकीब सोची।

उसको मालूम था कि नदी के किनारे राजा की पत्नी और बेटी अक्सर नहाने और पानी भरने आया करती थीं। सो वह रोज सबेरे सबेरे उस नदी के किनारे वाले पाम के पेड़ पर चढ़ जाता और वहॉ बैठ कर उनके आने का इन्तजार करता।

एक दिन रानी और राजकुमारी नदी पर नहाने आयीं। नहा कर राजकुमारी नदी के किनारे खड़ी ठंडी हवा का आनन्द ले रही थी

और कछुआ पाम के पेड़ की चोटी पर बैठा पाम की गिरी[31] तोड़ रहा था। धीरे से उसने पाम की एक गिरी उस लड़की के पैरों के पास गिरा दी।

उस गिरी को देख कर वह लड़की चिल्लायी — "मॉ, देखो यह पाम की गिरी जो मैं बहुत दिनों से खाना चाह रही थी आज मेरे पैरों के पास आ गिरी है।

इसको मैं तबसे देख रही हूँ जब मैं नहा रही थी। मुझे लगता है कि मेरी नजरों ने इसको पेड़ से तोड़ कर नीचे गिरा दिया है। मैं इसे खा लूँ?"

मॉ बोली — "हॉ हॉ, खा ले पर पहले इसको धो ले। लगता है कि आज तेरी किस्मत अच्छी है इसी लिये कुछ देर पहले तेरे दाहिने हाथ की हथेली भी खुजा रही थी।"

राजकुमारी बोली — "तब तो मुझे आज कुछ और भी मिलना चाहिये। है न?"

जैसे ही राजकुमारी ने वह पाम की गिरी धो कर खायी कछुआ पाम के पेड़ से नीचे उतर आया और बोला — "कहॉ है मेरी पाम की गिरी? मेरी पाम की गिरी मुझे दो।"

---

[31] Palm Nut – from the palm tree. See their picture above. It is a very popular food item in West African clountries

राजकुमारी बोली — "वह तो मेरे पेट में है। और वह तो बहुत ही स्वाद थी।"

कछुआ रोते हुए बोला — "नहीं। तुमने मेरी पाम की गिरी चुरायी है। वह तो मैंने अपने परिवार के खाने के लिये तोड़ी थी। मैं क्या पाम के पेड़ पर तुम्हारे खाने के लिये पाम की गिरी तोड़ने के लिये चढ़ता और अपनी मौत को दावत देता?"

राजकुमारी ने अपनी सफाई दी — "पर मैंने जब यह गिरी उठायी थी तो मुझे यह नहीं पता था कि यह गिरी तुम्हारी है।"

रानी बोली — "ओ अजनबी कछुए, इसमें कोई नुकसान नहीं है। मेरे पति राजा हैं। वह तुमको इस पाम की गिरी के बदले में जो कुछ भी तुम चाहोगे वह तुम्हें दे देंगे। मेरी बेटी को पता नहीं था कि यह पाम की गिरी तुम्हारी है।"

कछुआ बोला — "हॉ यह ठीक है। चलो राजा के पास चलते हैं। मुझे यकीन है कि वह जान जायेगा कि इतने मुश्किल के दिनों में अपने पड़ोसियों की चीज़ें चुराना कितना बड़ा जुर्म है।

और यह कानून तो उसने अपने हाथ से खुद लिखा है। आज उसके अपने परिवार ने इस कानून को तोड़ा है। कोई भी परिवार इस कानून को नहीं तोड़ सकता है। देखते हैं कि उसका यह कानून केवल गरीब लोगों के लिये ही है या फिर देश में सबके लिये है।"

सो वे सब राजा के पास पहुँचे। वहॉ पहुँचने पर कछुए ने राजा को बताया कि राजकुमारी ने उसकी पाम की गिरी चुरा ली है।

दयालु और ईमानदार आदमी होने के नाते राजा यह पक्का कर लेना चाहता था कि कछुए को उसकी मुश्किलों का बदला ठीक से मिलना चाहिये सो उसने कछुए से उसकी पाम की गिरी की कीमत पूछी।

राजा बोला — "मुझे बहुत अफसोस है कि तुमको यह लगा कि राजकुमारी ने तुम्हारी पाम की गिरी चुरायी है। बोलो, मैं तुम्हारे नुकसान का बदला कैसे चुकाऊँ?

तुम्हें जानवर चाहिये, बकरियॉ चाहिये, सोने के सिक्के चाहिये, या खाना चहिये? मैं तुमको उसका सौ गुना वापस कर दूँगा। तुम बस यह बताओ कि तुमको क्या चाहिये।"

कछुआ बोला — "धन्यवाद राजा जी। मुझे केवल आपका जादू का ढोल चाहिये।"

यह सुन कर एक बार तो राजा के दिल की धड़कन रुक सी गयी और उसने कछुए की तरफ बुरी नजर से देखा भी पर क्योंकि वह एक राजा था और इज़्ज़तदार आदमी था और अपने वायदे के खिलाफ नहीं जा सकता था इसलिये उसने अपना जादू का ढोल उस कछुए को दे दिया।

कछुआ तो उस ढोल को ले कर बहुत खुश हो गया और मन ही मन में हॅसा कि उसकी तरकीब काम कर गयी। उसने वह जादू का ढोल उठाया और घर चला गया।

घर पहुँच कर उसने अपने परिवार वालों को बुलाया और उनको बताया कि किस तरह से आज उसने राजा को चकमा दे कर उससे उसका यह जादू का ढोल ले लिया। इसके बाद कछुए ने वह ढोल बजाया और गाया —

पाम पुटु, पाम पुटु, ओ मेरे जादू के ढोल
पाम पुटु, पाम पुटु, मुझे खाना दे, पानी दे, जो स्वादिष्ट हो

और उस ढोल में से बहुत तरह के बहुत सारे स्वादिष्ट खाने निकल पड़े। कछुए का पूरा घर बढ़िया बढ़िया खानों से भर गया। उसके पूरे परिवार ने उस दिन खाना ऐसे खाया जैसे पहले कभी उन्हांने खाना ही न खाया हो। कछुए के परिवार को कछुए पर बहुत घमंड हो आया और वे सब उसकी बहुत तारीफ करने लगे।

इस तरह से उस जादू के ढोल की वजह से कछुए के घर में कई दिनों तक रोज दावत होती रही और वे सब कछुए की रोज ही तारीफ करते रहे।

पर कछुए के लिये यही सब काफी नहीं था। उसको तो यह सब तारीफ और आदर जंगल के सारे जानवरों से भी चाहिये था सो एक दिन उसने जंगल के सारे जानवरों को अपने घर दावत दी।

जंगल के जानवरों को कछुए के ऊपर बिल्कुल भी विश्वास नहीं था इसलिये उस दिन उसके यहाँ बहुत थोड़े से जानवर आये। जब वे सब अपनी अपनी जगह बैठ गये तो कछुआ अपने जादू के

ढोल के साथ बाहर आया और सबके बीच में बैठ कर अपना जादुई ढोल बजाना शुरू कर दिया।

सारा मैदान खाने की बहुत अच्छी अच्छी प्लेटों से भर गया। जानवर तो अपनी ऑखों पर और कछुए की दया पर विश्वास ही नहीं कर पाये और खाना खाते रहे। उसकी दया देख कर उनके दिल में भी कछुए के लिये प्यार उमड़ आया।

अब कछुआ अमीर था, दयालु था और जंगल में एक इज़्ज़तदार जानवर था। दूसरे जानवरों ने अब उसको अपने घरों में बुलाना शुरू कर दिया था और वह अब उनमें काफी लोकप्रिय हो गया था।

कई महीनों तक कछुए ने सारे जानवरों को खूब खाना खिलाया और खूब शराब पिलायी। पर काफी दिनों के इस्तेमाल के बाद वह ढोल गन्दा हो गया सो वह उसको नदी पर धोने ले गया। वहॉ उसने उस ढोल को पानी से खूब मल मल कर धोया और घर ले आया।

शाम को जब वे सब खाना खाने बैठे तो उसने वह ढोल बजाना शुरू किया –

पाम पुटु, पाम पुटु, ओ मेरे जादू के ढोल
पाम पुटु, पाम पुटु, मुझे खाना दे, पानी दे, जो स्वादिष्ट हो

असल में जैसे ही कछुए ने वह ढोल धोया था उसका जादू टूट गया था सो बजाय खाने के उस ढोल में से गुस्से में भरे लड़ने वालों

का एक झुंड निकल पड़ा। उन सभी ने अपनी लड़ने वाली पोशाक पहन रखी थी।

उन सभी के हाथों में बजाय तलवारों और तीर कमानों के गाय की पूँछ का एक एक कोड़ा था जो जब वे उसे मारने के लिये हवा में फटकारते थे तो वह बहुत ही डरावना शोर करता था।

बस निकलते ही उन्होंने सबको मारना शुरू कर दिया। उनकी मार इतनी ज़ोर की थी कि कुछ लोगों की पीठ से तो खून भी बहने लगा।

जब कछुए के परिवार वालों ने हिलना भी बन्द कर दिया तो वे समझे कि वे मर गये और वे सब उस जादू के ढोल में जा कर गायब हो गये।

अगले दिन सुबह जा कर कछुए के परिवार को कहीं होश आया और उनके घाव आदि ठीक होने में तो कई हफ्ते लग गये। उसकी पत्नी ने गर्म पानी कर कर के सबके घाव धोये और घर की बनी दवा लगायी तब कहीं जा कर वे सब ठीक हुए।

कछुआ बोला — "पता नहीं उस ढोल में क्या गड़बड़ हुई।" एक बार फिर से पक्का करने के लिये कछुए ने उसे फिर से सावधानी से बजाया पर मगर फिर वही हुआ। वे लड़ने वाले फिर उसमें से निकल आये और उन सबको बड़ी बेरहमी से पीटा।

अब उसको विश्वास हो गया था कि इस जादू के ढोल की जादुई ताकत खत्म हो चुकी थी सो उसके नीच दिमाग ने फिर एक

चाल खेली कि इस जादू के ढोल से केवल उसका परिवार ही क्यों पिटे।

"अगर जंगल के सारे जानवरों ने इसका आनन्द लूटा है तो वे इसकी मार भी सहें।" सो कछुए ने एक बार फिर से जंगल के जानवरों को दावत के लिये बुलाया।

अब तक क्योंकि कछुए ने अपनी साख जानवरों में खूब जमा ली थी। इसके अलावा उसकी पहली दावत बहुत अच्छी रही थी तो इस बार जानवरों को बुलाने में उसको कोई तकलीफ नहीं हुई।

बल्कि पिछली बार जो जानवर नहीं आ पाये थे पिछली दावत की तारीफ सुन कर इस बार वे भी आ गये।

कुछ जानवरों ने तो कछुए की दावत खाने के लिये अपना नाश्ता भी नही खाया ताकि वे वहॉ अच्छी तरह से खा सकें। इस तरह वहॉ बहुत सारे जानवर आ गये।

कछुए ने अपने परिवार को उनकी सुरक्षा के लिये दूसरी जगह भेज दिया और एक जंगली चूहे को बुला कर उससे अपने लिये अपने घर से ले कर बाजार के मैदान तक एक बड़ी सी सुरंग खुदवा ली।

फिर वह अपना ढोल ले कर बाजार के मैदान के बीच में बैठ गया और जानवर उसके चारों तरफ बैठ गये।

कछुए ने बन्दर से कहा — "मैं तुमको अपना ढोल पीटने के लिये देता हूँ। मैंने तो खाना खा लिया है। तुम लोगों का जब खाना हो जाये तो मुझे मेरा ढोल वापस कर देना।" इतना कह कर कछुआ उस सुरंग में गायब हो गया।

बन्दर तो यह सुन कर बहुत ही खुश हो गया। उसने कछुए से वह ढोल ले लिया और उसको बजाना शुरू किया —

पाम पुटु, पाम पुटु, ओ मेरे जादू के ढोल
पाम पुटु, पाम पुटु, मुझे खाना दे, पानी दे, जो स्वादिष्ट हो

ढोल का बजना था कि उसमें से बहुत सारे गुस्से में भरे लड़ने वाले निकल पड़े और वहाँ बैठे जानवरों को मारने लगे। दावत का आनन्द लेने की बजाय सारे जानवर चीखने चिल्लाने लगे।

बाजार का मैदान लड़ाई का मैदान बन गया। सारे मैदान में सारे जानवर वहाँ से भागने के चक्कर में एक दूसरे के ऊपर गिरने पड़ने लगे।

कुछ जानवर बहुत भूखे थे और वे भागने के लिये बहुत थके हुए भी थे। जबकि हाथी जैसे बड़े जानवर दूसरे छोटे जानवरों को रौंद कर जा रहे थे, जैसे कि खरगोश। कुछ उन लड़ने वालों की मार से मर गये। जो भाग सकते थे वे कछुए को बुरा भला कहते हुए भाग गये।

जब उन लड़ने वालों ने देखा कि सारे जानवर मर गये तो वे भी ढोल में जा कर गायब हो गये।

जब सब कुछ शान्त हो गया तब कछुआ अपनी छिपी हुई जगह से निकल आया। उसने मरे हुए जानवरों को उठाया और अपने घर ले गया। उसने और उसके परिवार वालों ने उस दिन बहुत अच्छी तरह से खाना खाया।

अब उसे पूरा विश्वास हो गया था कि अब उस ढोल का काम खत्म हो गया था। कछुए ने निश्चय किया कि वह इस ढोल को अब राजा को वापस कर देगा।

इस बीच जादू के ढोल और उसमें से निकले लड़ने वालों की कहानियॉ चारों तरफ फैल चुकी थीं सो राजा भी अब कछुए के किसी भी दिन आने की उम्मीद कर रहा था।

राजा सोने के लिये लेटा हुआ था और कछुए के आ कर ढोल लौटाने के इन्तजार में था। वह सोच रहा था कि वह उस ढोल का अब क्या करेगा। तभी वही आवाज फिर आयी और बोली — "उसका जादू फिर से लाने के लिये तुम उसका जादू का गाना उलटा गाना।"

जैसा कि राजा ने सोचा था वैसा ही हुआ। सुबह सवेरे ही कछुआ राजा का ढोल ले कर राजा के महल में आ गया।

कछुआ बोला — "ओ राजा, यह रहा आप का ढोल। मैं बहुत ही न्यायप्रिय जीव हूॅ। मैंने सोचा कि मुझको यह ढोल हमेशा के

लिये अपने पास नहीं रखना चाहिये क्योंकि इसकी जगह तो राजा के पास ही है। इसी लिये मैं इसे आपको वापस करने आया हूँ।"

राजा बोला — "ठीक है। तुम बहुत ही न्यायप्रिय जीव लगते हो। धन्यवाद। जाने से पहले खाना तो खाते जाओ।" कह कर उसने अपने हाथ ऊपर उठाये जैसे वह उस ढोल को बजाने के लिये उठा रहा हो।

यह देख कर पहले तो कछुआ डर के मारे अपने खोल में छिप गया पर जब उसने ढोल बजाने की कोई आवाज नहीं सुनी तो फिर उसने धीरे धीरे अपना सिर बाहर निकाला और अपने घर चला गया।

राजा अपने कमरे में गया। वहाँ उसने उसे बहुत धीरे से बजाया और उस जादू के गीत को उलटा गया।

पुटु पाम, पुटु पाम, ढोल जादू के ओ मेरे
पुटु पाम, पुट पाम, जो स्वादिष्ट हो पानी दे, खाना दे मुझे

उस दिन के बाद से उस ढोल में से राजा और उसके आदमियों के लिये फिर से बहुत सारा खाना निकलने लगा। राजा ओबिओमा लोगों पर फिर से और ज़्यादा अच्छी तरह से राज करने लगा। उसकी दया के चर्चे दूर पास सब जगह फैलने लगे। उसके दुश्मन अब उससे लड़ना नहीं चाहते थे और सब खुशी खुशी रहने लगे।

27 जादू की छड़ी[32]

बहुत साल पुरानी बात है कि नाइजीरिया देश में एक राजा और एक रानी रहते थे। राजा की यह पत्नी और दूसरी रानियों से कुछ अलग ही तरह से रहती थी। यह रानी बहुत मेहनती और ताकतवर थी और बहुत सारे काम यह अपने आप ही किया करती थी।

यह अपना खाना खरीदने के लिये खुद बाजार जाती, अपने कपड़े खुद ही धोती और अपना खाना भी खुद ही बनाती थी। जैसे और स्त्रियॉ अपने घरों में काम करती हैं यह रानी भी वैसे ही अपने घर में अपना काम अपने आप ही किया करती थी।

यह रानी जिस रास्ते से बाजार जाती थी उस रास्ते पर दो आदमी रहते थे। एक का नाम था ओजुओरुओन्ये[33] जिसका मतलब था "किसी के पास भी सब नहीं होता"। पर इतना लम्बा नाम लेने की बजाय सब उसको ओजुरू बुलाते थे। ओजुरू बहुत ही नीच किस्म का और लालची आदमी था।

दूसरे आदमी का नाम था नोकिओमा[34] जिसका मतलब था "दयालु आदमी"। इस आदमी को लोग ओकोमा कह कर बुलाते थे। ओकोमा बहुत गरीब और दयालु था।

---

[32] The Magic Wand (Tale No 27) – an Igbo folktale from Nigeria, Africa.

[33] Ozuoruonye – means "no one has it all"

[34] Nwokeoma – means "kind hearted or a good man"

जब भी राजा की पत्नी बाजार जाती तो इन दोनों के घर पानी पीने के लिये रुक जाती। उन दिनों पानी बहुत मुश्किल से मिला करता था क्योंकि नदी उन घरों से काफी दूरी पर थी और वहाँ से पानी लाने में काफी समय लग जाया करता था।

माता पिता पानी लाने के लिये अक्सर अपने बच्चों को भेज दिया करते थे और उनके पानी से भरे कैलेबाश[35] उस पथरीली सड़क पर टूट जाया करते थे। वे अपने टूटे कैलेबाश के लिये तो इतना नहीं रोते थे जितना कि पानी लाने की अपनी मेहनत के लिये रोते थे।

इससे भी बुरा तब होता जब उनको दूसरा कैलेबाश दे दिया जाता और उनसे दोबारा पानी लाने के लिये कहा जाता।

ओजुरू हमेशा राजा की पत्नी को पानी देने से मना कर देता। हर आदमी जानता था कि ओजुरू बहुत ही बुरा आदमी है जो न केवल अजनबियों के साथ ही बुरा बर्ताव करता था बल्कि उनको उनकी छोटी छोटी चीज़ों के लिये अक्सर लूट भी लेता था।

ओजुरू राजा की पत्नी को चिढ़ाता — "ओ अमीर आदमी, तुम क्या सोचती हो कि मैं और मेरा पानी तुम्हारा है?"

[35] Calabash – a dried outer cover of a pumpkin like fruit which looks like Indian clay pitcher and is used to keep wet and dry things all over West African countries. See its picture above.

तो वह जवाब देती — "नहीं नहीं, तुम्हारा पानी मेरा कैसे हो सकता है। मैं तो बस अपनी प्यास बुझाने के लिये थोड़ा सा पानी पीना चाहती थी।"

तब ओजुरू जवाब देता — "तुम्हारे पास पैसा है पर मेरा पानी तो दो जानवर के बराबर कीमती है।"

राजा की पत्नी कहती — "पर मेरे पास तो दो जानवर नहीं हैं।"

तब वह ज़ोर से हॅसता और कहता — "हा हा हा हा। अब बताओ कौन ज़्यादा अमीर है, तुम या में? जब तुम मरोगी तो तुम अपनी सारी दौलत यहीं छोड़ जाओगी और तुम एक घड़ा पानी भी नहीं खरीद सकतीं। हा हा हा हा।" और ओजुरू बेहिसाब हॅसता ही चला जाता।

राजा की पत्नी ओजुरू को ऐसे ही हॅसता हुआ छोड़ कर उठ जाती और वहॉ से और ज़्यादा प्यासी चली जाती। वहॉ से चलने के थोड़ी देर बाद ही ओकोमा का घर आता। वहॉ जा कर वह पानी पीती।

ओकोमा हालॉकि एक गरीब आदमी था और उसके पास अपने लिये भी काफी नहीं था पर वह हमेशा राजा की पत्नी को पानी पिलाता। वह राजा की पत्नी की बहुत इज़्ज़त करता था और हमेशा उसे झुक कर नमस्ते करता था।

गॉव का हर आदमी जानता था कि ओकोमा बहुत ही दयावान आदमी था और वह किसी को भी अपना खाने का आखिरी टुकड़ा और पानी की आखिरी बूँद तक दे देता था।

इस तरह राजा की पत्नी का इन दोनों से इस तरह का तजुरबा कई बाजार हफ्तों[36] तक चलता रहा। वह चुपचाप चली जाती और किसी से भी कुछ नहीं कहती, राजा से भी नहीं।

पर वह ओकोमा के बर्ताव से बहुत प्रभावित थी क्योंकि जब भी वह उससे पानी मॉगती थी वह हर बार उसको पानी पिलाता था। उसका मन करता था कि वह उसे उसके इस अच्छे बर्ताव के लिये कुछ इनाम दे।

एक दिन जब राजा की पत्नी बाजार गयी तो वह अपने साथ एक जादू की छड़ी लेती गयी। यह छड़ी वह सब कुछ कर सकती थी जो भी उसका मालिक उससे करने के लिये कहे।

जब वह ओकोमा के घर पहुँची तो उसने हमेशा की तरह से उससे पानी मॉगा। ओकोमा ने भी उसको हमेशा की तरह पानी पिलाया। पानी पी कर उसने वह छड़ी ओकोमा को दी और उससे कहा कि वह वह छड़ी उसकी कमर पर मारे।

ओकोमा घबरा गया और घबरा कर झुक कर बोला — "नहीं नहीं, यह नहीं हो सकता रानी जी।"

---

[36] Market weeks – in Nigerian villages markets were organized daily or weekly so one market day could be counted as one market day or one week.

उसने कहा — "पर तुम समझते क्यों नहीं ओकोमा यह तुमको करना ही चाहिये।"

वह बोला — "मैं सब समझता हूँ। मेरा काम आपकी रक्षा करना है, आपकी सेवा करना है, आपको मारना नहीं।"

राजा की पत्नी बोली — "हाँ मुझे मालूम है। इसलिये जैसा मैं कहती हूँ वैसा ही करो। अगर तुम वैसा ही करोगे जैसा मैं कहती हूँ तो तुम इतने अमीर हो जाओगे जितना कि तुम सोच भी नहीं सकते। तुमको तुम्हारे अच्छे बर्ताव के लिये कुछ देने का मेरा यह अपना तरीका है।"

ओकोमा ने राजा की पत्नी से वह जादू की छड़ी ली और बहुत धीरे से उसकी कमर पर मारा। अचानक उसका घर बहुत सारे जानवर, याम[37] और उस हर चीज़ से भर गया जो एक अमीर आदमी के घर में होती है – सिवाय राजा के घर के। सो ओकोमा अब अपने गाँव के हर आदमी से ज़्यादा अमीर था।

गाँव में हर आदमी को ओकोमा के अचानक अमीर हो जाने की खबर मिल चुकी थी।

[37] Yam is a kind of root vegetable which is very popular food in West African countries. One yam may weigh up to 10 pounds – see the picture above.

पर इस अमीरी ने ओकोमा को बिगाड़ा नहीं बल्कि वह और ज़्यादा दयालु हो गया, ख़ास कर उन लोगों के साथ जिनके पास उससे कम था। जितना ज़्यादा वह दयालु होता गया उतना ही ज़्यादा वह लोकप्रिय और अमीर होता चला गया।

ओजुरू यह सब देख कर बहुत गुस्सा था और वह ओकोमा से जलने लगा। वह यह जानना चाहता था कि उसके पास अचानक इतनी सारी दौलत आ कहॉ से गयी और वह इतनी जल्दी इतना मशहूर कैसे हो गया। सो उसने सोचा कि उसके घर जाया जाये और उससे इस बात का पता किया जाये।

ओकोमा खुद ही सबको यह बताने के लिये बहुत इच्छुक था कि उसके पास यह सब कहॉ से आया सो जब ओजुरू उसके घर आया तो उसने उसको सब बता दिया।

अगले दिन जब राजा की पत्नी बाजार जा रही थी तो ओजुरू अपने घर से निकल कर उसकी सहायता के लिये बाहर आया। उसने रानी को झुक कर नमस्ते की और बोला — "नमस्ते रानी जी।"

रानी बोली — "नमस्ते ओजुरू। आज तुम्हारे इस बर्ताव की क्या कीमत है?"

ओजुरू बोला — "रानी जी, यह मेरे लिये बड़ी इज़्ज़त की बात होगी अगर मैं अपने राजा की पत्नी की सेवा करूॅ तो। आज दिन

तो बहुत अच्छा है मगर थोड़ा भीगा भीगा है सो मैंने सोचा कि शायद आपको पानी की जरूरत हो।"

राजा की पत्नी ने कहा — "नहीं मिस्टर। मैं बिल्कुल ठीक हूँ। कोई भी प्यास जिसे यह आशा हो कि वह थोड़ी देर में बुझ जायेगी आदमी को मार नहीं सकती।"

"पर रानी जी, गर्म पानी पीने के लिये थोड़ी देर तक क्यों इन्तजार करना जबकि यहाँ आपको साफ ठंडा पानी मिल सकता है।"

राजा की पत्नी ने कहा — "मेरे बेटे, चिड़िया का कहना है कि जैसे कोई शिकारी अपना निशाना बिना चूके मारना सीखता है उसी तरह से चिड़िया भी बिना आराम किये उड़ना सीख लेती है। तुमने पहले कभी मुझे पानी नहीं दिया इसी लिये मैंने तुम्हारे घर के पास से प्यासे जाना सीख लिया है।"

पर ओजुरू उससे जिद करने लगा कि वह उसके घर आये और उसके यहाँ पानी पी कर जाये। तो राजा की पत्नी को लगा कि ओजुरू को टालने का उसके पास यही एक रास्ता है कि वह उसके घर जाये और पानी पिये सो वह उसके घर चली गयी।

जब राजा की पत्नी वहाँ पानी पी रही थी तो ओजुरू यह सोच कर उसके पीछे गया कि ओकोमा तो उस ज़रा सी छड़ी के इसकी पीठ पर मारने से इतना अमीर हो गया तो अगर मैं इसके सिर पर

किसी बड़े से डंडे से मारूँगा तो मैं तो उससे भी ज़्यादा अमीर हो जाऊँगा।"

यही सोच कर ओजुरू ने एक मोटा सा डंडा उठाया और राजा की पत्नी के सिर पर बहुत ज़ोर से दे मारा। उसने वह डंडा इतनी ज़ोर से मारा कि उसके डंडा मारते ही राजा की पत्नी मर गयी। अब उसको यही पता नहीं था कि वह उसका क्या करे क्योंकि वह तो मर चुकी थी।

इस बीच ओकोमा अपनी अमीरी का आनन्द ले रहा था। वह इस बात से बिल्कुल ही बेखबर था कि उसके इधर उधर क्या हो रहा था।

कुछ सोचने के बाद उस रात ओजुरू राजा की पत्नी के शरीर को जंगल में ले गया और उसको एक झाड़ी के सहारे बिठा दिया और अगले दिन मुर्गे की पहली बॉग से भी पहले वह ओकोमा के घर पहुँच गया।

वहॉ जा कर उसने उसके घर का दरवाजा खटखटाया।

ओकोमा ने पूछा — "कौन है?"

"मैं तुम्हारा दोस्त ओजुरू।"

ओकोमा बोला — "पिछली बार तुम तब आये थे जब तुमने मेरे अमीर होने की खबर सुनी थी। मेरे अमीर हो जाने की खबर सुन कर दोबारा आने में तुमने इतना समय क्यों लगाया? आज तो तुम मेरे घर दोबारा बहुत दिनों बाद आ रहे हो। कहो क्या बात है।"

"दरवाजा खोलो। आज तुम्हारी किस्मत खुल गयी है।"

"जरूर जरूर। पर अभी तो बहुत सुबह है। बोलो मैं तुम्हारे लिये क्या करूँ। मैं और मेरा परिवार तो अभी भी बिस्तर में ही लेटे हैं।

तुम वह लिस्ट मेरे दरवाजे पर छोड़ जाओ जो तुम्हें चाहिये और मैं तुमको विश्वास दिलाता हूँ कि वह सब तुमको दिन निकलते ही मिल जायेगा।"

ओजुरू बोला — "आज मुझे तुमसे कुछ नहीं चाहिये, ओ मेरे अमीर दोस्त। आज तो मैं तुम्हारे लिये ही कुछ करने आया हूँ।"

"अच्छा मेरे लिये कुछ करने आये हो? क्या करने आये हो?"

"क्या तुमको वह इनाम वाला हिरन याद है जो तुमको हमेशा से चाहिये था। आज तुम उसको ले सकते हो।"

ओकोमा ने पूछा — "ओह वह वाला हिरन? वह कैसे?"

ओजुरू बोला — "मैंने अभी अभी मिस्टर न्वेके[38] को दो हिरन ले जाते देखा है। वे दोनों एक एक टन के तो जरूर होंगे। उनके तो सींग ही **6–6** फीट लम्बे होंगे।

वह कह रहा था कि करीब करीब दो सौ हिरनों का एक झुंड उत्तर की तरफ के जंगल में देखा गया है। तो कोई भी वहाँ जा कर उनमें से जो कोई हिरन जिसको अच्छा लगे ले सकता है।"

ओकोमा बोला — "पर वह खुद तो बहुत ही आलसी है।"

---

[38] Nweke – a Nigerian name for a male

ओजुरू बोला — "यही तो मैं भी कहना चाह रहा हूँ।"

यह सुन कर ओकोमा ने तुरन्त ही अपना शिकारियों वाला सूट पहना, अपनी बन्दूक अपने कन्धे से लटकायी जैसे कि कुत्ते को उसकी डोर से पकड़ते हैं, और दरवाजा खोला और अपना इनाम लाने के लिये जाने के लिये बेताबी से तैयार हो गया।

एक शिकारी के लिये इससे ज़्यादा और कोई अच्छी बात नहीं हो सकती कि गॉव भर में वह सबसे बड़ा शिकार करके लाये। ओकोमा हमेशा से किसी बड़े शिकार की ताक में था पर अब तक एक गिलहरी भी नहीं मार सका था।

जंगल में उत्तर की तरफ शिकार करना तो बहुत बड़ी बात थी कोई उधर जाता भी नहीं था क्योंकि उधर तो केवल शेर और हयीना[39] ही शिकार के लिये आते थे।

पर अब उसके पास एक बहुत ही बढ़िया डबल बैरल बन्दूक[40] थी तो अब वह उधर जाने के लिये इन्तजार नहीं कर सका।

जब वे दोनों उत्तर की तरफ वाले जंगल में पहुँचे तो ओजुरू ने ओकोमा को उस दिशा की तरफ इशारा किया जिस तरफ वह राजा की पत्नी की लाश छिपा कर आया था और उसके कान में फुसफुसाया — "उधर उधर। चला गोली।"

---

[39] Hyena – a lion or tiger like animal. See its picture above.

[40] Double barrel gun – it has two sources of bullets and is able to fire two quick shots.

बस ओकोमा ने आव देखा न ताव और दो गोलियॉ फटाक से चला दीं। जैसे ही वे दो गोलियॉ ओकोमा की बन्दूक से निकलीं कि ओज़ुरू हिरन को पकड़ने के लिये भागा।

वहॉ जा कर वह ज़ोर से रुऑसा हो कर चिल्लाया — "ओह, नहीं नहीं।"

ओकोमा ने भोलेपन से पूछा — "क्यों क्या हुआ? क्या मैंने हिरन के सींग तोड़ दिये?"

ओज़ुरू दुखी होते हुए बोला — "नहीं नहीं, तुमने तो राजा की पत्नी को मार दिया है।"

ओकोमा ने पूछा — "क्या? मैंने राजा की पत्नी को मार दिया? पर वह इतनी सुबह सुबह यहॉ इस जंगल में कर क्या रही थीं?"

ओज़ुरू बोला — "क्या तुम यह बात किसी राजा या रानी के बारे में पूछ सकते हो कि वह यहॉ इतनी सुबह सुबह क्या कर रही थी?"

ओकोमा तो यह सुन कर बहुत ही दुखी हो गया और अपने आपको कोसने लगा। वह जो गॉव भर में अपने अच्छे कामों के लिये मशहूर था अब राजा की पत्नी के हत्यारे के रूप में मशहूर हो जायेगा। और खास कर के तब जबकि उसने राजा की पत्नी के लिये कितना किया था।

वह तो अब वह वाला कुत्ता हो गया था जो न केवल अपने खाना खिलाने वाले को काटता ही था बल्कि उसको मार भी देता था। पर ओजुरू आज इस बात से बहुत खुश था कि उसकी यह चाल उसकी योजना के अनुसार ठीक काम कर गयी थी।

अब जब कि ओजुरू यह सोच रहा था कि वह इस घटना को राजा को कैसे बताये, ओकोमा राजा की पत्नी का शरीर उठा कर अपने घर ले गया और उसको कपड़ों और चटाइयों से ढक दिया।

फिर उसने अपने दिमाग में उन सब घटनाओं को एक एक कर के दोहराया जो उसके साथ शुरू से ले कर उन गोली चलाने तक हुई थीं।

उसने सोचा — "इन घटनाओं की तरतीब से तो ऐसा लगता है कि वह मैं नहीं हो सकता जिसने राजा की पत्नी को मारा है। पर अगर ऐसा नहीं है तो फिर उसको किसने मारा? और मैं यह कैसे साबित करूँगा कि उसको मैंने नहीं मारा?"

यही सोचते सोचते उसको पूरा एक दिन बीत गया।

उधर राजा अपनी पत्नी को ढूँढ रहा था। उसने यह मुनादी पिटवा दी थी कि जो कोई भी उसकी पत्नी को ढूँढ कर लायेगा वह उसको बहुत सारा इनाम देगा और उसको इतना अमीर बना देगा जितना कि वह सपने में भी नहीं सोच सकता।

इसके अलावा उस आदमी को जिसने उसको अब तक रखा है और कुछ भी नुकसान पहुँचाया है उसको वह मौत की सजा देगा।

ओकोमा का वह सारा दिन बड़ी बेचैनी में और सोचते हुए गुजरा। शाम तक उसके दिमाग में एक विचार आया जो उसको लगा कि वह बहुत अच्छा था और वह काम कर जायेगा।

अगले दिन उसने अपना बहुत सारा पैसा अपने लिये सबसे बढ़िया कपड़े, गहने और जूते जैसे कि गॉव भर में कभी किसी ने न पहने थे खरीदने में खर्च किये। फिर तीसरे पहर वह उनको पहन कर ओजुरू के पास गया।

जब ओजुरू ने ओकोमा को देखा तो उसका मुँह तो आश्चर्य से खुला का खुला रह गया। उसने ओकोमा से कहा — "मुझे यह तो मालूम था कि तुम अमीर हो पर मुझे यह नहीं मालूम था कि तुम इतने अमीर हो।"

ओकोमा बोला — "हॉ, पर अब मैं हूँ।"

ओजुरू ने पूछा — "पर यह सब तुम्हें मिला कहॉ से?"

ओकोमा बोला — "राजा से।"

ओजुरू बोला — "राजा से? पहले उसकी पत्नी ने तुम्हें अमीर बनाया और अब खुद राजा ने? ऐसा कैसे हुआ?"

ओकोमा ने उसे चिढ़ाया — "उसकी पत्नी को मारने के लिये। साफ है कि वह अपनी पत्नी से छुटकारा पाना चाह रहा था पर उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह उससे कैसे छुटकारा पाये सो उसने मुझे चुना।

ऐसा किसने सोचा था कि मैं इतनी जल्दी इतना अमीर हो जाऊँगा? मुझे लगता है कि हममें से कुछ लोग पैदा ही अच्छी किस्मत ले कर होते हैं।"

ओजुरू अपने में ही बुड़बुड़ाया "कुछ लोग पैदा ही अच्छी किस्मत ले कर होते हैं, उफ़। यह सब तो मेरी किस्मत में होना चाहिये था।"

ओकोमा बोला — "तुमने कुछ कहा?"

ओजुरू बोला — "नही नहीं कुछ नहीं, कुछ नहीं। मैंने कहा कि तुम वाकई बहुत किस्मत वाले हो।"

जब ओकोमा ओजुरू के घर से चला आया और तो ओजुरू यही सोचता रहा कि वह भी उतना अमीर कैसे बने।

आखिर उसके दिमाग में एक प्लान आया। उसी रात ओजुरू राजा के महल की तरफ गया और उसका दरवाजा खटखटाया। एक नौकर ने दरवाजा खोला तो उसने राजा से मिलने की इजाज़त मॉगी। नौकर उसको राजा के पास ले गया।

राजा ने पूछा — "मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूँ मेरे बेटे? मुझे बहुत अफसोस है कि मैं आजकल किसी मेहमान से नहीं मिल जुल रहा हूँ जब तक कि मेरी रानी नहीं मिल जाती। अगर तुम उसी के गायब होने के सिलसिले में आये हो तो ठीक है वरना... ।

"मैं उसी के गायब होने के सिलसिले में आया हूँ, राजा अमर रहे। जो भी कुछ आपने ओकोमा को दिया है वह मेरा है।"

राजा कुछ परेशान सा होता हुआ बोला — "यह तुम क्या कह रहे हो? मैंने ओकोमा को क्या दिया है?"

ओजुरू बोला — "मैं सच कह रहा हूँ। मैंने ही आपकी पत्नी को मारा है और वे सब चीज़ें अब मेरी हैं।"

राजा की फिर भी कुछ समझ में नहीं आया तो ओजुरू ने उसको बताया कि उसने कैसे और क्यों उसकी पत्नी को मारा और फिर उसने कैसे इस तरह की तरकीब निकाली कि ऐसा लगे जैसे कि उसको ओकोमा ने मारा है।

राजा बोला — "मुझे यह कहते हुए बहुत दुख होता है कि तुम न केवल नीच हो बल्कि लालची भी हो। जो तलवार के सहारे जीते हैं वे तलवार से ही मरते हैं।"

राजा बहुत गुस्से में था। उसने अपने नौकरों को हुक्म दिया कि वे उसको गिरफ्तार कर के जेल में डाल दें और फिर मार दें।

फिर ओकोमा को उसने इतनी सारी भेंटें दीं जितनी कि उसने कभी सपने में भी नहीं सोचीं थीं।

जब राजा मर गया तो गॉव वालों ने ओकोमा को अपना राजा बना लिया और उसके अच्छे कामों की देश भर में तारीफ होने लगी।

28 एक लावारिस लड़की[41]

एक बार एक आदमी था जो अपनी दो पत्नियों और दो बेटियों के साथ रहता था। कुछ समय बाद उसकी एक पत्नी अपनी बेटी चिका[42] को छोड़ कर मर गयी। उसकी दूसरी पत्नी ही अपनी सौत की बेटी को पालने पोसने लगी।

पर उस लड़की चिका की वह सौतेली मॉ चिका के लिये बहुत ही बुरी थी। वह उसको कभी प्यार नहीं करती थी। वह उसके साथ नौकर से भी बुरा बरताव करती थी।

वह अपनी बेटी इनूमा[43] को बहुत प्यार करती थी। उसको वह कभी कुछ काम नहीं करने देती थी और उसको बहुत आराम से रखती थी। इस तरह इनूमा बहुत बिगड़ गयी थी और वह किसी की इज़्ज़त भी नहीं करती थी।

हालॉकि घर में दोनों बहिनों को काम करना चाहिये था पर चिका ही घर का सारा काम करती थी। वह घर में सारा काम बहुत ही अच्छा करती थी और कभी शिकायत भी नहीं करती थी।

जब वे दोनों खाना खातीं तो इनूमा को बहुत बढ़िया खाना मिलता और चिका को अक्सर उसका बचा हुआ खाना ही मिलता।

---

[41] The Orphan Girl (Tale No 28) – an Igbo folktale from Nigeria, Africa.

[42] Chika – name of the orphan girl

[43] Enuma – name of the other girl

उसकी सौतेली मॉ ने उससे कह रखा था — "अगर मैंने किसी के मुँह से सुना कि तू यह खाना खाती है तो मैं तुझे मार दूँगी।"

इसलिये चिका ने इस बात की कभी किसी से शिकायत भी नहीं की कि उसको इनूमा का बचा हुआ खाना मिलता है। वह इसी बात से बहुत सन्तुष्ट थी कि उसको कम से कम कुछ तो खाने को मिल रहा था।

इस गॉव में यह रिवाज था कि इके बाजार[44] के दिन नदी से पानी लाने के लिये कोई भी आदमी नहीं जा सकता था क्योंकि वह नदी आदमियों और भूतों की दुनियॉ की हद पर थी। नदी के इस पार आदमी रहते थे और उस पार भूत रहते थे।

लोगों को पुजारियों[45] ने बताया हुआ था कि इके बाजार वाले दिन भूत उस नदी पर पानी लेने आते थे और दूसरे तीन बाजार दिन आदमियों के वहॉ पानी भरने के लिये थे।

एक दिन एनक्वो[46] बाजार वाले दिन जब परिवार खेतों से रात गये लौटा तो चिका को पता चला कि उनके घर में पानी कम था। अब क्योंकि अगला दिन इके बाजार दिन था इसलिये उसने काफी पानी उस दिन के लिये बचा कर रखा हुआ था पर फिर भी वह पानी किसी वजह से अगले दिन के लिये कम रह गया था।

---

[44] Eke market day

[45] Translated for the word "Diviner" – means who tell future by divine means

[46] Nkwo – maybe these names are like Sunday, Monday etc in Nigerian language

शाम को खाना खाने के बाद इनूमा नहाना चाहती थी पर चिका ने मना कर दिया क्योंकि कि वह पानी उस दिन घर में आखिरी पानी था और अगले दिन के लिये भी काफी नहीं था।

उसने कहा — "जो पानी बचा है वह कल के लिये भी मुश्किल से ही काफी है और तुम नहाना चाहती हो?"

इनूमा बोली — "पर मुझे नहाना जरूरी है।"

चिका ने कहा — "पर हम दोनों खेत पर अभी तीसरे पहर ही तो नहाये थे।"

दोनों लड़कियॉ पानी के घड़े के ऊपर अपनी पूरी ताकत से लड़ने लगीं जैसे कि उनकी ज़िन्दगी ही उस घड़े में हो। चिका ने अपनी दोनों बॉहों से उस घड़े को चारों तरफ से पकड़ लिया ताकि इनूमा उसका पानी न ले ले और इनूमा उस घड़े को चिका से छीनने लगी।

जब वे आपस में इस घड़े के पानी के ऊपर बहस कर रही थीं और घड़े को अपनी तरफ खींच रही थीं तो इस बीच उस घड़े का बहुत सारा पानी छलक कर बिखर गया।

इनूमा की मॉ उनका बीच बचाव करने आयी। जब लड़कियों ने दरवाजे पर आहट सुनी तो चिका ने सौतेली मॉ के डर से उस घड़े पर से अचानक अपनी पकड़ छोड़ दी। इससे इनूमा को धक्का लगा और वह पीछे जा गिरी।

इससे वह घड़ा तो टूट ही गया और जो कुछ भी पानी उस घड़े में था वह भी सब बिखर गया। चिका बच्चों की तरह हॅस पड़ी।

उसकी सौतेली मॉ चिल्लायी — "यह क्या कोई हॅसने की बात थी चिका?"

बड़ी मुश्किल से अपनी हॅसी छिपा कर चिका सहम कर बोली — "नहीं मॉ।"

मॉ ने पूछा — "यहॉ क्या हो रहा है?"

दोनों लड़कियों ने अपना अपना मामला पेश किया पर चिका को बिल्कुल भी आश्चर्य नहीं हुआ जब इनूमा इस घटना के बारे में बिल्कुल भी झूठ नहीं बोली क्योंकि इनूमा अपने दोनों बहिनों के मामले में हमेशा सच ही बोलती थी।

असल में उसके झूठ बोलने की कोई वजह भी नहीं थी खास करके जब जबकि उसकी अपनी मॉ जज थी। इनूमा को पता था कि चाहे कैसा भी मामला हो उसकी मॉ उसी की तरफ से बोलेगी।

चिका की सौतेली मॉ ने चिका की तरफ इशारा करके कहा — "मैं जानती थी कि वह तू ही होगी। इसका मतलब यह है कि तूने यह नहीं देखा कि घर में पानी काफी था कि नहीं और तू उसको नहाने नहीं देना चाहती।

देखना कि कल तेरे पिता कहीं जागने पर अपना नहाने का पानी न मॉग बैठें और न ही मैं अपना खाना बनाने के लिये।"

चिका बोली — "पर मॉ कल तो इके बाजार दिन है।"

मॉ बोली — "ओह, यह तो मेरे लिये एक नयी खबर है। यह समस्या तेरी है मेरी नहीं, है न? बस वह ध्यान में रखना जो मैंने तुझसे कहा है नहीं तो मैं तेरा मॉस गिद्धों को खिला दूँगी।" इतना कह कर वह घूमी और घर के अन्दर चली गयी।

इस बीच इनूमा ने अपने कपड़ों से पानी निचोड़ा, अपने पीछे से मिट्टी झाड़ कर साफ की और फिर अपनी मॉ के पीछे पीछे घर के अन्दर चली गयी।

जब वह घर के अन्दर घुस रही थी तो वह चिका से बोली — "अब बता हॅसने की किसकी बारी है और रोने की किसकी?"

अगले दिन चिका मुर्गे की दूसरी बॉग से पहले ही उठ गयी। उसने पानी का सबसे बड़ा घड़ा उठाया जो वह ला सकती थी और पानी लाने नदी की तरफ चल दी।

वह उधर कॉपती कॉपती सी चली जा रही थी और अपने ची[47] से प्रार्थना करती जा रही थी — "अगर मॉ अपने बच्चों के लिये इसी तरह से दुआ करती हैं तो मेरे साथ जो कुछ भी बुरा हो हो जाये, पर अगर वे ऐसा नहीं करतीं तो मेरा ची मेरी रक्षा करे।"

चलते चलते हर कदम पर वह डर के मारे सिकुड़ती जा रही थी उसको लग रहा था कि सारी घासें उसे घूर रहीं थीं। जल्दी ही वह

[47] Chi – means personal god

सड़क पर एक ऐसी जगह आ गयी जहॉ उसे लगा कि बहुत सारे बिच्छू सड़क पर बिखरे पड़े हैं।

उसने अपना घड़ा जितनी कस कर वह पकड़ सकती थी अपने बॉये हाथ से कस कर पकड़ लिया और फिर अपना दाहिना हाथ अपनी ऑखों पर फेर कर दोबारा उस जगह को देखा जहॉ उसने वे बिच्छू देखे थे कि कहीं उसकी आखों को धोखा तो नहीं हुआ।

पर नहीं वह उसकी ऑखों का धोखा नहीं था। वे बिच्छू वहॉ थे। जब उसको विश्वास हो गया कि जो कुछ उसने देखा था वह ठीक ही देखा था तो उसने उन बिच्छुओं से प्रार्थना की कि वह उसको रास्ता दे दें।

उसने अपनी कहानी उनको सुनाते हुए यह गाया —

मिस्टर विच्छुओ, अच्छे बिच्छुओ एक गरीब बेसहारा पर दया करो
यह मेरी इच्छा नहीं थी कि मैं यहॉ आऊॅ मेरी सौतेली मॉ ने मुझे यहॉ भेजा है
हालॉकि पुजारियों ने कहा है कि यहॉ किसी को नहीं आना
पर मॉ का कहना न मानना तो भगवान ने भी मना कर रखा है न

उसकी यह कहानी सुन कर सारे बिच्छू रास्ते से गायब हो गये और वह अपने रास्ते चल दी।

अभी वह ज़्यादा दूर नहीं गयी थी कि उसे रास्ते में बहुत सारे सॉप दिखायी दिये। वे सब एक दूसरे से लिपटे हुए एक बहुत बड़े ढेर के रूप में वहॉ पड़े थे। चिका तो उनको देख कर बहुत ही डर

गयी। वह तो चीख कर ऐसे कूद गयी जैसे हाथी घास[48] ने उसकी नंगी टॉगों को छू लिया हो।

जब उसकी सॉस में सॉस आयी तो उसने सॉपों से भी प्रार्थना की। उसने उनको भी अपनी कहानी सुनायी और अपना पहला वाला गीत गाया। आश्चर्य, उसका गीत सुन कर वे सॉप भी चले गये।

सॉपों के जाने के बाद उसने चैन की सॉस ली और वह फिर अपने पक्के इरादों के साथ आगे चल दी। चलते चलते वह उन सॉपों को गिनने की कोशिश करने लगी जिनको उसने वहॉ देखा था।

पर इतने में ही बहुत सारे बड़े बड़े शेरों की दहाड़ से उसका ध्यान बॅट गया। एक शेरनी उसकी तरफ बढ़ी।

उसको देखते ही चिका के दिमाग में शेरनी के शिकार की कहानियॉ कि शेरनी कैसे शिकार करती है बिजली की सी तेज़ी से दौड़ गयीं। उसने फिर अपना वही गीत गाया और आश्चर्य कि वे सारे शेर भी गायब हो गये।

चिका इन सब परेशानियों को झेलती हुई फिर आगे बढ़ी। आगे चल कर उसको एक बुढ़िया मिली जो अपने सिर पर चल रही थी।

[48] Elephant Grass or Ugandan grass – a kind of fodder grass mostly found in East African countries

फिर दो नारियल दिखायी दिये जो आपस में एक दूसरे को तोड़ने की कोशिश कर रहे थे। उसके बाद उसने कई सारे कपड़े देखे जो नदी के किनारे अपने आप ही धुल रहे थे।

जब उसने पानी लेने के लिये नदी में पैर रखा तो कोई नाक से बोलता हुआ सुनायी दिया — "तुम यहाँ क्या कर रही हो मेरी बच्ची?"

चिका ने ऊपर देखा नीचे देखा, इधर देखा उधर देखा, पर उसे कोई दिखायी नहीं दिया। इससे पहले कि वह कोई जवाब देती वही आवाज फिर बोली — "तुम्हें इधर उधर देखने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि तुम जो कुछ देखोगी वह तुमको देखने में अच्छा नहीं लगेगा।"

पर चिका को अब उस आवाज के बोलने वाले से डर कम लग रहा था और उसको देखने की उत्सुकता ज़्यादा हो रही थी। अब तक उसका सामना केवल खतरनाक जानवरों और अजीब अजीब चीज़ों से ही हुआ था पर अब एक आदमी जो बोल रहा था... उसको देखना तो जरूरी था न।

चिका ने उस आवाज को नमस्ते की और उससे पूछा — "क्या आज आप ठीक से सोयीं?"

आवाज ने हाँ में जवाब दिया और फिर वह आगे बोली — "बेटी, तुम्हारे जैसी प्यारी लड़की के लिये यह जगह इस दिन आने

की जगह नहीं है। क्या तुम्हारी मॉ को यह बात पता नहीं जो उसने तुमको यहॉ मरने के लिये भेज दिया?"

चिका ने उस तरफ देखा जिस तरफ से उसको लग रहा था कि वह आवाज आ रही थी। आश्चर्य कि वहॉ एक बहुत ही बदसूरत बुढ़िया खड़ी थी। उस बुढ़िया की एक ऑख थी, एक हाथ था और एक पैर था। वह आधे शरीर की बुढ़िया थी।

उसकी नाक का एक बड़ा हिस्सा कोढ़ से खत्म हो गया था जिसने उसकी आवाज को नाक से बोलने वाली बना दिया था। उसके पास एक घड़ा था जो चिका के घड़े के साइज़ से एक चौथाई साइज़ का था।

चिका को उस बुढ़िया पर दया आ गयी। उसने उसका घड़ा पानी से भर दिया। जब वह बुढ़िया कूद कूद कर चल रही थी तो चिका उसके पीछे पीछे उसके घर तक जा रही थी।

चिका उस बुढ़िया के साथ बहुत अच्छा महसूस कर रही थी सो उसने उसको अपनी सारी कहानी सुना दी। उसने उसको बताया कि किस तरह उसकी मॉ मर गयी थी। किस तरह उसकी सौतेली मॉ उसका पालन पोषण कर रही थी। और किस तरह वह घर का सारा काम करती थी।

उसने उसको पानी का घड़ा टूटने की घटना भी बतायी और कहा कि उसी घड़े के टूटने की वजह से वह वहॉ आज इके बाजार वाले दिन पानी भरने आयी थी।

जब दोनों उस बुढ़िया के घर पहुँचे तो उस बुढ़िया ने चिका को याम[49] की जगह एक पत्थर दिया और मछली की जगह पेड़ की छाल दी और उससे अपने लिये खाना बनाने के लिये कहा।

चिका ने उससे वे चीज़ें लीं और उनको एक घड़े में रख दिया जो उस बुढ़िया ने ही उसको दिया था। फिर उस घड़े के नीचे उसने आग जला दी।

कुछ पल बाद वह उसको देखने गयी तो उसने देखा कि वह घड़ा तो बहुत ही स्वादिष्ट मछली और याम से भरा हुआ था। उसने वह खाना बुढ़िया और अपने दोनों के लिये परोसा और दोनों ने उसे खाया।

जब वे दोनों खाना खा चुकीं तो चिका को लगा कि काफी समय बीत चुका है सो उसने बुढ़िया से जाने की इजाज़त माँगी।

उसने बुढ़िया से कहा — "मुझे अफसोस है लेकिन अब मैं जाना चाहती हूँ क्योंकि कहीं ऐसा न हो कि मेरी माँ यह सोचे कि मैं काम से बच रही हूँ। मुझे उम्मीद है कि आप ठीक रहेंगी। मैं आपसे मिलने के लिये फिर आऊँगी।"

[49] Yam is a tuber vegetable which is a staple food in West African countries. One Yam can weigh up to 10 pounds heavy. See its picture above.

बुढ़िया बोली — "इससे पहले कि तुम जाओ बेटी, अपने लिये इन दो घड़ों में से एक घड़ा लेती जाओ। यह तुम्हारी सहायता के बदले में मेरी एक छोटी सी भेंट है।"

कह कर उसने चिका को कैलेबाश के दो घड़े[50] दिखाये। एक घड़ा बड़ा था जिस पर फूल पत्ती का डिजाइन बना हुआ था और दूसरा घड़ा छोटा था जो ऐसा लगता था कि उसको बिना मौसम के किसी बिना माली के खेत से तोड़ा गया हो।

चिका ने छोटा वाला घड़ा ले लिया और उस बुढ़िया को धन्यवाद दिया।

बुढ़िया बोली — "ठीक है मेरे बच्चे, ठीक से जाओ और खुश रहो। जब तुम घर पहुँच जाओ तो अपने माता पिता को बुलाना और उनसे अपने घर में थोड़ी सी जगह खाली करने के लिये कहना। जब वे जगह साफ कर दें तब यह घड़ा तोड़ना।

और हाँ, जब तुम घर जा रही होगी तो रास्ते में तुम डुम डुम और चम चम चम की आवाज सुनोगी। पहली आवाज पर तुम किसी झाड़ी में भाग जाना और उस बुरी आत्मा को जाने देना। दूसरी आवाज पर तुम वहाँ से बाहर निकल आना और अपने घर चली जाना।"

---

[50] Translated for the word "Calabash" – Calabash is the dried outer cover of a pumpkin-like fruit to keep dry or wet things. See its picture above.

जैसे ही चिका वहॉ से चली तो उसने डुम डुम और चम चम चम की आवाज सुनी। उस बुढ़िया के कहे अनुसार पहली आवाज पर वह एक झाड़ी में छिप गयी और उसके बाद दूसरी आवाज पर वह वहॉ से बाहर निकली और अपने घर पहुॅच गयी।

घर पहुॅच कर उसने अपने माता पिता से घर में थोड़ी सी जगह साफ करने को कहा। उसकी सौतेली मॉ उस पर देर से आने के लिये चिल्लाने को ही थी कि चिका ने वह घड़ा तोड़ दिया।

तुरन्त ही सारा घर सोने चॉदी, खाना जानवर और बहुत सारी अच्छी अच्छी चीज़ों से भर गया। उसका पिता यह सब देख कर बहुत खुश हुआ।

पहली बात तो यह कि उसकी बेटी सही सलामत वापस आ गयी थी और दूसरी बात यह कि वह इतना सारा खजाना साथ ले कर आयी थी। उसका प्यार चिका के लिये और बढ़ गया था।

पर चिका की सौतेली मॉ खुश नहीं थी। उसकी इच्छा थी कि उसकी अपनी बेटी यह सब खजाना ले कर घर आती। इस बात के लिये उसको अगले इके बाजार दिन तक इन्तजार करना पड़ा।

इके बाजार के पहले दिन जब सब लोग सोने चले गये तो वह अपने घर के पीछे गयी और पानी के सारे बर्तनों से पानी पलट दिया।

अगले दिन इके बाजार वाले दिन चिका की सौतेली मॉ मुर्गे की पहली बॉग से भी पहले उठी और अपनी बेटी इनूमा को उठा कर उसे नदी से पानी लाने भेजा।

वह उसके ऊपर चिल्लायी — "उठ, तू किसी काम की नहीं। तू हमेशा ही घर में रहना चाहती है और सोना चाहती है जब कि यह दूसरी लड़की अपने पिता का सारा प्यार ले लेगी।

जा अभी अभी अपना घड़ा उठा, नदी से पानी भर कर ला और अपने पिता को खुश कर। और हॉ देख तू चिका के घड़े से भी ज़्यादा बड़ा घड़ा ले कर आना।"

इनूमा इके बाजार वाले दिन पानी लाने जाना नहीं चाहती थी पर मॉ के कहने से उसको जबरदस्ती वहॉ जाना पड़ रहा था। इनूमा बेचारी ने घड़ा उठाया और नदी की तरफ डरती डरती चल दी।

रास्ते में उसको भी वह सब मिला जो चिका को मिला था पर उसने उन सबके साथ बहुत ही खराब बर्ताव किया। उसने बिच्छुओं, सॉपों और शेरों से कहा "मेरे रास्ते से हट जाओ।"

उसको नारियल और कपड़ों की घटनाऐं मजेदार लगीं और जो बुढ़िया अपने सिर पर चल रही थी वह उस पर हॅस दी।

जब वह नदी के पास पहुॅची तो उस बुढ़िया ने उससे बोलना चाहा पर उसने नफरत से अपनी नाक ढक ली। उसने उसकी कोई सहायता भी नहीं की।

जब बुढ़िया ने उसको अपने घर बुलाया तो वह उसके घर केवल इसलिये गयी क्योंकि उसको उसके घर से वे जादू के घड़े लेने थे। जब बुढ़िया ने उसको याम के लिये पत्थर, मछली के लिये पेड़ की छाल और घड़ा दिया तो वह बहुत भुनभुनायी।

उसने कहा — "कोई इस तरह कैसे रह सकता है। क्या तुम को मालूम नहीं कि ये घड़े जल जाते हैं और खाना पकाने के लिये इस्तेमाल नहीं किये जाने चाहिये? और पत्थर और पेड़ की छाल खाते हुए भी तुमने कभी किसी को सुना है क्या? और मैं जब अपना खाना अपने आप नहीं बनाती तो फिर मैं तुम्हारे लिये खाना क्यों बनाऊँ?"

इस तरह से इनूमा हर बात में शिकायत करती रही। उसने केवल वही काम किये जो उसके लिये आसान और फायदेमन्द थे।

जब वह वहाँ से जाने लगी तो उस बुढ़िया ने उसको भी दो घड़े दिखाये और बोली — "तुम इनमें से एक घड़ा ले लो। जब तुम रास्ते में डुम डुम की आवाज सुनो तो किसी झाड़ी में छिप जाना पर जब तुम चम चम चम की आवाज सुनो तब वहाँ से बाहर निकल कर अपने घर चली जाना। घर जा कर अपनी माँ से पूछना... ।"

इनूमा ने उसकी बात बीच में काटी — "मुझे मालूम है कि मुझे क्या करना है।" उसने घड़ों की तरफ देखा और उस बुढ़िया से बड़ा वाला और ज़्यादा सुन्दर दिखायी देने वाला घड़ा छीन लिया और अपने घर की तरफ चल दी।

बुढ़िया कॉपती आवाज में बोली — "बेटी, शान्ति से जाओ। मुझे तुम्हारे लिये डर लगता है।"

इनूमा घर चल दी। जब वह घर जा रही थी तो उसने सुना डूम डूम डूम। पर वह चलती चली गयी। फिर उसने सुना चम चम चम और वह एक झाड़ी में घुस गयी।

जब वह घर आ गयी तो उसने भी अपनी मॉ से पूरा घर साफ करने के लिये और घर के दरवाजे और खिड़कियॉ बन्द करने के लिये कहा ताकि वे अपना खजाना केवल अपने ही पास रख सकें।

वह अपनी मॉ से बोली — "मॉ, खूब बड़ी सी जगह साफ कर लो क्योंकि मैं तो बड़ा घड़ा ले कर आयी हूँ।"

उसकी मॉ ने जल्दी जल्दी घर साफ किया और घर के दरवाजे और खिड़कियॉ बन्द कीं और इनूमा को घड़ा तोड़ने के लिये कहा। इनूमा ने घड़ा तोड़ा तो उसमें से तो बजाय खजाने के बहुत तरह की बीमारियॉ निकल पड़ीं।

जब इनूमा के पिता ने अपनी पत्नी और बेटी इनूमा को घर में नहीं देखा तो उसने उनके दरवाजे खोले तो वे सारी बीमारियॉ घर में से निकल कर दुनियॉ भर में फैल गयीं। और इस तरह से दुनियॉ में सारी बीमारियॉ फैलीं।

चिका हमेशा ही बहुत मेहनती और बहुत ढंग की लड़की रही। जब वह बड़ी हो गयी तो उसकी शादी एक सुन्दर और अमीर

राजकुमार से हो गयी और वे दोनों बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

29 एक की ताकत[51]

बहुत पुरानी बात है कि अफ्रीका के नाइजीरिया देश में एक राजा राज करता था जिसका नाम था ऐटुकूडो[52]। उसके पास वह सब कुछ था जो एक राजा के पास होना चाहिये।

उसके पास बहुत सारे याम[53] थे, जानवर थे, बकरिया थीं, भेड़े थीं, चॉदी के सिक्के थे, सोने के सिक्के थे। उसके पास हजारों एकड़ जमीन में खेत थे और उनकी देखभाल करने के लिये सैंकड़ों किसान भी थे।

राजा ऐटुकूडो बहुत ही दयालु था और अक्सर अपने काम करने वालों को उनकी तनख्वाह के ऊपर से इनाम भी दिया करता था।

एक साल राजा के खेत में बहुत ही अच्छी उपज हुई और उसने अपने दुश्मन को भी जीता तो वह लोगों को उनकी मेहनत के लिये कुछ इनाम देना चाहता था सो उसने अपने नौकरों के सरदार अकपन[54] को बुलाया — "अकपन।"

"जी सरकार।"

---

[51] The Power of One (Tale No 29) – a folktale from Calabar, Nigeria, Africa.

[52] Etukudo – the name of the King

[53] Yam is a root vegetable which is very common and staple food in Nigeria. Sometimes its one tuber goes to weigh even up to 10 pounds. See its picture above.

[54] Akpan – Nigerian name of a male

राजा ने अकपन से कहा — "देखो खजाने की तरफ जाओ और उन चीज़ों को ले आओ जिनको तुमने कल रात गिना था। मुझे उम्मीद है कि उन्हें किसी ने छेड़ा नहीं होगा।"

अकपन बोला — "नहीं मेरे सरकार, किसी ने नहीं छेड़ा। मैंने यह पहले ही देख लिया है।" और वह पीछे के कमरे में चला गया।

कुछ ही देर बाद वह उस कमरे में से **12** दूसरे नौकरों के साथ बाहर आया। ये सारे **12** नौकर एक एक टोकरी सिक्कों की लिये हुए थे। वह बोला — "सरकार, ये रहे वे सिक्के।"

राजा बोला — "अब तुम गॉव के मैदान में चले जाओ और इन सबको मेरे गॉव में रहने वालों में बॉट दो क्योंकि इस साल उन्होंने बहुत मेहनत की है। उनको उनकी मेहनत का फल तो उन्हें मिलना ही चाहिये।

जैसा कि हमारे लोग कहते हैं जब किसी डाक्टर की किस्मत चमकती है तो वह उसके दवाओं के थैले में जा कर गिरती है।"

अकपन बोला — "सरकार आप बहुत ही अक्लमन्द और दयालु राजा हैं।"

कह कर अकपन ने वे टोकरियॉ दूसरे नौकरों की सहायता से उठवायीं और उन सबको गधों पर लाद दिया। और फिर वे सब उन टोकरियों को ले कर गॉव के मैदान की तरफ चल दिये।

जब तक वे सब गॉव के मैदान में पहुॅचे तो हर कोई, जानवर भी, वहॉ खड़े हुए थे और बड़ी उत्सुकता से राजा के पैसे का इन्तजार कर रहे थे।

इससे पहले भी राजा ने उनको उनके काम के अनुसार भेंटें दे चुका था पर इस बार उसने निश्चय किया था कि वह सबको उतना देगा जितना वे मॉगेंगे।

सो जब सारे गधे वहॉ पहुॅच गये तो अकपन ने भीड़ के सामने यह घोषणा की कि हर एक को उसका मुॅह मॉगा पैसा मिलेगा।

यह सुन कर हाथी चिल्लाया — "वाह। मुझे लगता है कि मैं उतने सोने के सिक्के मॉग लूॅ जो गिने ही न जा सकें। एक ऐसा नम्बर जो इतना बड़ा हो कि उसको गिनने से पहले ही तुम्हारा जबड़ा टूट जाये।"

खरगोश बोला — "इसका मतलब है कि तुमको उतने सारे खाने की जरूरत है। मुझे तो केवल **100** चॉदी के सिक्के चाहिये।"

शेर बोला — "और मुझे तो **200** चॉदी के सिक्के चाहिये।"

बन्दर बोला — "मैं समझता हूॅ कि **500** सोने के सिक्के मेरे लिये काफी होंगे।"

गोरिल्ला बोला — "**1000** चॉदी के सिक्कों के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है?"

अकपन बोला — "तुम समझो कि ये सब तुमको मिल गये।" और उसने गोरिल्ला के पैर के तलवे पर एक निशान बना दिया ताकि वह उन लोगों को पहचान सके जिनकी मॉग पूरी हो चुकी थी।

आखीर में वह कछुए के पास आया और उससे पूछा — "ओ बूढ़े कछुए, तुमको कितना चाहिये?"

कछुआ बोला — "एक।"

अकपन ने पूछा — "एक क्या? एक हजार, एक सौ, एक क्या?"

कछुआ बोला — "केवल नम्बर एक।"

"ठीक है, ओ सब कुछ जानने वाले, जो तुम चाहो।"

बाकी भीड़ इस बात पर हॅसे बिना न रह सकी। एक बार को तो उन सबने सोचा कि कछुआ शायद या तो बहुत ही तमीज से बोल रहा है या फिर वह सन्तुष्ट है और या फिर बेवकूफ है।

कछुए ने अपने मन में कहा — "देखते हैं कि आखीर में कौन हॅसता है।"

चीता बोला — "रुको ज़रा। क्या तुम इतने सारे सिक्कों में से केवल एक सिक्का चाहते हो?"

कछुआ बोला — हॉ, केवल एक।"

चीता बोला — ठीक है ठीक है। मैं देखता हूँ। तुम किसी शरारत पर तो नहीं हो? क्या...?

अकपन ने सब लोगों का ध्यान अपनी तरफ खींचने के लिये अपना गला साफ किया और बोला — "मैं अब तुम लोगों को तुम्हारी इच्छा के अनुसार सिक्के बाँटना शुरू करता हूँ।"

कह कर वह लाइन के शुरू में चला गया और कछुआ अपनी टोकरी ले कर उसके पीछे पीछे चला।

जब अकपन हाथी के पास आया तो उसने उसको उसके माँगे हुए सोने के सिक्के देने के लिये सोने के सिक्कों की टोकरी में हाथ डाला और गिनना शुरू किया — "एक,... ।"

कछुआ तुरन्त बोला — "यह मैं हूँ।" और अकपन से वह सिक्का ले कर उसने अपनी टोकरी में रख लिया।

अकपन ने हाथी के लिये फिर से सिक्के गिनने शुरू किये — "एक... ।"

कछुआ बोला — "यह मैं हूँ फिर से।" और उसने अकपन के हाथ से वह सिक्का भी ले कर अपनी टोकरी में डाल लिया।

अकपन ने फिर गिनना शुरू किया — "एक... ।"

"फिर मैं..." और वह सिक्का भी कछुए ने अकपन से ले कर अपनी टोकरी में डाल लिया।

इस तरह से जब भी अकपन एक कहता तो कछुआ उसके हाथ से वह सिक्का ले कर अपनी टोकरी में डाल लेता।

अब तो भीड़ का धीरज टूट गया। कुछ बड़े बड़े जानवर कछुए और अकपन के पास तक आ गये और अकपन से बोले — "दूसरों की भी तो बारी आनी चाहिये।"

कछुए ने गोरिल्ले से कहा — "जब वह आवाज लगायेगा 2000 तब तुम्हारी बारी आयेगी। इस समय तो वह एक की आवाज लगा रहा है तो यह तो मेरी बारी है।"

नौकर बोला — "एक।"

"मैं यहॉ हूँ जनाब।" कछुआ बोला।

अब तक भीड़ इस खेल को समझ चुकी थी और वहॉ से छॅटने लगी थी। कछुए ने एक एक करके सारे सिक्के अपनी टोकरी में इकट्ठे कर लिये थे और जब वह उनको उठा कर नहीं ले जा सका तो उसने उनको ले जाने के लिये राजा के गधे भी उधार ले लिये।

इस तरह कछुए ने अपनी अक्लमन्दी से राजा से केवल एक मॉग कर उसके सारे सिक्के ले लिये।

30 रबर का आदमी[55]

नाइजीरिया की यह लोक कथा यह बताती है कि कछुए दूसरों को देख कर अपना मुँह अपने खोल में क्यों छिपा लेते हैं। डर से या शरम से?

कछुआ एक सुस्त और बहुत ही धीमा चलने वाला जानवर था जो अपनी चालकियों पर ही जीता था।

एक बार खेत बोने के समय में काफी दिनों तक सूखा पड़ने के बाद बारिश बहुत तेज़ी से आयी। सबने अपने अपने खेतों पर बहुत मेहनत से काम किया – हल चलाया, बीज लगाये, पर कछुए ने कुछ भी नहीं किया।

जब सारे लोग काम कर रहे थे तो कछुए के पास जो थोड़ा बहुत खाना था वह उसे खाता और सारा दिन सोता रहता।

उसकी पत्नी को हमेशा यह चिन्ता लगी रहती कि हम लोग अपना समय बर्बाद कर रहे हैं पर वह इसके सिवाय कुछ और कर भी नहीं सकती थी कि वह कछुए को केवल कुछ सलाह दे दे।

---

[55] The Rubber Man (Tale No 30) – a Hausa folktale from Nigeria, West Africa.
[My Note: This story is similar to Anansi Spider's story "Makada Aur Bhediya" published in "Anansi Makade Ke Karname-1" by Sushma Gupta written in Hindi language.]

एक दिन उसने अपने पति से कहा — "क्या हम लोग इस साल कुछ भी नहीं बो रहे? बारिश तो आ गयी है और हमारे पड़ोसियों ने तो सैंकड़ों एकड़ जमीन में हल भी चला लिया है।"

कछुआ बोला — "यह तो तुम ठीक कहती हो। बारिश शुरू तो हो चुकी है पर अभी कम हुई है। और तुम इन लोगों की बात छोड़ो ये लोग तो बारिश के जमीन को गीला करने से काफी पहले ही अपना खेत जोतने लग जाते हैं। तुम चिन्ता न करो हमारे पास अभी बहुत समय है।

इसके अलावा यह कोई मायने नहीं रखता कि तुम कितनी तेज़ या फिर कितनी जल्दी दौड़ शुरू करते हो, बल्कि यह ज़्यादा मायने रखता है कि तुम उस दौड़ को कैसे पूरी करते हो।"

उसकी पत्नी बोली — "ठीक है, पर याद रखना अगर एक बार बारिश चली गयी तो फिर तुम अपना खेत नहीं जोत पाओगे।" उसकी पत्नी ने उसको एक बार फिर से उसको याद दिलाया कि उसके पड़ोसियों ने भी अपना अपना काम शुरू कर दिया है पर कछुआ टस से मस नहीं हुआ।

चिम्पान्ज़ी ने कछुए से पूछा — "इस बार खेत बोने के मौसम में तुम्हें क्या हुआ, ओ बूढ़े कछुए। मुझे साफ साफ दिखायी दे रहा है कि इस बार तुम अपने परिवार को फिर से भूखा मारने वाले हो।

और हॉ देखो, तुम कम से कम मेरे पास खाना उधार मॉगने के लिये मत आना। मैं तुम्हें कोई खाना नहीं देने वाला।"

कछुआ बोला — "हॉ हॉ नहीं आऊॅगा। तुमको इस बात की चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है।"

चिम्पान्ज़ी बोला — "और कौवी के पास भी मत जाना। उसको बेचारी को वैसे ही बहुत लोगों को खाना खिलाना पड़ता है।"

समय गुजरता गया और बहुत सारे जानवरों ने अपने खेतों की गुड़ाई भी कर दी, घास फूस भी निकाल दी पर कछुए ने न तो अपने खेत में हल चलाया और न बीज ही बोया और न कुछ और ही किया।

इस बीच बहुत सारे बीज बो दिये गये थे और अनाजघर खाली पड़े थे। कछुए का अनाजघर भी खाली पड़ा था क्योंकि उसमें तो जो कुछ भी था वह उसे खा कर पहले ही खत्म कर चुका था।

कछुए की पत्नी की चिन्ता बढ़ रही थी और अब उसका धीरज भी छूटता जा रहा था, इसलिये नहीं कि उनके पास अब खाने के लिये कुछ भी नहीं था बल्कि इसलिये भी कि अब फसल काटने का समय आ रहा था और उनके पास उसके बाद भी खाने के लिये कुछ भी नहीं होगा।

तब कछुए ने एक तरकीब सोची। उसने अपनी पत्नी से कहा — "अब समय आ गया है जब मैं अपने खेत की जमीन ठीक कर आऊॅ और उसमें हल चला आऊॅ। लो तुम ये पैसे लो और जा कर

बाजार से कुछ टोकरी मूँगफली खरीद लाओ। उनको भून दो और उनमें थोड़ा नमक मिला दो ताकि वे बोने के लिये तैयार हो जायें।"

कछुए की पत्नी ने पूछा — "अरे क्या कभी किसी को तुमने भुनी हुई और नमक लगी हुई मूँगफली बोते हुए भी सुना है?"

कछुआ बोला — "तुम मुझ पर भरोसा तो रखो प्रिये। मैं जानता हूँ कि मैं क्या कर रहा हूँ। ये मूँगफलियाँ तुरन्त फल देंगी। इनको भून कर और नमक लगा कर बोओ और फसल काटने के समय इनको भुना हुआ और नमक लगा हुआ निकाल लो।"

कछुए की पत्नी ने पहले यह कभी नहीं सुना था पर उसने अपने पति के कहे अनुसार वही किया जो उसके पति ने उससे करने को कहा था।

उसने कुछ मूँगफलियाँ खरीदीं। बोने के लिये उनको भूना और उनमें नमक लगा कर कछुए को दे दीं।

कछुआ उनको ले कर खेत में बोने चला गया। खेत पर पहुँच कर उसने उनको दोपहर के खाने में खाया, थोड़ा आराम किया, धूप खायी और शाम को थका हारा होने का बहाना करता हुआ घर आ गया।

अगले दिन मुर्गे के पहली बॉग देने से पहले ही कछुआ उठ गया और खेत पर जाने के लिये तैयार हो गया। आज उसको मूँगफली के बीज बोने थे न।

कछुए की पत्नी यह सब देख कर बहुत खुश थी कि कछुआ खेती का काम कितनी वफादारी और लगन से कर रहा था। सो उसने मूँगफलियों को बॉधने में ज़रा सा भी समय बरबाद नहीं किया और तुरन्त ही मूँगफलियॉ बॉध कर उसको दे दीं।

कछुए ने मूँगफली के थैले अपनी पीठ से बॉधे और चल दिया। आज वह खेत पर नहीं गया बल्कि जंगल में अपनी प्रिय जगह चला गया और वहॉ जा कर मूँगफली की खूब दावत उड़ायी।

सारे दिन वह धूप खाता रहा या सोता रहा और शाम को वह फिर से थका हारा होने का बहाना कर के घर आ गया। घर आ कर वह अपनी पत्नी से बोला — "मैं घर आ गया। मेरा खाना कहॉ है?"

कछुए की पत्नी कछुए को देख कर बहुत खुश हो गयी वह बोली — "आओ मेरे हीरो। तुम्हारा खाना तैयार है। मैं बस अभी लगाती हूँ।"

आगे के कई दिनों तक यही चलता रहा। कछुआ सुबह उठता, अपनी भुनी हुई मूँगफली का थैला उठाता, जंगल जाता, सारा दिन उनको खाता और शाम को थका हारा सा आ कर पड़ जाता।

जब फसल काटने का समय आया तो गॉव के बाकी के लोगों ने अपनी अपनी मूँगफलियॉ निकाल कर लानी शुरू कर दीं पर कछुआ अपनी कोई मूँगफली ले कर नहीं आया।

आगे के कई दिन तक कछुआ घर में ही आराम करता रहा और गॉव वालों को उनकी फसल घर लाते देखता रहा।

कछुए की पत्नी ने फिर उसको याद दिलाया — "अब समय आ गया है तुम भी अपनी मूँगफली निकाल लाओ न। वह तो अब पूरी बढ़ गयी होंगी। देखो न दूसरे लोग तो अपनी अपनी मूँगफली निकाल कर भी ले आये।"

कछुआ झूठ बोला — "तुम्हें याद है न वे खास मूँगफलियॉ हैं। वे थोड़ी देर में ही निकलेंगी।"

अब तक कछुए की पत्नी को शक होने लगा था कि यह सब कुछ ठीक नहीं हो रहा था। पर उन सब मूँगफलियों का क्या हुआ जो वह कछुआ रोज ले जाता रहा था?

सो यकीन करने के लिये उसने कछुए से कहा कि वह मूँगफलियों को निकालने में उसकी सहायता करेगी। पर कछुए ने उसकी सहायता लेने के लिये उसको साफ मना कर दिया और बोला कि कुछ दिनों में मूँगफलियॉ वह खुद ही निकाल कर ले आयेगा।

यह तो कछुए ने अपनी पत्नी को थोड़ा समय पाने के लिये झूठ बोला था पर इस बीच उसका दिमाग तेजी से दौड़ रहा था कि वह अपनी पत्नी के लिये मूँगफली की फसल कैसे घर ले कर आये।

अब क्योंकि उसके पास अपना खेत कहने के लिये कोई खेत नहीं था इसलिये उसके पास इसके अलावा कोई और रास्ता भी नहीं था कि वह किसी दूसरे के खेत से उन्हें चोरी करे।

सो जब उसकी पत्नी सोने चली गयी वह धीरे से बाहर चला गया। उसने एक ऐसा खेत ढूँढा जो काफी बड़ा हो ताकि वह उस खेत में से उसकी फसल काटने के समय काफी मूँगफली चुरा सके।

और ऐसा खेत तो बस राजा का ही था जिसमें अभी भी बहुत सारी मूँगफलियॉ लगी हुई थीं। बस वह तुरन्त ही अपने काम पर लग गया।

उसने राजा के खेत से जितनी सारी मूँगफली निकाली जा सकती थीं निकालीं और अपने थैले में भर लीं। वह थैला उसने एक सुरक्षित जगह पर छिपा कर रख दिया और घर वापस आ गया।

आ कर उसने अपनी पत्नी को जगाया — "उठो, देखो आज मैं अपनी मूँगफली निकाल कर लाऊँगा। मैं शाम तक घर वापस लौटूँगा तब तक तुम मेरा खाना तैयार रखना। मूँगफली निकालना मेहनत का काम है सो जब मैं वापस आऊँगा तो मैं भूखा और थका हुआ होऊँगा।"

कछुए की पत्नी बोली — "ठीक है। मुझे अपने खेत की मूँगफली चखने का इन्तजार रहेगा।"

कछुए ने एक खाली थैला उठाया, अपना दोपहर का खाना लिया और खेत की तरफ चल दिया। जब वह वहॉ पहुँचा तो वह

एक बड़े से ओक के पेड़[56] के नीचे आराम करने के लिये लेट गया। फिर वह दोपहर को उठा, अपना खाना खाया और पानी पिया और फिर धूप में लेट कर सो गया।

शाम के समय उसने अपनी पिछली रात में चोरी से इकट्ठी की हुई मूँगफलियों का थैला उठाया और घर चल दिया। घर पहुँच कर उसने वह थैला अपनी पत्नी के सामने फेंक दिया।

कछुए की पत्नी तो उस थैले को देख कर बहुत ही खुश हो गयी। उसने तुरन्त ही उस थैले में हाथ डाल कर एक मुट्ठी मूँगफली निकाल लीं। उनमें से उसने एक मूँगफली तोड़ी और उसका दाना अपने मुँह में डाल लिया।

जैसे ही उसने अपने मुँह में वह दाना डाला उसने मुँह बनाते हुए उसे थूक दिया और बोली — "अरे ये तो कच्ची हैं। तुम तो कहते थे कि ये मूँगफली खास हैं और भुनी हुई और नमकीन निकलेंगी।"

कछुआ बोला — "तुम्हारा दिमाग तो खराब नहीं हो गया है। क्या तुमने कभी किसी से यह भी सुना है कि जमीन में से भुनी हुई और नमकीन मूँगफलियाँ निकलती हैं?"

कछुए की पत्नी उससे माफी माँगते हुए बोली — "शायद मैंने ही तुमको गलत सुना होगा।"

कछुआ बोला — "यकीनन तुमने गलत सुना होगा।"

[56] Oak tree – the most popular shade tree

बस उस रात के बाद से कछुआ रोज राजा के खेत पर जाने लगा और थैले भर भर कर मूँगफली चुरा कर लाने लगा। सुबह को वह मूँगफलियों को लेने जाता और शाम को उनको ला कर वह अपनी पत्नी को दे देता।

इस बीच राजा के नौकर ने देखा कि खेत की मूँगफलियाँ जितनी वह निकालता था उससे कहीं ज़्यादा तेज़ी से गायब हो रही हैं। उसने सोचा कि लगता है कि राजा की मूँगफलियाँ कोई चुरा रहा है।

पता करना चाहिये कि वह कौन है नहीं तो राजा यह सोचेगा कि मैं ही उसके खेत में से मूँगफलियाँ चुरा रहा हूँ।

सो नौकर ने कुछ मिट्टी ली और उससे एक आदमी की मूर्ति बनायी और उसको उस जगह खड़ा कर दिया जहाँ से कछुआ वे मूँगफलियाँ चुरा रहा था।

फिर उसने उस पूरी मूर्ति के ऊपर गाढ़ा चिपकने वाला रबर का रस लगा दिया। उसने सोचा — "मुझे यकीन है कि अब मैं सुबह तक उस चोर को जरूर पकड़ लूँगा।"

जब रात हुई तो रोज की तरह कछुआ मूँगफलियाँ चुराने के लिये फिर बाहर निकला।

चाँद आज आधा ही था सो चाँद की रोशनी बहुत कम थी पर इतनी तो थी कि कछुए को खेत की तरफ जाने वाला अपना रास्ता साफ दिखायी दे रहा था।

बस अपनी जगह पहुँच कर कछुआ अपने काम में लग गया। वह मूँगफलियों से अपना दूसरा थैला भरने ही वाला था कि उसको किसी आदमी का साया दिखायी दिया।

कछुआ डर गया और उसके मुँह से निकला — "ओह, यह वह बात नहीं है जो तुम सोच रहे हो। मैं यहाँ मूँगफली चुराने नहीं आया। मैं तो इन मूँगफलियों की केवल जाँच करने आया था कि ये मूँगफलियाँ ठीक से निकालने लायक हो गयीं या नहीं ताकि मैं राजा को बता सकूँ कि मूँगफलियाँ निकालने के लिये तैयार हैं या नहीं।"

फिर वह सीधा खड़ा हो गया और घूम कर उस मूर्ति की तरफ देख कर उससे पूछा — "वैसे तुम यहाँ कर क्या रहे हो?"

पर वह तो मूर्ति थी कुछ बोली नहीं और ऐसे ही चुपचाप खड़ी रही।

कछुआ फिर बोला — "अरे तुम हो कौन? और मैंने पूछा कि तुम यहाँ कर क्या रहे हो?" फिर भी उस रबर के आदमी ने कोई जवाब नहीं दिया।

कछुआ फिर बोला — "क्या तुम्हें मालूम है कि यह राजा का खेत है?" पर वह रबर का आदमी फिर भी चुप ही रहा।

अब तो कछुए को थोड़ा डर भी लगा और गुस्सा भी आया पर फिर भी वह धीरे धीरे उसके पास तक चला गया।

अबकी बार कछुए ने उसको धमकी दी — "देखो, इससे पहले कि मैं तुम्हारे मुँह पर चाँटा मारूँ तुम मेरे सवाल का जवाब दे दो वरना...।"

पर जब रबर के आदमी ने कछुए के किसी भी सवाल का जवाब नहीं दिया तो कछुए ने सोचा कि लातों के भूत बातों से नहीं मानते।

"तुम मेरे सवालों के जवाब क्यों नहीं देते?" कहते हुए उसने अपने दाहिने हाथ से उसके मुँह पर एक थप्पड़ मारा।

रबर का वह आदमी सारा दिन धूप में खड़े खड़े इतना चिपकने वाला हो गया था कि जैसे ही कछुए ने उसको अपना दाँया हाथ मारा तो उसका वह हाथ तुरन्त ही उस मूर्ति के बाँये गाल पर चिपक गया।

कछुआ चिल्लाया — "मुझे जाने दो, मुझे जाने दो। अगर तुम मुझे नहीं जाने दोगे तो मैं तुमको अपने बाँये हाथ से एक और थप्पड़ मारूँगा और वह थप्पड़ मेरा दाँये हाथ वाले थप्पड़ से भी ज़्यादा खतरनाक होगा।"

और यह कहते के साथ ही कछुए ने अपने बाँये हाथ से उसको एक और थप्पड़ मार दिया। उसका वह हाथ भी उस रबर के उस आदमी के गाल पर जा कर चिपक गया।

कछुए ने अपनी डींग हाँकी — "अब मुझे पता चल गया है कि तुमको ये उलटे सुलटे खेल ही पसन्द हैं सो अगर तुमको ऐसे ही

खेल पसन्द हैं तो फिर अब मैं ऐसे ही खेल खेलूँगा क्योंकि अगर तुमको ठीक खेल पसन्द होते तो मैं वैसे ही खेल खेल लेता। मुझे तो दोनों तरीके के खेल खेलने आते हैं।

अगर मैंने तुमको एक बार भी ज़ोर से मार दिया न, तो बस देख लेना तुम्हारी सारी हड्डियाँ टूट जायेंगी।" कह कर उसने अपने दाँये पैर से उसको बहुत ज़ोर से मारा पर उसका वह पैर भी जा कर उससे चिपक गया।

अब वह उससे छूटने की कोशिश करने लगा। इस चक्कर में उसका बाँया पैर और सिर भी चिपक गये। अब कछुआ कहीं नहीं जा सकता था। वह तो सारा का सारा उस मूर्ति से चिपक गया था। वहीं उस मूर्ति से चिपके चिपके उसको सवेरा हो गया।

सुबह सवेरे ही राजा का नौकर यह देखने के लिये आ पहुँचा कि जा कर देखूँ तो सही कि चोर कौन है। जब वह वहाँ आया तो उसने देखा कि एक कछुआ उस मूर्ति से चिपका खड़ा है।

वह बड़े ज़ोर से हँसा — "हा हा हा हा। तो यह तुम थे जो राजा के खेत से मूँगफली चुरा रहे थे। मुझे यह पहले से ही पता चल जाना चाहिये था कि वह तुम्हारे सिवा और कोई हो ही नहीं सकता था।

क्योंकि वह तुम ही हो जो दूसरों की जोती हुई जमीन से चीज़ें लेना पसन्द करते हो नहीं तो राजा के खेत से चोरी करने की किस

की हिम्मत है। अब तुम्हें तुम्हारे आलसीपन की और चोरी करने की दोनों की सजा मिलेगी।"

कछुए को और ज़्यादा नीचा दिखाने के लिये राजा का नौकर उसको उस रबर के आदमी से चिपके चिपके बाजार वाले मैदान से निकाल कर ले कर गया। कछुए को बहुत शर्म आ रही थी और उसने अपना चेहरा अपने खोल में छिपा रखा था।

कई महीनों तक कछुए ने अपना मुँह जनता को नहीं दिखाया। जब भी वह कभी किसी को देखता तो अपना चेहरा अपने खोल में छिपा लेता।

उसी समय से कछुए बहुत शर्मीले होते हैं। जब भी वे लोगों को देखते हैं तभी वे अपना मुँह अपने खोल में छिपा लेते हैं। वे सोचते है कि लोग उन पर हँसेंगे क्योंकि उनके पुरखे कछुए ने राजा के खेत से मूँगफली चुरायी थी।

31 बात करने वाला पेड़[57]

एक बार नाइजीरिया में जानवरों के देश के सारे जानवर लड़ाई पर गये और वहॉ से वे बहुत सारा सामान लूट कर लाये। हाथी सारी फौज का नेता था और वही उन सबको जिता कर भी लाया था।

जब वे वापस आ रहे थे तो वे सब जंगल से आती एक बहुत ही ज़ोर की आवाज से डर गये जो एक बड़े से ओक के पेड़[58] में से आ रही थी।

अगर यह हाथी है तो आये और चिल्लाये मैं उसको कुचल कर मार दूँगा

यह सुन कर हाथी तो डर के मारे कॉपने लगा। वह पीछे हट कर बोला — "मैंने बहुत लड़ाइयॉ लड़ी हैं, मैंने बहुत सारे लड़ाई के गीत सुने हैं पर मैंने इतनी भयानक आवाज कभी नहीं सुनी।"

शेर बोला — "यह इतना ताकतवर जानवर कौन हो सकता है जो हाथी जैसे ताकतवर जानवर को भी धमका रहा है?"

उन्होंने सबने चारों तरफ देखा पर उनको कहीं कोई दिखायी नहीं दिया। वहॉ किसी को न देख कर उनको सबको बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि जब वहॉ कोई था ही नहीं तो फिर वहॉ बोल कौन रहा था।

---

[57] The Talking Tree (Tale No 31) – an Igbo folktale from Nigeria.

[58] Oak Tree – a kind of shady tree

पर तभी उन्होंने देखा कि एक पेड़ की एक शाख उन्हीं की तरफ हिली।

उस हिलती हुई शाख को देख कर ज़िराफ घबरा कर बोला — "अरे देखो देखो यह तो पेड़ है। लगता है यह तो पेड़ बोल रहा है और लगता है कि यह तो हम पर हमला भी करने वाला है।"

हिप्पोपोटेमस[59] बोला — "अरे बेवकूफों, पेड़ भी कहीं बोला करते हैं। इस गीत की आवाज तो इस पेड़ के छेद में से आ रही है।"

शेर बोला — "अगर यह गीत इस पेड़ के छेद में से आ रहा है तो मैं अपने पंजे इस गाने वाले का गला घोटने के लिये इस्तेमाल कर सकता हूँ।" कह कर वह पेड़ के उस छेद की तरफ कूद गया।

पर जैसे ही वह उधर कूदा तो उस गीत और उसके साथ के ढोल की आवाज तो और ज़्यादा तेज़ हो गयी –

अगर यह शेर है तो आये और चिल्लाये, मैं उसको कुचल कर मार दूँगा

यह सुन कर शेर दहाड़ा और अपने पिछले दोनों पैरों पर खड़ा हो कर तुरन्त ही अपनी पूँछ अपनी टाँगों के बीच में दबा कर जो बाकी बचे जानवर खड़े थे उनकी तरफ भाग लिया।

हिप्पोपोटेमस बोला — "अगर हम इस ढोल बजाने वाले को नहीं हरा पाये तो हम जनता में अपना मुँह कैसे दिखायेंगे?"

---

[59] Hippopotamus – a very large animal. See his picture above.

चीता बोला — "पर हम उसे देख तो पा ही नहीं रहे कि वह है कौन। फिर हम उससे लड़ें कैसे?"

बन्दर बोला — "ऐसा लगता है कि हमने जितनी लड़ाइयों में लोगों को मारा है यह हमारे उन्हीं दुश्मनों का भूत है।" कह कर वह भी उस ढोल बजाने वाले को देखने के लिये उस पेड़ की तरफ बढ़ा।

जैसे ही बन्दर ने उस बड़े ओक के पेड़ पर चढ़ना शुरू किया ढोल बजने की आवाज और तेज़ हो गयी। उसके बजने की आवाज अब इतनी तेज़ थी कि ओक का पेड़ और ज़ोर से हिलने लगा। बन्दर की पकड़ छूट गयी और वह डर के मारे नीचे गिर पड़ा। पेड़ से फिर आवाज आयी —

अगर यह बन्दर है तो आये और चिल्लाये, मैं उसको कुचल कर मार दूँगा

सारे जानवरों ने उस घुसपैठिये के साथ अपनी अपनी किस्मत आजमा कर देखी पर कोई उसको देखने में सफल न हो सका। वह किसी को दिखायी ही नहीं दे रहा था।

इस बीच एक टिड्डा[60] उसी ओक के पेड़ के दूसरी तरफ बैठा हुआ बड़ी सावधानी से उस पेड़ की छाल को वहाँ से खुरच रहा था जहाँ से ढोल की आवाज आ रही थी।

[60] Translated for the word "Praying Mantis". See its picture above.

जितना ज़्यादा वह टिड्डा ऊपर चढ़ता जाता था ढोल बजने की आवाज उतनी ही तेज़ होती जाती थी और जितना ढोल बजने की आवाज तेज़ होती जाती थी टिड्डे की ऊपर चढ़ने की चाल उतनी ही धीमी होती जाती थी।

सबको ऐसा लग रहा था जैसे कि दुश्मन को पकड़ने की यह कोशिश कभी खत्म ही नहीं होगी पर फिर भी जानवर अपनी अपनी कोशिश तो कर ही रहे थे पर साथ में वे डर भी रहे थे।

मगर वह टिड्डा हार नहीं माना। बहुत देर तक वह उस पेड़ की चोटी पर पहुँचने की कोशिश करता रहा।

जब वह आधे रास्ते तक पहुँच गया तो घुसपैठिये ने उसको देख लिया। अब उसके ढोल की ताल और उसके लड़ाई के गीत की आवाज और ज़्यादा तेज़ हो गयी।

यह सब वह उन जानवरों को डराने के लिये और टिड्डे को पेड़ से नीचे उतारने के लिये कर रहा था पर टिड्डा नीचे ही नहीं उतर रहा था।

अब घुसपैठिये ने बहुत ही ज़ोर से और बहुत ही डरावने ढंग से ढोल बजाना शुरू किया और अपना लड़ाई का गीत गाया –

अगर यह टिड्डा है तो आये और चिल्लाये, मैं उसको कुचल कर मार दूँगा

यह सुन कर टिड्डे की चाल थोड़ी धीमी हो गयी पर वह वहॉ से गया नहीं। उसने पेड़ पर चढ़ना जारी रखा ताकि वह यह जान सके कि वह कौन है जो जानवरों को डरा रहा है।

आखिर चढ़ते चढ़ते वह पेड़ की चोटी पर उस छेद के पास पहुॅच गया जहॉ से वह गाने और ढोल बजाने की आवाज आ रही थी। उसने उस छेद में झॉका तो उसने देखा कि वहॉ तो कछुआ अपने गले में ढोल लटकाये खड़ा था।

टिड्डा वहीं से चिल्लाया — "अरे यह तो अपना कछुआ है। अरे यह तो अपना कछुआ है।"

हॉ वहॉ इस समय और कौन हो सकता था सिवाय कछुए के? कछुआ अपनी चालाकी और लालच से जानवरों की लड़ाई की सारी लूट खुद ही हड़प जाना चाहता था।

इसी लिये वह इन जानवरों के आने से पहले ही जानवरों की सेना में से गायब हो कर इस पेड़ की चोटी पर बने इस छेद में घुस कर बैठ गया था।

उसने सोचा कि वह गीत गा कर और ढोल बजा कर सब जानवरों को डरा लेगा ताकि वे डर कर अपनी लूट यहॉ छोड़ कर भाग जायें और फिर वह उनकी सारी लूट खुद ही ले लेगा।

कछुए का नाम सुनते ही पलक झपकते ही बन्दर उस ओक के पेड़ पर चढ़ गया और उसने कछुए को उसके छेद में से बाहर

निकाल लिया। जानवरों ने कछुए को उसकी इस धोखाधड़ी की सजा देने का निश्चय किया।

हाथी ने पूछा — "हमको इसे क्या सजा देनी चाहिये।"

बन्दर चिल्लाया — "मार दो इसको, मार दो इसको।"

एक और जानवर बोला — "हॉ हॉ। इसको चट्टान पर पटक कर उसी तरह मसल दो जैसे हम और धोखा देने वालों को मसलते हैं।"

सब जानवर इस बात पर राजी हो गये कि कछुए को चट्टान पर पटक कर मसल दिया जाये।

कछुआ हाथी से बोला — "जहॉपनाह, मुझे मालूम है कि मैंने अपने लोगों के साथ पाप किया है और उस पाप की जो भी सजा आप मुझे देंगे मैं उसी सजा के लायक हूॅ।

पर फिर भी मैं आपको यह याद दिला दूॅ कि मैं एक बार आसमान से पत्थरों के ढेर पर गिर कर बच चुका हूॅ इसलिये मुझे यकीन है कि मैं इस चट्टान पर मसले जाने के बाद भी ज़िन्दा रहूॅगा।"[61]

शेर बोला — "यह बात तो कछुआ ठीक कह रहा है।"

[61] Read this story "Har Ek" in the book "Africa Se Kachhua Aaya-1". by Sushma Gupta written in Hindi language.

कछुआ फिर बोला — "मैं यह खुद मानता हूँ कि मैंने अपने लोगों को धोखा दिया है और मैं उनको मुँह दिखाने के लायक नहीं हूँ इसलिये मैं अपने लोगों के साथ रहने के लायक भी नहीं हूँ।

तो फिर आप लोग मुझे मरने के लिये किसी ऐसी जगह देश निकाला क्यों नहीं दे देते जहाँ कोई नहीं रहता हो।"

गोरिल्ला बोला — "नहीं नहीं यह सजा नहीं। यह तो बहुत आसान सजा है। यह सजा तुम्हारे लिये नहीं है। इसके अलावा हम को यह कैसे विश्वास हो कि तुम बाद में हम लोगों के साथ चालाकी खेलने के लिये वापस नहीं आ जाओगे?"

कछुआ ने फिर सलाह दी — "मैं अपने ऊपर इतना शर्मिन्दा हूँ कि मैं अपनी इस शर्मिन्दगी से बहुत जल्दी छुटकारा पाना चाहता हूँ। मुझे ज़िन्दा रहने का वाकई कोई हक नहीं है।

और अगर आपको इसका यह सबूत चाहिये कि मैं आपको फिर से तंग नहीं करूँगा और मैं अपने लालच के लिये मर जाना चाहता हूँ तो फिर आप लोग मुझे नदी के किनारे कीचड़ वाले पानी में मसल दें।"

हिप्पोपोटेमस बोला — "नहीं नहीं, वहाँ भी नहीं। वहाँ से तो यह बदमाश बच कर भाग जायेगा।"

कछुआ बोला — "ठीक है। जैसे आप सबकी मर्जी। पर जैसे ही मैं उस कीचड़ से टकराऊँगा तो सारी कीचड़ मेरी आँखों और नाक को ढक लेगी और मुझे दम घोट कर मार देगी।"

थोड़ी देर की बहस के बाद जानवरों ने कछुए को कीचड़ वाले पानी में ही डुबोने का निश्चय किया। पर यह पक्का करने के लिये वह कीचड़ में ज़ोर से गिरा या नहीं यह देखने के लिये हाथी को चुना गया।

बाकी जानवर पीछे की तरफ यह देखने के लिये खड़े हो गये कि हाथी कछुए को नीचे कैसे फेंकता है। हाथी ने अपनी बड़ी सूँड़ से कछुए को उसकी गर्दन से पकड़ा, उसको कई बार हवा में घुमाया और जोर लगा कर उसको कीचड़ वाले पानी में फेंक दिया।

"धम्म।" की आवाज से कछुआ उस कीचड़ में गिर पड़ा।

तुरन्त ही जानवर इस उम्मीद में उस कीचड़ वाले पानी की तरफ दौड़े कि वे उसको उसका दम घुटते हुए मरता देखें पर वह तो वहाँ कहीं था ही नहीं।

कछुआ तो चुपचाप से कीचड़ में से होता हुआ समुद्र में खिसक गया था जहाँ वह आराम से तैर रहा था। उसने जानवरों को एक बार फिर से बेवकूफ बना दिया था।

हाथी ने अपनी लम्बी सूँड़ उस कीचड़ में डाल कर बहुत इधर उधर घुमा कर देखा तो कछुआ तो उसे कहीं मिला नहीं उल्टे उसकी तो सूँड़ ही कीचड़ में फँस गयी। उसने कछुए को वहाँ बहुत ढूँढा पर वह उसको कहीं नहीं मिला।

हाथी ने कीचड़ में से अपनी सूँड़ निकालने की कोशिश की तो उसकी सूँड़ में बहुत सारी कीचड़ तो लिपट ही गयी थी पर साथ में एक केंकड़ा भी उसकी सूँड़ में चिपक गया था।

वह केंकड़ा उसको गुदगुदी कर रहा था। वह उन दोनों को अपनी सूँड़ से झाड़ता हुआ हँसता हुआ वहाँ से चला गया।

जैसे ही केंकड़ा हाथी की सूँड़ से नीचे गिरा वह बोला — "यह तुमको सिखायेगा कि अगर कोई अपने घर में शान्ति से सो रहा हो तो उसको तंग नहीं करना चाहिये।"

जब जानवरों को वहाँ सब जगह ढूँढने के बाद भी कछुआ नहीं मिला तो उन्होंने उसको और ढूँढने की कोशिश छोड़ दी और अपने अपने घर चले गये।

बाद में काफी सारे जानवरों ने उस दिन को भूलने की बहुत कोशिश की और शायद वे उसे भूल भी गये हों पर टिड्डा वह दिन नहीं भूल सका।

आज भी टिड्डा बहुत धीरे और हिलते हुए चलता है क्योंकि आवाज की वे लहरें जो उसने उस दिन ओक के पेड़ पर चढ़ने में समेट ली थीं अभी भी उसके साथ हैं और उसके शरीर को हिलाती रहती हैं। वह हमेशा अपने हाथ भी घुसपैठिये से लड़ने के लिये तैयार रखता है।

उस दिन के बाद से वह कछुआ बहुत सारे ईबो[62] लोगों में ओचे ओगु[63] यानी "वह जो हमेशा लड़ने के लिये तैयार हो" के नाम से मशहूर हो गया।

[62] Ibo or Igbo – one of the three main tribes of Nigeria – Yoruba, Hausa, and Ibo
[63] Oche Ogu

32 कछुआ और सूअर[64]

यह बहुत पहले की बात है कि एक कछुआ और एक सूअर बहुत ही गहरे दोस्त हुआ करते थे। वे बहुत सारे काम एक साथ करते थे जैसे खेत की जमीन जोतने का काम।

एक दिन वहॉ के राजा ने उन दोनों को अपने खेत की जमीन जोतने का काम सौंपा और उसका उनको बहुत अच्छे पैसे देने का वायदा भी किया।

जिस दिन उन लोगों को काम शुरू करना था उस दिन सूअर राजा के महल में आया और आ कर राजा की पत्नी को नमस्कार किया — "गुड मार्निंग रानी जी।"

रानी बोली — "गुड मार्निंग।"

उसी समय कछुआ भी राजा के महल में आ पहुॅचा। कछुआ बोला — "हम लोग राजा की जमीन जोतने के लिये आये हैं। कोई हमको वह खेत दिखा दे जो हमको जोतना है। हमारी मजदूरी रोज के **10** चॉदी के सिक्के खाने के साथ है या फिर **12** चॉदी के सिक्के बिना खाने के।"

---

[64] The Tortoise and the Pig (Tale No 32) – an Igbo folktale from Nigeria, Africa.
Taken from the Book : "The Orphan Girl and the Other Stories.", by Offodile Buchi. 2001. Available in HIndi translated by Sushma Gupta.

राजा की पत्नी ने एक नौकर को उनके साथ उनको खेत दिखाने के लिये भेज दिया। जब राजा का नौकर उनको खेत दिखा रहा था तो कछुए को लगा कि वह इस खेत जोतने के काम में घुसा ही क्यों। वह खेत तो बहुत बड़ा था।

जितना ज़्यादा वह उस खेत को देखता रहा उतना ही ज़्यादा उसको उस खेत जोतने में आलस आता रहा।

उसने सोचा — "उफ़, यह तो बहुत ही बड़ा खेत है। क्या ऐसा कोई तरीका नहीं है जिससे कोई इसका छोटा सा हिस्सा भी जल्दी से जोता जा सके, सारे खेत की तो बात ही छोड़ो।"

दूसरी तरफ सूअर बहुत ही मेहनती था। उसने ज़रा सा भी समय बर्बाद नहीं किया और वह उसी समय अपने काम पर लग गया।

उसने कछुए से कहा — "अगर हमको समय से काम खत्म करना है और अपनी मजदूरी लेनी है तो हमको अपना काम जल्दी ही शुरू कर देना चाहिये।"

पर अपने हिस्से का काम करने की बजाय कछुआ तो एक ऐसी स्कीम सोचने में लगा हुआ था जिससे वह कम से कम काम कर सके।

जब सूअर उस खेत पर काम करता होता तो कछुआ किसी न किसी बहाने से माफी माँग कर वहाँ से चला जाता। खेत के पास ही

एक बड़ा सा ओक का पेड़[65] था वह वहीं चला जाता और उसी पेड़ के नीचे पड़ा पड़ा धूप सेकता रहता।

जब वह वापस आता और सूअर उससे पूछता कि वह कहाँ था तो वह झूठ बोल देता कि वह तो जंगल गया[66] था।

सूअर कहता — "मैं देख रहा हूँ कि तुम मेरे साथ काम नहीं कर रहे हो। हमको यह काम जल्दी ही खत्म करना है।"

कछुआ कहता — "तुमको जितना काम करना है तुम अपना काम जल्दी खत्म कर लो। खास बात यह नहीं है कि तुम अपना काम कितनी जल्दी शुरू करते हो खास बात यह है कि तुम अपना काम कितनी जल्दी खत्म करते हो।

यह तो मैरैथौन[67] है कोई दौड़ नहीं। इसमें तो धीमे और आराम से चलने वाला ही जीतता है।"

यह सब कुछ दिन तक चलता रहा पर धीरे धीरे सूअर यह जान गया कि यह कछुआ किसी काम का नहीं था। सूअर को यह भी पता चल गया कि कछुआ यह सोच रहा है कि सूअर खुद ही इस काम को खत्म करे।

एक दिन सूअर कछुए से बोला — "मुझे लगता है एक दिन मुझे भी जंगल जाना चाहिये। मैं भी कोई लकड़ी का बना हुआ थोड़े

---

[65] Oak tree – a shady kind of tree

[66] To ease out by evacuating himself

[67] The marathon is a long-distance running event with an official distance of a little over 26 miles, that is usually run as a road race.

ही हूँ।" सो एक दिन वह एक मैदान में चला गया और वहाँ जा कर एक पेड़ की छाया में लेट गया और वहाँ खूब आराम किया।

फिर उसने सोचा "अब आराम काफी हो गया अब जल्दी करनी चाहिये क्योंकि अभी तो काफी काम करना बाकी है।"

जब सूअर आराम कर रहा था तो कछुए ने राजा की पत्नी और उसके नौकरों के खेत पर आने की आवाज सुनी। तुरन्त ही उनको प्रभावित करने के लिये वह जितनी मेहनत से काम कर सकता था उतनी मेहनत से उसने उस खेत पर काम करना शुरू कर दिया।

जब राजा की पत्नी वहाँ आयी तो उसने देखा कि वहाँ तो कछुआ बड़ी मेहनत से काम कर रहा था। वह काफी देर तक खड़ी खड़ी उसको देखती रही कि वह कितनी मेहनत से काम कर रहा था। उसको वह सब देखने में बहुत अच्छा लगा।

कछुए को पता था कि राजा की पत्नी उसको देख रही है सो वह भी थोड़ी थोड़ी देर बाद उसको अपनी थकान दिखाने के लिये अपना पसीना पोंछता रहा।

राजा की पत्नी पूछा — "तुम्हारा साथी कहाँ है?"

"काश मुझे पता होता कि वह कहाँ है। या तो वह जंगल गया होगा और या फिर कहीं आराम कर रहा होगा। मैं तो यहाँ अकेला ही काम कर कर के मर रहा हूँ।

यह पता लगाना तो बहुत ही आसान है कि वह कितना आलसी है। वह तो बस खाने के लिये तैयार रहता है। अगर आप यहाँ

खाना खोल कर रखेंगी तो मुझे यकीन है कि उस खाने की खुशबू से वह यहाँ तुरन्त ही आ जायेगा।"

यह सब सुन कर राजा की पत्नी सूअर पर बहुत गुस्सा हो गयी और जो खाना वह उन दोनों के लिये अपने साथ ले कर आयी थी उसको उसने तीन हिस्सों में बाँट दिया। उसमें से दो हिस्से तो उसने कछुए को दे दिये और बचा हुआ तीसरा हिस्सा सूअर के लिये छोड़ दिया।

फिर उसने कछुए को समझाया — "अगर वह सूअर अपने हिस्से का काम करना सीख जायेगा तो मैं उसको खाने का पूरा हिस्सा दे दूँगी।" इतना कह कर उसने कछुए को उसकी मेहनत के लिये धन्यवाद दिया और चली गयी।

उसके जाते ही कछुए ने तुरन्त ही अपने हिस्से का खाना खत्म कर लिया और बैठ कर सूअर का इन्तजार करने लगा।

जब सूअर वापस आया तो कछुआ राजा की पत्नी का लाया हुआ वह तीसरे हिस्से वाला खाना ले कर आया और सूअर से बोला — "आओ खाना खा लें।"

"खा लें? क्या खा लें?"

कछुआ बोला — "तुमने तो मेरे मुँह के शब्द ही छीन लिये। क्या तुम विश्वास कर सकते हो कि आज रानी हमारे लिये खुद ही खाना ले कर आयी थी?

वैसे यह तो तुम अपनी ऑखों से ही देख रहे हो कि यह जो खाना राजा की पत्नी हम दो ताकतवर आदमियों के लिये दे गयी है यह तो मेरे बच्चे के लिये भी काफी नहीं है।"

सूअर यह देख कर बहुत गुस्सा हुआ और बजाय इसके कि वह थोड़ा सा खाना खा कर अपने पेट की भूख को और उकसाता उसने खाना न खाने का निश्चय किया।

कछुए ने उससे नम्रता से कहा — "आओ साथी आओ, खाना खा लो। हम लोग इसी खाने से काम चला लेंगे। बिल्कुल ही कुछ न खाने से तो कुछ खाना अच्छा है।

इसके अलावा वह राजा की पत्नी भी बहुत नाउम्मीद होगी जब वह यह सुनेगी कि हम लोगों ने उसका लाया हुआ खाना नहीं खाया। और क्या पता वह हमारा केवल इम्तिहान ही ले रही हो। तुम उसको परेशान करना नहीं चाहते न?"

"यकीनन मैं उसको परेशान करना नहीं चाहता पर यह तो उसकी बड़ी बेरहमी की बात है कि वह हम दोनों के लिये इतना कम खाना दे कर गयी है।

अगर हमको यह पहले से पता होता कि वह खाना देने में इतनी कंजूस है तो हमने उससे तभी **12** चॉदी के सिक्के मॉग लिये होते और अपना खाना अपने आप ले आते।"

सो दोनों ने मिल कर सूअर के लिये रखा हुआ खाना खाया और फिर अपने काम पर लग गये। सूअर भूखा होने की वजह से

और साथ में तेज़ धूप की वजह से बहुत थका थका महसूस कर रहा था। दूसरी तरफ कछुआ बहुत ही ताजादम दिखायी दे रहा था।

कछुआ बोला — "मैंने तुमसे कहा था न कि खास बात यह नहीं है कि तुम अपना काम कितनी जल्दी शुरू करते हो, बल्कि खास बात यह है कि तुम अपना काम कितनी जल्दी खत्म करते हो।

जब बिजली गिरती है तभी पता चलता है कि झाड़ियों के पीछे क्या है। कड़ी धूप में ही धीरे चलने का मजा है सुबह सवेरे में नहीं। उस समय तो कोई भी मेहनत कर सकता है।"

शाम को दोनों दोस्त अपने पैसे लेने राजा के महल को चल दिये।

कछुआ बोला — "राजा साहब, आपका काम हो गया है और जैसा कि तय हुआ था हमारी फीस 10 चॉदी के सिक्के है। क्योंकि मैं इस काम में बड़ा भागीदार हूॅ इसलिये आप वह पैसे मुझे दे दें।"

फिर सूअर की तरफ घूमते हुए उसने सूअर से पूछा — "मैं ठीक कह रहा हूॅ न?"

"हॉ ठीक है।"

राजा ने कछुए को पैसे दे दिये और वे दोनों राजा से पैसे ले कर अपने घर चल दिये।

घर जाते समय कछुए ने अपने लालची तरीके से एक प्लान बनाया जिससे कि सारा का सारा पैसा वह खुद रख सके।

वह सूअर से बोला — "अभी तो यह पैसा हम आपस में बॉट लेते हैं। शुरू में ये दो सिक्के मैं रखता हूँ – एक तो पैसा लेने के लिये और दूसरा उसको रखने के लिये। बाकी बचा पैसा हम बराबर बराबर बॉट लेते हैं।"

सूअर को पहले तो अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ कि कछुआ कह क्या रहा था पर फिर उसने उस बॅटवारे को मान लिया क्योंकि वह जानता था कि अगर उसने कछुए से बहस की तो वह तो सारा ही पैसा रख लेगा।

कछुए ने सूअर से पूछा — "क्या तुम मेरे सच्चे दोस्त हो?"

सूअर ने जवाब दिया — "यह भी कोई पूछने की बात है। तुम तो जानते ही हो कि मैं तुम्हारा सच्चा दोस्त हूँ।"

"तब तुमको मेरे साथ बाजार जाने में तो कोई ऐतराज नहीं होगा। मुझे अपनी पत्नी के लिये एक भेंट खरीदनी है।"

"ओह बिल्कुल नहीं।" कह कर सूअर कछुए के पीछे पीछे बाजार चल दिया।

बाजार जा कर कछुए ने अपनी पत्नी के लिये एक बहुत ही सुन्दर पोशाक खरीदी जिसे उसने उसकी कीमत नीची करा कर **10** चॉदी के सिक्के की खरीदी।

अब उसके पास तो उस पोशाक को खरीदने के लिये पूरे पैसे थे नहीं सो उसने सूअर से पैसे उधार मॉगे। सूअर ने उसको पैसे दे दिये और कछुए ने वह पोशाक खरीद ली।

फिर वह सूअर से बोला — "इस समय तुम्हारा मेरे घर चलना ठीक नहीं है क्योंकि कल ही मेरी अपनी पत्नी से लड़ाई हो कर चुकी है और इसी लिये मैंने उसको खुश करने के लिये उसके लिये यह पोशाक खरीदी है सो तुम कल सुबह आना।

तब तक हम लोगों में सुलह भी हो गयी होगी और मैं तुमको तुम्हारा पैसा भी दे दूँगा।" सूअर बेचारा कछुए की बात मान गया और अपने घर चला गया।

अगले दिन सुबह वह कछुए के घर अपना पैसा लेने गया तो कछुआ तो अपने घर में था नहीं सो उसने कछुए की पत्नी से कहा कि वह अपना पैसा लेने के लिये अगले दिन आयेगा। पर अगले दिन भी कछुए ने उसको झॉसा मार दिया। वह घर पर नहीं था।

इस पर सूअर बहुत गुस्सा हो गया और उसने सोच लिया कि वह अगले दिन उससे अपना पैसा वापस जरूर ले लेगा चाहे कुछ भी हो जाये।

जब कछुआ वापस आया तो उसकी पत्नी ने उसको सूअर का सन्देश दिया। अगले दिन पहली बात उसने अपनी पत्नी से यह कही कि वह उसको कीचड़ में लपेट दे। उसकी पत्नी को आश्चर्य तो हुआ पर उसने वैसा ही किया जैसा कि उसके पति ने उससे करने के लिये कहा।

उसके बाद उसने कहा — "अब तुम सिल बट्टा[68] ले कर उस पर कुछ पीसना शुरू कर दो। जब सूअर यहाँ आये तो उससे बोलना कि मैं बहुत बीमार हूँ और बिस्तर में पड़ा हूँ और तुम मेरे लिये कोई दवा पीस रही हो।"

अगले दिन जब सूरज ऊपर चढ़ आया तो सूअर गुस्से से उफनते हुए कछुए के घर आया और कछुए की पत्नी से पूछा — "तुम्हारा वह आलसी पति कहाँ है? उससे कहो कि मैं अपना पैसा वापस लेने के लिये आया हूँ और मुझे वह अभी अभी चाहिये।"

कछुए की पत्नी बोली — "मुझे बहुत अफसोस है कि मेरे पति बहुत बीमार हैं और बिस्तर में पड़े हैं। मैं उन्हीं के लिये यह दवा पीस रही हूँ।"

सूअर बोला — "क्या तुम अपना यह पीसना बन्द कर के उसको बाहर निकाल कर लाओगी या फिर मैं...?"

कछुए की पत्नी ने यह न सुनने का बहाना किया और जो कुछ वह पीस रही थी वह वह पीसती रही। अब सूअर बहुत गुस्सा हो गया तो गुस्से में आ कर उसने उसका बट्टा उठाया और घर के बाहर की चहारदीवारी के बाहर फेंक दिया।

---

[68] Two pieces of stones for grinding. See its picture above.

यह सब सुन कर कछुआ उठा, उसने अपने शरीर पर लगी कीचड़ साफ की और एक डंडी उठा कर अपने घर के पिछले दरवाजे से अपने घर में लौटा।

फिर वह उस डंडी का सहारा लेते हुए और लॅगड़ाते हुए सूअर से मिलने आया। इस तरह से सूअर के सामने आ कर वह उसको यह दिखाना चाहता था कि वह वाकई बीमार था और उसे बहुत दर्द हो रहा था।

इस बीच सूअर अभी भी कछुए की पत्नी को डॉट रहा था कि वह अन्दर से अपने पति को ले कर आये।

कछुए ने बाहर आ कर पूछा — "क्या बात है सूअर भाई? क्या वह तुम्हारा पैसा देगी जो तुम उससे बहस कर रहे हो? तुम उसको छोड़ दो वह मेरे लिये दवा पीस रही है। और तुम्हारा पैसा तो मुझे देना है सो मैं तुमको तुम्हारा पैसा देता हूॅ।"

फिर वह अपनी पत्नी की तरफ घूम कर बोला — "तुम मेरी दवा पीसो मैं इसका पैसा ला कर देता हूॅ। और हॉ वह बट्टा कहॉ है?"

उसकी पत्नी बोली कि वह तो सूअर ने गुस्से में आ कर बाहर फेंक दिया।

उसने सूअर से कहा — "कोई बात नहीं। तुम जा कर वह बट्टा उठा लाओ ताकि मैं तुमको पैसे दे सकूॅ। उस बट्टे के अन्दर ही मेरा

पैसा रखा है और इसके अलावा वह मेरी पत्नी को मेरी दवा पीसने के लिये भी चाहिये।"

सूअर उसका बट्टा लेने के लिये उसके मकान के पीछे की तरफ भागा पर उसको वह वहॉ मिला ही नहीं।

अब गुस्सा होने की बारी थी कछुए की। वह बोला — "ओह नहीं। न तुम ने केवल मेरा पैसा खो दिया बल्कि तुमने तो मुझे ठीक होने से भी रोक लिया।

मैं तो तुमको तुम्हारा पैसा देना चाहता था पर उसके लिये मुझे पहले ज़िन्दा तो रहना चाहिये न। अब तुम पहिले मेरा बट्टा ढूँढ कर लाओ तभी मैं तुम्हारा पैसा दे सकूँगा।"

सूअर फिर उसके घर के पीछे गया पर उसको वह बट्टा कहीं नहीं मिला। उसने वहॉ के सारे पत्थर खोद लिये पर उसको वह बट्टा कहीं नहीं मिला। वह तो बस वहॉ बट्टा ढूँढता ही रहा ढूँढता ही रहा।

वह तो आज भी उस बट्टे को ढूँढ ही रहा है। इसी लिये आज भी सूअर अपने मुँह से चारों तरफ खोदता ही रहता है शायद कहीं उसको कछुए का वह बट्टा मिल जाये तो उसको अपने पैसे वापस तो मिल जायें।

33 रस्सा कसी[69]

जानवरों के राज्य में कछुए को कोई इज़्ज़त नहीं देता था क्योंकि वह सब जानवरों में सबसे धीरे चलता था। इस वजह से वह सारे जानवरों के राज्य में एक हॅसी की चीज़ बन कर रह गया था।

वह बाकी के उन सब जानवरों से भी जलता था जो अपने गुणों के लिये मशहूर थे।

कछुए ने शब्द मिलाने का खेल खेलते हुए अपने मन में कहा — "तेज़, चाल – चीता, उड़ान – चिड़ियॉ, ताकत – शेर, साइज़ – हाथी, और धीमी चाल – कछुआ।

नहीं नहीं नहीं। मुझे इस सबको खत्म करना ही पड़ेगा। मुझे भी किसी न किसी चीज़ में मशहूर तो होना ही पड़ेगा। किसी ऐसी चीज़ में जिसमें मेरी शान बढ़े।"

सोचते सोचते उसके दिमाग में एक तरकीब आयी। उसको जो इज़्ज़त मिलनी चाहिये थी उस इज़्ज़त को पाने के लिये कछुए ने सब जानवरों को रस्सा कसी[70] के खेल में चुनौती दी। सबसे छोटे से ले कर सबसे बड़े तक।

---

[69] The Tug-of-War (Tale No 33) – a folktale from Calabar, Nigeria, West Africa.

[70] Tug-of-war is a game. in this game two parties pull a rope to their own side. Whoever pulls the whole rope to one's side wins the game.

जब कुछ जानवरों ने इस चुनौती को सुना तो वे बहुत हँसे। उन्होंने आपस में पूछा — "यह कछुआ रस्सा कसी में किसी भी जानवर को कैसे हरा सकता है?"

खरगोश ने पूछा — "क्या तुम शेर को भी हरा सकते हो?"

कछुआ बोला — "हाँ हाँ शेर को भी और हाथी को भी।"

खरगोश बोला — "और हिप्पोपोटेमस[71] और जिराफ को भी?"

कछुए ने खरगोश को बीच में काटा — "हाँ हाँ हिप्पोटेमस और जिराफ को भी। तुमने ठीक सुना। मैं सारे जानवरों को हरा सकता हूँ और सबसे पहले मैं तुम्हीं से शुरू करता हूँ।"

खरगोश ने तुरन्त ही उससे उस मुकाबले के लिये माफी माँगी और बोला — "तुम मेरी चिन्ता न करना। तुम्हें अगर चिन्ता करनी है तो तुम शेर की चिन्ता करो, हाथी की चिन्ता करो, हिप्पो की चिन्ता करो।"

कछुए ने उतावलेपन से कहा — "ठीक है, जाओ और उन सबको ले कर आओ।" खरगोश सब जानवरों को कछुए की चुनौती बताने के लिये दौड़ गया।

जब वह शेर की माँद में पहुँचा तो वह इतना ज़्यादा उत्तेजित था कि वह तो उसकी माँद के अन्दर ही घुस जाता पर समय रहते

[71] Hippopotamus – see its picture above.

ही उसको ध्यान आगया कि वह तो शेर की मॉद है सो वह उसकी मॉद से कई गज पहले ही रुक गया और चिल्ला कर बोला — "शेर जी शेर जी। क्या आपने कछुए की चुनौती सुनी है?"

शेर बोला — "उसको तो मैं हमेशा ही सुनता रहता हूँ। वह जो कुछ भी करता या कहता है अब उससे मुझे कोई ज़्यादा आश्चर्य नहीं होता।"

खरगोश अपनी पूँछ हिलाता हुआ और अपनी मूँछों से अपनी ठोढ़ी बार बार छूता हुआ बोला — "पर यह वाली बात आपको जरूर ही आश्चर्य में डालेगी।"

वह उस बात को शेर को बताने के लिये मक्खी की तरह से बहुत ही उतावला हो रहा था — "वह आपको रस्सा कसी के लिये ललकार रहा है।"

इतना कह कर खरगोश तो वहॉ से हॅसता हुआ भाग गया और शेर गुस्से से दहाड़ता हुआ अपनी मॉद से बाहर आ गया।

शेर को यह खबर सुना कर खरगोश हिरन के पास गया, और फिर दूसरे जानवरों के पास गया, और आखीर में हाथी और हिप्पो के पास गया।

इस चुनौती के बारे में सुन कर सारे जानवर कछुए की चुनौती का जवाब देने के लिये खेल के मैदान में इकट्ठा हुए।

हिरन ने कछुए से कहा — "इससे पहले मुझे लगा था कि शायद मैं गलत समझा हूँ। पर क्या तुम वाकई हम सबको रस्सा कसी के लिये चुनौती दे रहे हो?"

कछुआ बोला — "हाँ तुमने ठीक सुना है। मैं बिल्कुल यही बोल रहा हूँ।"

शेर उठा और वहाँ से यह कहते हुए जाने लगा कि उसने इस चुनौती के ऊपर दोबारा सोचा है और उसका जवाब देना उसकी शान के खिलाफ है।

कछुआ बोला — "मुझे मालूम है कि तुम ऐसा ही सोचोगे। पर मुझे मालूम है कि तुम्हारे अहम को खत्म करना कितना आसान है।

तुम केवल इन बेबस हिरनों को और खरगोशों के साथ ही लड़ते रहते हो। और यह सोचते हुए कि तुम बहुत ताकतवर हो उनके पीछे से झाँकते हो और उनको मारते हो। न्याय वाली लड़ाई के लिये आओ तब देखें कि तुम कितने ताकतवर हो।"

शेर को लगा कि कछुए ने उसकी शान की सीमा के अन्दर कदम रख दिया है। वह उसके ऊपर उछला और उसे गरदन से दबोच लिया।

तभी कछुए ने अपना हाथ हिलाया "टा टा, टा टा। न्याय वाली लड़ाई, याद रखना। इसका मतलब है कि उस लड़ाई के भी कुछ नियम होंगे। वह लड़ाई ऐसे ही बिना नियमों के नहीं होगी कि

किसी की भी गर्दन कभी भी पकड़ ली। अच्छा, अब तुम मुझे नीचे उतारो।"

शेर ने चुपचाप उसको नीचे उतार दिया। कछुआ आगे बोला — "मुझे मालूम है कि तुमको अपने ऊपर बहुत भरोसा है कि तुम किसी भी जानवर को पकड़ सकते हो। हालॉकि तुम और हाथी और हिप्पो आपस में कभी भी नहीं लड़े पर इस बार तुम तीनों में भी लाटरी निकाली जायेगी।"

शेर बोला — "पहली बार तुम ठीक बोल रहे हो। पर अब तुम काम की बात करो मेरा धीरज छूट रहा है।"

कछुआ बोला — "यह है मेरी चुनौती। मैं हाथी और हिप्पोपोटेमस को लूँगा, क्योंकि वे सबसे बड़े हैं। और मुझे विश्वास है कि वे सबसे ज़्यादा ताकतवर भी हैं।

अगर मैं उनको हरा दूँगा और जैसा कि मुझे विश्वास है कि मैं हरा दूँगा, तो मैं तुम्हारे बराबर ताकतवर हूँ। फिर हम दोनों ही इस राज्य पर एक साथ राज करेंगे।"

शेर तैयार हो गया। सो नियमों के अनुसार कछुए ने सारे जानवरों को तो दूर भेज दिया और वह, हाथी और हिप्पोपोटेमस अकेले में नियम बनाने में लग गये।

हाथी गुस्से से पैर पटकता हुआ वापस अपने घर चला गया। और हिप्पोपोटेमस भी। इस बीच कछुआ भी अपने घर चला गया और घर जा कर उसने कुछ बेलों का एक मोटा सा रस्सा बटा।

एक दिन हाथी नदी के किनारे उस जगह घास चर रहा था जहाँ हिप्पोपोटेमस रहता था। सो वे दोनों नदी के रेतीले मैदान में टकरा गये।

दोनों में से किसी को पता नहीं था कि कछुआ उनको झाड़ियों के पीछे से देख रहा है सो दोनों जानवर यूँ ही कछुए की चुनौती के बारे में बात करने लगे।

हाथी ने हिप्पो से पूछा — "क्या तुमने कछुए के मुकाबले के बारे में फिर कुछ सुना?"

हिप्पो बोला — "नहीं, अभी तक तो कुछ नहीं। मुझे लगता है कि अब कुछ सुनेंगे भी नहीं। वह तो मुझे मेरी आँख के ऊपर एक मक्खी जैसा लगता है। पर बिना अपनी आँख को तकलीफ दिये मैं उसे कैसे मारूँ?"

हाथी हाँ में हाँ मिलाते हुए बोला — "यह तो तुम ठीक कहते हो। मुझे तो लगता है कि जब तक मैं उससे दोबारा कुछ न सुनूँ यह मामला यहीं खत्म हो गया है। जब उसने हम सबको यह चुनौती दी थी लगता है कि वह पिये हुए होगा।"

इतना कह कर हाथी अपने काम पर चला गया और हिप्पो वहीं रेत में लोटता रहा। कुछ देर बाद वह उठने ही वाला था कि उसने अपने पीछे एक आवाज सुनी।

उसके पीछे कछुआ खड़ा था। कछुआ उससे बोला — "हाथी मुझसे कह रहा था कि तुम मेरी चुनौती को गम्भीरता से नहीं ले रहे

हो। तुमको उसे गम्भीरता से लेना चाहिये क्योंकि वह रस्सा कसी का मुकाबला हम अभी करने वाले हैं।"

हिप्पो बोला — "कभी भी करो, जब तुम चाहो। मैं तो तुमको कभी भी हरा सकता हूँ, सोते में भी। और जिसको मैं यकीनन हरा सकता हूँ उसके लिये मुझे किसी देवता की ताकत लेने के लिये प्रार्थना करने की जरूरत नहीं है।"

और हिप्पो उठ कर खड़ा हो गया। उसने छींक कर अपनी नाक साफ की तो कछुए को लगा कोई तूफान आ गया। वह पीछे वाली झाड़ियों में जा पड़ा।

जब वह सँभला तो उठ कर फिर हिप्पो के सामने आया और उसको ध्यान से देखा तो उसके शरीर में तो मॉस ही मॉस था।

कछुआ बोला — "तुम ठीक कहते हो। तुम तो सोते में भी मुझे हरा सकते हो।"

हिप्पो को लगा कि अब यह मजाक कुछ ज़रा ज़्यादा हो गया सो वह अपने इस बिन बुलाये मेहमान से गुस्सा हो गया।

पर दूसरे जानवर कहीं यह न सोच लें कि वह उस मुकाबले से मुँह छिपा कर भाग गया उसने एक अँगड़ाई ली और कछुए से अपने चारों तरफ एक रस्सी बाँधने के लिये कहा।

जब कछुआ उसके चारों तरफ रस्सी बाँध चुका तो बोला — "अब तुम पानी में वापस जाओ। उसके बाद मैं यह रस्सी तीन बार

खींचूँगा। तीसरी बार के बाद तुम इसको जितनी भी ज़ोर से खींच सकते हो खींच लेना।

अच्छा तो यह होगा कि तुम अपने आपको ठीक से बाँध कर रखना क्योंकि तीसरी बार के बाद मैं तुमको बाहर खींच लूँगा।"

हिप्पो ने हाँ में सिर हिलाया और रस्सी को खींचता हुआ पानी में चला गया। उधर कछुए ने रस्सी का दूसरा सिरा उठाया और हाथी के पीछे दौड़ा।

उसने हाथी को नमस्ते की और बोला — "हिप्पो मुझसे कह रहा था कि तुमने मेरी चुनौती को गम्भीरता से नहीं लिया तो क्या तुम यह सोचते हो कि तुम मुझसे ज़्यादा ताकतवर हो?"

हाथी को यह सुन कर मजा भी आया और गुस्सा भी आया। वह हँसा और उसने मक्खियों को भगाने के लिये अपनी सूँड़ को इधर उधर हिलाया।

उसके सूँड़ हिलाने से हवा में जो लहर उठी उसने कछुए के पैर उखाड़ दिये। एक पल के लिये तो उसको लगा कि हाथी को चुनौती दे कर शायद उसने गलती की है पर फिर सोचा कि अगर उसकी तरकीब काम कर गयी तब यह उसकी गलती नहीं थी।

हाथी बोला — "मैं नहीं भी सोचता और मैं सोचता भी हूँ। मेरा तुम्हारा क्या मुकाबला? मैं तो जब मक्खियों को उड़ाने के लिये अपना शरीर हिलाता हूँ तो उसी से मैं तुमको आसमान में फेंक सकता हूँ।"

कछुआ बोला — "तो साबित करो न यह बात। लो यह रस्सी लो और इसको अपने गले के चारों तरफ बॉध लो। और मैं इसका दूसरा सिरा अपनी कमर में बॉध लेता हूँ।

जब तुम तीन बार रस्सी की खींच महसूस करो तो अपना पूरा ज़ोर लगा कर इसे खींचना क्योंकि नहीं तो फिर मैं तुमको खींच लूँगा।"

हाथी ने वह रस्सी अपने गले में बॉधी और कछुआ झाड़ियों के अन्दर खिसक गया। यह झाड़ी हाथी और नदी के बीच में थी इस लिये न तो हिप्पो हाथी को देख सकता था और न ही हाथी हिप्पो को देख सकता था।

नदी में हिप्पो कछुए के इशारे का इन्तजार कर रहा था। सो जैसे ही कछुआ हाथी की नजरों से ओझल हुआ उसने तीन बार उस रस्सी को खींचा। तीसरी बार खींचने पर वह रस्सी लोहे के डंडे की तरह से सख्त हो गयी और तन गयी।

हाथी और हिप्पो दोनों एक दूसरे को जितनी ज़ोर से खींच सकते थे खींच रहे थे। हाथी अलग से चिंघाड़ रहा था और हिप्पो अलग से कराह रहा था। दोनों में से कोई भी एक दूसरे को नहीं खींच पा रहा था।

जैसे ही हाथी जीतता लगता तो हिप्पो ज़ोर लगाता और हाथी को अपनी तरफ खींच लेता। जैसे ही हिप्पो को लगता कि वह

पानी से बाहर आने वाला है तो फिर वह और ज़्यादा ताकत से रस्सी खींचता।

दोनों ही बराबर की ताकत वाले थे सो काफी देर के बाद भी यह निश्चय न किया जा सका कि कौन जीता और कौन हारा।

कछुआ अपने आपको बड़ा होशियार समझ रहा था। वह तो बस झाड़ी में बैठा यह तमाशा देख रहा था। हिप्पो और हाथी इस तरह बहुत देर तक एक दूसरे को खींचने की कोशिश करते रहे।

जब शाम होने लगी तो कछुए ने अपना चाकू निकाला और रस्सी काट दी। रस्सी काटने से जो झटका लगा उससे हाथी तो बहुत सारे पेड़ों के ऊपर जा गिरा और हिप्पो एक बहुत ज़ोर की छपाक की आवाज के साथ पानी में गिर पड़ा।

यह छपाक की आवाज इतने ज़ोर की थी कि इसकी वजह से बहुत सारी मछलियॉ नदी के पानी में से बाहर निकल कर किनारे पर आ पड़ीं।

कछुआ फिर रस्सी के एक सिरे के साथ साथ गया तो वहॉ उसने देखा कि हाथी नीचे जमीन पर पड़ा हॉफ रहा है।

हाथी को यह देख कर न केवल आश्चर्य हुआ कि कछुआ किस तरह उसके साथ इतनी देर तक रस्सा कसी कर रहा था बल्कि यह देख कर भी हुआ कि कछुए के चेहरे पर तो पसीने की एक बूॅद भी नहीं थी। ऐसा लगता ही नहीं था कि उसने कुछ मेहनत की थी।

कछुआ उसको समझाते हुए बोला — "हाथी जी, किसी का साइज़ मायने नहीं रखता बल्कि उसकी ताकत मायने रखती है।"

हाथी के पास उसकी बात मानने के अलावा और कोई चारा नहीं था सो उस समय के बाद से वह हमेशा यही कहता रहा कि कछुआ ताकत में उसके बराबर है।

हाथी से यह कहलवाने के बाद कि कछुआ ताकत में उसी के बराबर है कछुआ अब दूसरी दिशा में हिप्पो की तरफ चल दिया ताकि वह उससे भी मामला निपटा सके।

जैसे ही वह नदी के किनारे आया तो उसने देखा कि हिप्पो हवा खाने के लिये पानी में से बाहर निकल रहा है। कछुए को देखते ही वह बोला — "मैं तो थक कर चूर हो गया। मैं हार गया। तुम वाकई इतने ही ताकतवर हो जितना कि मैं हूँ।"

कछुए ने उसकी चापलूसी की — "मुझे तो आश्चर्य है कि तुम इतनी देर तक मुझसे रस्सा कसी करते कैसे रहे। मैंने तो सोचा था कि मैं जल्दी ही तुमको पानी से बाहर खींच लूँगा। उस रस्सी ने तुमको बचा लिया। कुछ भी हो पर अब मैं यह मानता हूँ कि हम दोनों बराबर के ताकतवर हैं।"

और इस तरह कछुआ, हाथी, हिप्पो और शेर जानवरों के उस राज्य पर राज करने लगे। क्योंकि वे राजा थे इसी लिये इनकी दूसरे जानवरों के मुकाबले में ज़्यादा कहानियाँ मिलती हैं।

34 बाज़ मुर्गे क्यों खाता है[72]

बहुत दिनों पहले की बात है कि नाइजीरिया के एक गॉव में एक पति पत्नी रहते थे जिनके कोई बच्चा नहीं था। समय गुजरता गया और उस पत्नी को उसके पड़ोसियों ने चिढ़ाना शुरू कर दिया कि उसके कोई बच्चा नहीं था।

एक दिन उसके एक पड़ोसी जिसके साथ उसकी बहुत लड़ाई रहती थी उसने उसे इतना चिढ़ाया कि उसका दिल टूट गया। उस रात जब वह सोने गयी तो वह रो पड़ी। उसने अपने ची[73] से प्रार्थना की वह उसको उसका अपना एक बच्चा दे दे।

इस बार उसकी प्रार्थना सुन ली गयी और उसने एक बहुत ही सुन्दर सी बेटी को जन्म दिया। उसने उसका नाम रखा अडॉमा[74]। अडॉमा यानी सुन्दर लड़की। उसको लोग मा[75], यानी सुन्दरता भी कहते थे।

उसका नाम बिल्कुल उसके लायक था क्योंकि वह वाकई बहुत सुन्दर थी। जब वह बड़ी हो गयी तो उस गॉव का हर आदमी उससे शादी करने की इच्छा रखने लगा।

---

[72] Why the Hawk Preys on Chicks? (Tale No 34) – an Igbo folktale from Nigeria, Africa.
[This tale may also be read in English at :
http://westafrikanoralliterature.weebly.com/why-the-hawk-preys-on-chicks.html too.

[73] Chi – one's personal God.

[74] Adanma

[75] Nma

पर अडॉमा में एक गड़बड़ थी जिसकी वजह से उसके माता पिता उसकी शादी के लिये परेशान थे। उसकी उडाला[76] यानी सेब खाने की इच्छा बहुत ज़्यादा थी।

प्यारी बेटी होने की वजह से उसको सेब की कभी कोई कमी भी नहीं होने दी जाती थी बल्कि उसके लिये घर में बहुत सारे सेब रखे रहते। पर बहुत जल्दी ही सेब के लिये उसका यह लालच एक बहुत बड़ी परेशानी बन गया।

एक दिन जब मा के माता पिता कहीं बाहर जाने वाले थे तो उन्होंने घर में सब तरह का खाने पीने का सामान और कई टोकरी भर कर बहुत स्वाददार रसीले सेब ला कर रख दिये।

मा की मॉ ने उसको बुलाया और कहा — "मा, देखो तुम्हारे पिता और मैं ज़रा बाहर जा रहे हैं। घर में वह सब कुछ है जो तुमको चाहिये। मुझसे वायदा करो कि जब तक हम बाहर से लौट कर नहीं आते तुम घर छोड़ कर बाहर कहीं नहीं जाओगी।

और तुम बाहर सेब तोड़ने तो बिल्कुल ही नहीं जाओगी, खास कर के पूरे चॉद की रात को क्योंकि उस दिन वहॉ भूत सेब तोड़ने के लिये आते हैं।"

मा ने वायदा किया कि वह वैसा ही करेगी जैसा कि उसकी मॉ ने कहा है।

---

[76] Udala – means apple

जब मा के माता पिता चले गये तो मा ने अपने दोस्तों को अपने घर बुलाया और घर में सेब और दूसरे खाने की दावत की। दूसरे दिन रात गये तक मा का पूरा खाना खत्म हो गया।

अब वह इतनी ज़्यादा भूखी हो गयी कि वह यह भी भूल गयी कि उसकी मॉ ने उससे क्या कहा था। उसके घर के पास एक सेब का पेड़ लगा हुआ था सो वह सेब के बड़े वाले पेड़ के पास सेब तोड़ने के लिये भागी गयी।

उस दिन पूरे चॉद की रात थी और उसको इस बात की याद ही नहीं थी कि उस दिन भूत वहॉ पहले से ही सेब तोड़ने के लिये आये हुए थे।

एक भूत ने कुछ रसीले सेब तोड़े और मा के पैरों के पास डाल दिये। मा को लगा कि यह तो उसकी अच्छी किस्मत थी कि सेब उसके पास अपने आप ही आ गये सो उसने उनको तुरन्त ही उठा लिया।

वह उनको खाने ही वाली थी कि उस भूत ने उससे शादी करने के लिये कहा — "मा, मुझसे शादी कर लो और ये सेब मेरे प्यार की निशानी समझ कर ले जाओ।"

यह सुन कर मा डर गयी और इधर उधर देखने लगी। उसको आश्चर्य तो जरूर हुआ कि यह आवाज कहॉ से आयी पर उसको कहीं कोई दिखायी नहीं दिया सो वह वे सेब ले कर घर वापस आ गयी।

अगले दिन जब उसके माता पिता लौटे तो वे अपनी बेटी को घर में देख कर बहुत खुश हुए। उन्होंने उसको गले से लगाया और फिर उसे बहुत सारा अच्छा सामान दिया जो वे उसके लिये ले कर आये थे।

उसी रात आधी रात को उनके घर के दरवाजे पर रात के सन्नाटे को तोड़ती हुई एक खटखटाहट हुई — थप थप, थप थप और वहॉ से बड़ी तेज़ चॉदनी की एक किरन आयी। कोई दरवाजा खटखटा रहा था।

मा का पिता धीरे से दरवाजे के पास गया और उसे खोला तो बाहर उसको एक अजीब सी शक्ल का एक बूढ़ा खड़ा दिखायी दिया।

मा के पिता को उस बूढ़े का चेहरा बिल्कुल भी दिखायी नहीं दे रहा था क्योंकि चॉद की वजह से उसकी अपनी परछॉई उसके चेहरे पर पड़ रही थी।

मा के पिता ने पूछा — "आपको हमसे क्या काम है?"

बूढ़ा बोला — "मैं अपनी पत्नी को लेने आया हूॅ।"

इस बीच मा की मॉ भी तभी जाग गयी थी जब उसका पति अपने बिस्तर से उठ कर आया था। वह अपने पति के पास आयी और आ कर उसके पीछे खड़ी हो गयी।

जैसे ही उसको यह महसूस हुआ कि उसकी बेटी ने क्या कर लिया है उसके दिल की धड़कन तो इतनी तेज़ हो गयी जैसे अफ्रीका के बहुत सारे हाथी एक साथ भागे जा रहे हों।

वह उस बूढ़े से भीख सी माँगती हुई बोली — "ओ अजनबी, मेहरबानी कर के मेरी एकलौती बेटी को मुझसे दूर मत ले जाओ। मैं तुमको दुनियाँ का सारा सोना दे दूँगी।

इसके अलावा जो भी तुम चाहो वह मैं तुमको दूँगी। मैं अपनी एक नौकरानी भी तुमको दे दूँगी बस तुम मेरी बेटी को बख्श दो।"

अजनबी ने ना में सिर हिलाया और मा की माँ उसका इरादा न बदल सकी। सो इससे पहले कि वह अजनबी उसकी बेटी को अपने साथ ले जाये मा की माँ अपनी बेटी से आखिरी बार बात करने के लिये उसके कमरे में गयी।

उसने उससे कहा — "अगर तुम मुझे और अपने पिता को फिर से देखना चाहती हो तो मेरी बात ध्यान से सुनो। जब वह बूढ़ा गहरी नींद सो जाये तो तुमको वहाँ से भाग आना चाहिये। वह गहरी नींद में कब है यह तुम उसके खर्राटों से जान जाओगी। जब वह खर्राटे मारे —

गर्र फी फी फी फी – भूत सोते हैं जागते नहीं

तब समझो कि वह सो गया है और वही समय वहाँ से भागने का होगा। जाओ और समय मत बर्बाद करो और वहाँ से भाग कर

तुम सीधी घर आना क्योंकि उस समय वह गहरी नींद में सो रहा होगा। क्या तुम सुन रही हो जो मैंने कहा?"

मा सुबकती हुई बोली — "हॉ मॉ।"

तब मा की मॉ ने मा को फटे हुए कपड़े पहनाये और एक नौकरानी को बहुत सुन्दर कपड़े और गहने पहनाये जो उसने मा के लिये खरीदे थे।

फिर वह इस उम्मीद में उस नौकरानी को उस अजनबी के पास ले गयी कि वह उसको मा समझ लेगा और उसको ले जायेगा पर ऐसा नहीं हुआ।

अजनबी ने उसको पहचान लिया और उसको लेने से इनकार कर दिया तो मा की मॉ को लगा कि उसकी यह चाल तो बेकार ही गयी।

सो उसने मा को उस बूढ़े को दे दिया और वह बूढ़ा मा को अपनी कभी न वापस आने वाली जगह ले गया। वे लोग सात जंगल और सात समुद्र पार करने के बाद भी अपनी जगह नहीं आ पाये थे।

वे लोग अगली रात को अपनी जगह पर पहुँच पाये। उनको सोने के लिये लेटने के लिये भी करीब करीब सुबह हो चुकी थी। वे जब सोने के लिये लेटे तो मा को बहुत डर लग रहा था।

हालॉकि वह बहुत थकी हुई थी फिर भी वह सो नहीं सकी। किसी तरह से उसकी ऑख लगी ही थी कि ज़ोर ज़ोर के खर्राटों से उसकी ऑख खुल गयी —

गर्र फी फी फी फी, भूत सोते हैं भूत जागते नहीं
गर्र फी फी फी फी, भूत सोते हैं भूत जागते नहीं

मा तुरन्त ही बिस्तर से कूद पड़ी और वहॉ से भाग ली। वह चॉद की धीमी रोशनी में जंगल में इधर से उधर भटकती रही।

भटकते भटकते वह थक गयी और एक बड़े से ओक के पेड़[77] के सहारे आराम करने के लिये बैठ गयी। बैठते ही उसको नींद आ गयी और वह वहीं सो गयी।

फिर उसने अपनी तरफ आती हुई कुछ पैरों की आहट सुनी। एक आवाज बोली — "मैं उसको बहुत जल्दी ही पकड़ लूॅगा और फिर उसको अपना बना लूॅगा।"

दूसरा बोला — "पर याद रखना कि वह मेरी पत्नी है।

मा ने जबरदस्ती अपनी ऑखें खोलीं तो देखा कि सवेरा हो चुका है। वह जल्दी से उठी और उसने फिर से भागना शुरू कर दिया।

भागते भागते उसने ऊपर देखा तो आसमान में उड़ती हुई उसे एक बाज़ दिखायी दिया जो अपने लिये खाना ढूॅढ रहा था।

[77] Oak tree is a kind of a large shady tree

वह उससे प्रार्थना करती हुई चिल्लायी — "ओ बाज़, मेहरबानी कर के मेरी सहायता कर और मुझे इस कभी न वापस आने वाली जगह से निकाल।"

जैसे ही भूत उसको पकड़ने वाले थे कि उस बाज़ ने नीचे की तरफ एक कूद लगायी और मा को एक बड़े से ओक के पेड़ के ऊपर ले गया।

इस बात से तो वे भूत गुस्से से पागल से हो गये। उन्होंने लम्बे वाले चाकू और कुल्हाड़ियॉ लीं और उस पेड़ को काटना शुरू कर दिया।

जब वह पेड़ गिरने ही वाला था कि बाज़ ने मा को एक बार फिर से उठा लिया और मा के गॉव की तरफ उड़ चला।

जब बाज़ ने भूतों की दुनियॉ की सीमा पार कर ली तो भूतों को लगा कि अब वे उसको नहीं पकड़ सकते थे सो उन्होंने अपनी कोशिश छोड़ दी और वे अपने घर चले गये।

जब वह बाज़ मा के गॉव में आ गया तो उसने गाना शुरू किया

मा तो भूतों के देश में थी मा की शादी तो एक भूत से हुई थी
मा अब ज़िन्दा लोगों के देश में आ गयी है इस प्यारी सी बेटी की मॉ कौन है

मा के माता पिता को तो अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ। जैसे जैसे वह उस गीत को सुनते रहे वह गीत और तेज़ होता गया।

सो वे अपने घर के बाहर निकले और अपनी बेटी को सही सलामत देख कर बहुत खुश हुए। उन्होंने चैन की सॉस लेते हुए कहा — "चलो, आखिर हमारी बेटी घर तो वापस आ गयी।"

मा के माता पिता अपनी बेटी को वापस देख कर बहुत खुश थे उन्होंने उसको गले लगाया और बाज़ को धन्यवाद दिया। उन्होंने उसको खाने और सोने की भेंटें दीं पर उसने उनकी कोई भी भेंट नहीं ली।

उसकी ऑखें तो बस एक मुर्गी और उसके बच्चे पर लगी हुई थीं जो उनके घर के ऑगन में कीड़े के लिये अपने पंजों से जमीन खुरच रहे थे।

मा की मॉ ने कहा — "अगर तुमको यह मुर्गी और उसका यह बच्चा पसन्द है तो ये दोनों तुम्हारे हैं।" बाज़ यह सुन कर बहुत खुश हुआ।

मा की मॉ ने एक टोकरी भर कर मुर्गियॉ उसको दे दीं। बाज़ ने उसको धन्यवाद दिया और अपनी मुर्गियों की टोकरी ले कर अपने घर की तरफ उड़ चला।

पर जब वह अपने घर जा रहा था तो उनमें से एक मुर्गी नीचे गिर पड़ी। बाकी की मुर्गियॉ भी कहीं नीचे न गिर जायें इसलिये उसने उसको गिर जाने दिया।

वह वहीं से चिल्लाया — "ओ किसानों यह मुर्गी तुम लोग रख लो। इसको तुम मेरा अपने ऊपर उधार समझना पर मैं इसका ब्याज वसूल करने आता रहूँगा।"

उस दिन से सारे बाज़ मुर्गियॉ खा खा कर अपनी उस मुर्गी का ब्याज वसूल करते रहते हैं। उनको लगता है कि सारी मुर्गियॉ उनके पुरखे बाज़ की मुर्गी के बच्चे हैं। उसको तो उस समय यह भी पता नहीं था कि उस एक मुर्गी का ब्याज कितना होता था।

35 काइट जंगली आग के पीछे क्यों भागता है[78]

शुरू शुरू में सनबर्ड और कूकल[79] बहुत ही अच्छे दोस्त थे। वे इतना ज़्यादा साथ रहते थे कि किसी ने उनको कभी अकेले नहीं देखा।

सनबर्ड बहुत ही चालाक, छोटा और बहुत तेज़ उड़ने वाला चिड़ा था। वह इतना छोटा था कि लोगों ने यह कहना शुरू कर दिया था कि अगर सनबर्ड किसी चिड़ियों के झुंड में हो तो कोई उसका शिकार नहीं कर सकता।

सनबर्ड की बहुत लम्बी चोंच थी जो फूलों का शहद और उन छोटे छोटे कीड़ मकोड़े खाने के लिये बनी थी जो फूलों पर घूमते रहते थे। उसकी आवाज बहुत तेज़ थी और उसकी लम्बी चोंच से उसको कहीं से भी पहचाना जा सकता था।

जब कि कूकल अपने दोस्त सनबर्ड का बिल्कुल उलटा था। वह बहुत आलसी था और बहुत धीरे उड़ता था। वह सनबर्ड के मुकाबले में बहुत भारी भी था।

वह अपनी कू कू की आवाज के लिये ज़्यादा मशहूर था बजाय अपने उड़ने के। वह उड़ने की बजाय नीचे की तरफ को फिसलना

---

[78] Why the Kite Chases Forest Fires? (Tale No 35) – a folktale from Nigeria, Africa.

[79] Sunbird and Coucal – two small birds. Sunbird is found in many colors. See its one picture above. Coucal is a cuckoo type bird which sings well.

ज़्यादा पसन्द करता था सिवाय उस समय के जब उसको कोई तंग करता था।

अगर उसको अपनी जगह बदलनी होती तो वह किसी पेड़ की चोटी पर फिसल जाता और उस पर कूदता रहता फिर किसी और पेड़ पर फिसल जाता। वह चिड़ियों के राज्य में कोई बहुत ही बढ़िया चिड़िया नहीं माना जाता था।

तो यह कहानी कुछ इस तरह है कि एक बार चिड़ियों के राज्य में अकाल पड़ा। किसी भी चिड़िया को ठीक से खाना तभी मिल सकता था जब उसके पास हड्डी की बनी बॉसुरी होती।

ये खास तरह की बॉसुरी कीड़ों को अपनी तरफ खींचने और टिड्डों को इसकी धुन पर नचाने के लिये इस्तेमाल की जाती थी।

जब कीड़े संगीत सुनने के लिये बाहर निकल आते, खास कर के जब जबकि तूफान के बाद जब सब जगह शान्त होता और ताजगी होती, या फिर जब जबकि टिड्डे बॉसुरी बजाने वाले की तरफ देख रहे होते, बस तभी चिड़ियें उनको खा लेती थीं।

एक दिन जब सनबर्ड और कूकल इधर उधर घूम रहे थे तो सनबर्ड ने अपने दोस्त कूकल को एक पेड़ के खोखले में जिसमें चींटियॉ भरी हुई थीं, तीन बाजार हफ्ते[80] के उपवास के लिये चुनौती दी।

[80] Market weeks – In many African villages markets are organized either on daily or weekly basis. Here three market weeks means three weeks.

वह बोला — "मैं कहता हूँ कि मैं तुमको इस तीन बाजार हफ्ते के उपवास के मुकाबले में हरा सकता हूँ।"

कूकल बोला — "मैं तुमको दोहरी चुनौती देता हूँ कि तुम मुझको नहीं हरा सकते। तुम बहुत छोटे हो। तुम तो इस मुकाबले के पहले दिन ही शाम होने से पहले ही मर जाओगे।"

सनबर्ड बोला — "ठीक है तो अगले तीन बाजार हफ्ते में हम देखते हैं कि पहले कौन कहता है "बस खत्म करो, हो गया।"

सो सनबर्ड ने अपने दोस्त को तो एक पेड़ के खोखले में जो काटने वाली चीटियों से भरा था रख दिया और खुद वह एक ऐसे पेड़ के खोखले में जा कर बैठ गया जिसमें सीधी सादी चीटियाँ रहती थीं।

कूकल के पेड़ वाली चींटियाँ तो उसके चारों तरफ लिपटी जा रही थीं, उसकी आँखों में, टाँगों में और शरीर में काट रही थीं जब कि सनबर्ड उन सीधी सादी चींटियों की दावत खा रहा था।

एक बाजार हफ्ते के बाद सनबर्ड ने अपने दोस्त के बारे में जानने के लिये उसको पुकारा —

चीं चीं, चीं चीं, सनबर्ड और कूकल ने एक शर्त लगायी
किसी को ज़रा सा भी न कुछ खाना है न पीना है तीन बाजार हफ्तों के लिये

कूकल ने बहुत ही मरी सी आवाज में जवाब दिया –

कू कू कू कू सनबर्ड और कूकल ने एक शर्त लगायी
किसी को ज़रा सा भी न कुछ खाना है न पीना है तीन बाजार हफ्तों के लिये

जब दूसरा बाजार हफ्ता आया तो चीटियों के काटने और भूख दोनों ने मिल कर बेचारे कूकल को तो मार ही डाला। वह बड़ी मुश्किल से सनबर्ड की पुकार का जवाब दे सका।

दूसरे बाजार हफ्ते के बीच में तो वह केवल कू कू ही कर सका जबकि सनबर्ड अभी भी ताजा था। दूसरे बाजार हफ्ते के आखीर तक कूकल मर गया।

तीसरे बाजार हफ्ते के बीच भी सनबर्ड उतना ही ताजा था जितना कि वह यह मुकाबला शुरू होने के समय था।

सनबर्ड जानता था कि उसका दोस्त इतने दिनों तक यह सब नहीं सह सकता था पर फिर भी उसके बारे में यह पक्का करने के लिये कि वह ज़िन्दा था या मर गया उसने एक बार फिर उसको पुकारा –

चीं चीं, चीं चीं, सनबर्ड और कूकल ने एक शर्त लगायी
किसी को ज़रा सा भी न कुछ खाना है न पीना है तीन बाजार हफ्तों के लिये

पर इसका उसको कोई जवाब नहीं मिला।

तीसरे बाजार हफ्ते के आखीर में सनबर्ड ने अपना दावत वाला घर छोड़ा। वह उड़ कर कूकल के घर में गया, उसकी हड्डियॉ उठायीं और उसकी टॉग की हड्डी से एक बॉसुरी तैयार की और उसको खुशी से बजाता घूमता रहा।

जब वह उड़ रहा था तो वह एक काइट चिड़े[81] और उसके परिवार के पास आ गया। वे सब अपने बागीचे में बड़ी मेहनत से काम कर रहे थे। उसने उनके लिये अपनी बॉसुरी पर गाना शुरू किया –

मिस्टर काइट काम कर रहा है, मिस्टर काइट काम कर रहा है
सनबर्ड और कूकल ने एक शर्त लगायी
किसी को ज़रा सा भी न कुछ खाना है न पीना है तीन बाजार हफ्तों के लिये
कूकल हार गया और कमजोर हो कर मर गया

काइट ने सनबर्ड से पूछा — "यह बॉसुरी किसकी हड्डी की है?"

सनबर्ड ने जवाब दिया — "यह बॉसुरी एक बेवकूफ चिड़िया की हड्डी की है। यह कूकल की हड्डी की है। और जो कोई भी यह सोचता है कि वह मुझसे ज़्यादा ताकतवर है तो वह आये और आ कर मुझसे इसे ले ले।"

काइट ने पूछा — "क्या मैं इसको देख सकता हूँ? यह तो बहुत ही सुन्दर बॉसुरी है।"

"नहीं। मुझे मालूम कि एक बार अगर तुमने इसको मुझसे ले लिया तो तुम इसे मुझे वापस नहीं दोगे।"

[81] Kite Bird – is predatory bird of the hawk family having a long, often a forked tail and long pointed wings. See its picture above.

काइट बोला — "यकीनन, मैं तुमको इसे वापस कर दूँगा। मैं तो बस इसे ज़रा बजा कर देखना चाहता हूँ।"

"ठीक है पर जितनी देर यह बाँसुरी तुम्हारे पास रहेगी मैं तुम्हारे पंख पकड़े रहूँगा ताकि तुम इसको ले कर कहीं उड़ न जाओ।"

काइट बोला — "क्या? तुमको मेरे ऊपर विश्वास नहीं है? विश्वास करो मेरा। अगर तुम मेरे पंख पकड़ लोगे तो मैं बाँसुरी बजा कर कैसे देखूँगा? मुझे अपने आपको खड़े रखने के लिये अपने पंख चाहिये।"

सनबर्ड ने पूछा — "और अगर मैं तुम्हारी टाँगों से लटक जाऊँ तो?"

काइट बोला — "अगर तुम ऐसा करोगे तो मैं बाँसुरी पकड़ूँगा कैसे? अच्छा ऐसा करो, तुम मेरी पूँछ वाले पंखों से लटक जाओ।"

सो सनबर्ड काइट की पूँछ वाले पंखों से लटक गया और अपनी बाँसुरी उसको पकड़ा दी। काइट ने अपने आपको सनबर्ड की पकड़ से आजाद किया और अपनी पूँछ वाले पंख उसकी चोंच में दबे छोड कर आसमान में उड़ गया।

वहाँ से उड़ कर काइट अपने घर गया और उसने वह बाँसुरी अपनी अन्धी माँ को सुरक्षित रखने को लिये दे दी। बाँसुरी उसके हाथ में देते हुए और उसकी तारीफ करते हुए उसने उससे कहा — "माँ इसको अपनी जान से भी ज़्यादा सँभाल कर रखना। इसको किसी को देना मत जब तक मैं न आ जाऊँ।"

"ठीक है बेटे। जाओ और अपना काम पूरा करके आओ।"

सनबर्ड जो काइट की बातचीत के ऊपर निगाह रखे था वापस गया और अपने पैर बहुत ही गाढ़ी और चिपकी हुई कीचड़ में लपेटे। फिर उन पर और ज़्यादा कीचड़ लपेटी ताकि वे और भारी हो जायें।

अपनी शक्ल ठीक करने के बाद वह काइट की मॉ के पास गया।

जब वह वहॉ उतरा और उतर कर उसने आवाज बदल कर उसकी मॉ से बॉसुरी मॉगी तो यह सब कुछ उसने काइट की नकल करके ही किया ताकि काइट की मॉ को लगे कि काइट ही आया है।

इस सबसे काइट की मॉ को लगा कि सनबर्ड उसका बेटा काइट ही था सो उसने उसको बॉसुरी दे दी। फिर उससे पूछा — "आज तुम अपनी मॉ के लिये क्या खाना ले कर आये हो, एक खरगोश?"

सनबर्ड बोला — "नहीं।"

मॉ ने पूछा — "तो फिर क्या एक गिलहरी?"

सनबर्ड बोला — "नहीं।"

मॉ बोली — "तो फिर बताओ न तुम क्या ले कर आये हो। अपनी मॉ को इस तरह तंग मत करो। ऐसा लगता है कि वह कुछ भारी सा है, सो ऐसा लगता है कि वह चिपमंक[82] तो नहीं है।"

सनबर्ड बहुत ज़ोर से हॅसा और हॅसते हॅसते ही जवाब दिया — "हा हा हा हा। यह तो कीचड़ है।" कह कर उसने उस कीचड़ को अपने पैरों से झटक दिया और बॉसुरी ले कर उड़ गया।

कुछ देर बाद ही काइट घर वापस आया तो उसको पता लगा कि उसके पीछे क्या हुआ था। गुस्से में भर कर उसने अपनी मॉ को अपनी सफाई देने का भी मौका भी नहीं दिया और उसको मार दिया।

फिर उसने उसके शरीर को उठाया और उसे ले जा कर जंगल की आग में झोंक दिया। जब तक वह यह सब कर के घर वापस आया तो यह समझने के लिये कि उसने क्या कर दिया था उसका गुस्सा काफी ठंडा हो चुका था।

उसने अपने आपसे पूछा — "अरे, यह मैंने क्या कर दिया? मैंने अपनी बॉसुरी भी खो दी, अपनी पूँछ के पंख भी खो दिये और अब मैंने अपनी मॉ को भी मार डाला। और यह सब उस बॉसुरी के लिये हुआ जो कूकल की हड्डी से बनी थी?"

---

[82] Chipmunk is a squirrel type animal with stripes, mostly found in North America. See its picture above.

अपने इस काम और बुरे बर्ताव के प्रायश्चित के लिये वह अपने आप ही देश से निकल गया।

इसके अलावा अब उसके साथी काइट भी उसको चिढ़ाने लगे थे कि वह बिना पूँछ के पंखों का था। वह अब उन मुर्गों जैसा दिखता है जिनका वे शिकार किया करते थे।

इसलिये उसको कुछ समय की जरूरत थी जिसमें उसके पूँछ के पंख भी उग सकें और वह अपनी माँ का दुख भी मना सके।

इसी लिये वह अपने देश से बाहर चला गया था। वह इस देश निकाला के लिये एक सूखे के मौसम[83] से दूसरे सूखे के मौसम तक रहा।

इस बीच में उसकी पूँछ के पंख भी पूरी तरह से उग आये और उसका मन भी कुछ सँभल गया। अब वह दुनियाँ को नयी तरीके से देख रहा था।

जब वह वापस घर लौटा तो सूखे का मौसम अपने पूरे ज़ोरों पर था। चारों तरफ जंगली आग लग रही थीं। ये आग देख कर उस की आँखों के आगे अपनी माँ का मरना फिर से घूम गया।

वह उन आगों के चारों तरफ चक्कर लगाने लगा कि शायद कहीं उसकी माँ उसे मिल जाये।

[83] Nigeria has only two seasons – 6 months of rainy season, April to September and 6 months of dry season, October to March.

वह रो रो कर चिल्लाने लगा — "काश मुझे वह कहीं मिल जाये तो मैं उसके अपने गले से लगा लूँ और उसको कहूँ कि मैं उसको कितना प्यार करता हूँ। माँ तुमको दुखी करने का मेरा कोई इरादा नहीं था। मुझे माफ कर दो माँ, मुझे माफ कर दो।"

काइट अपनी माँ को सारी आगों में ढूँढता फिरा। जब भी उसे कहीं उसकी माँ जैसी कोई चीज़ दिखायी देती तो कहीं कहीं वह नीचे भी उतर जाता। पर वह तो वहाँ थी नहीं। वह तो कब की मर चुकी थी।

वह आज भी इसी उम्मीद में हमेशा उसको ढूँढता रहता है कि एक दिन वह उसको मिल जायेगी।

36 मच्छर क्यों भिनभिनाते हैं[84]

एक दिन न्वान्क्वो और उसकी पत्नी पाम का तेल निकालने के लिये पाम की कुछ गिरी तोड़ने गये। उन्होंने सारा खेत देख लिया पर उनको पाम की कहीं पकी हुई इतनी सारी गिरी नहीं मिली जिनको तोड़ कर वे पाम का तेल निकाल सकते।

अब अँधेरा होने आया था और सूरज भी बस अब डूबने वाला था सो उन्होंने पाम की गिरी की खोज छोड़ कर अपने घर की तरफ चलना शुरू किया।

रास्ते में न्वान्क्वो ने एक पाम का पेड़ देखा जिस पर लाल पाम की गिरी के चार गुच्छे लगे हुए थे। वह उसको देखने में बहुत ही स्वादिष्ट लगे।

इसके अलावा पाम का वह पेड़ इतना पतला सा था कि न्वान्क्वो को लगा कि उस पेड़ ने वे चार पाम की गिरी के गुच्छे भी पता नहीं किस तरह सँभाले हुए थे।

खैर, न्वान्क्वो अपना लालच नहीं रोक सका और वह तुरन्त ही पाम के उस पेड़ की तरफ दौड़ गया। उसने अपने रस्से आदि निकाले, उस पेड़ के चारों तरफ बाँधे, अपना लम्बा वाला चाकू

[84] Why Mosquitoes Buzz? (Tale No 36) – an Igbo folktale from Nigeria, West Africa

अपनी कमर में लटकाया और उस पाम के पेड़ पर चढ़ना शुरू कर दिया।

जब वह उस पेड़ पर चढ़ रहा था तो वह पेड़ बाबा आदम के समय की घड़ी के पैन्डुलम की तरह हिल रहा था।

उसकी पत्नी चिल्लायी — "न्वान्क्वो, मुझे लगता है कि तुम वापस आ जाओ। मैं विधवा होने की बजाय पाम की गिरी और पाम के तेल के बिना रहना ज़्यादा पसन्द करूँगी।"

न्वान्क्वो बोला — "तुम फिकर न करो। मुझे लगता है कि मैं इनको तोड़ लाऊँगा। तुम्हें मालूम है कि नदी कभी उलटी नहीं बहती और इसके अलावा जिस भगवान ने बच्चे को जंगली याम दिया है वह उसको आग भी देगा जिसमें वह उसे भून सके।"

सो किसी तरह न्वान्क्वो उस पाम के पेड़ की चोटी तक पहुँच गया। उसने अपना लम्बा वाला चाकू निकाला और उन गुच्छों को काटना शुरू कर दिया।

पर जैसे ही उसने अपना चाकू उस पाम के पहले गुच्छे को मारा कि एक मच्छर वहाँ आ गया। उसने पूछा — "तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

पर न्वान्क्वो उस गुच्छे को काटने मे इतना मग्न था कि वह मच्छर की आवाज ही नहीं सुन सका सो मच्छर उसके कान के पास गया। जैसे ही वह उसके कान के पास आया तो उसके पंखों के फड़फड़ाने की आवाज उसके कानों में पड़ी।

एक तो न्वान्क्वो पेड़ के हिलने से ही डर रहा था और उस मच्छर के पंखों की आवाज सुन कर तो और भी डर गया। मच्छर ने फिर पूछा — "तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

न्वान्क्वो बोला — "शशशश।" और फिर उसने उस मच्छर को भगाने के लिये अपना हाथ अपने कान पर मारा। जब वह मच्छर को भगा रहा था तो उसका वह चाकू उसके हाथ से फिसल गया और उसकी पत्नी पर जाने लगा।

उसकी पत्नी यह सब देख रही थी सो उसने तुरन्त ही अपना चाकू पकड़ लिया और वह न्वान्क्वो के चाकू के रास्ते से हट गयी।

चाकू के रास्ते से हटी तो वह एक अजगर की पूँछ पर जा गिरी। अजगर वहाँ एक मोटा सा हिरन खा कर आराम कर रहा था।

न्वान्क्वो की पत्नी के अपनी पूँछ पर गिरने से वह इतनी ज़ोर से चौंका कि उसने तुरन्त ही अपनी कुंडली खोली और फुंकार मारता हुआ अपनी हिफाजत के लिये पास के एक खरगोश के बिल की तरफ भागा।

एक बिन बुलाये मेहमान को अपने घर में देख कर खरगोश का मुँह खुला का खुला रह गया।

यह सोचते हुए कि वह अजगर उसके पीछे आया था वह खरगोश अपने बिल के पिछले दरवाजे से बाहर भाग गया। वह तो

इतना तेज़ भाग रहा था जितनी पहले कभी वह मैदानों में भी नहीं भागा था।

जैसा कि बड़े लोग कहते हैं — "जब तुम अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये भागो तो सॉस लेने के लिये भी न रुको।" वह इसी तरह से भाग रहा था।

इस दौड़ में वह खरगोश सूखी हाथी घास[85] के ढेर से गुजरा जिसके ऊपर एक जीनिया मुर्गी[86] बैठी अपने बच्चे देख रही थी। उसके आने से वह डर गयी और वहॉ से उड़ गयी। उसके बच्चे भी वहॉ से अपनी हिफाजत के लिये इधर उधर भाग गये।

इस बीच एक काला बन्दर[87] जो जानवरों की दुनियॉ का चौकीदार था उस जीनिया मुर्गी की चीख से सावधान हो गया सो उसने भी एक ज़ोर की चीख मारी।

उसने शाखों के बीच में से देखने की कोशिश की कि खतरा कैसा था और कहॉ था।

वह अपना बोलने वाला ढोल लेने के लिये शाखों पर इधर से उधर कूदा ताकि वह सबको वह इस खतरे से सावधान कर सके। इस कूदने में वह एक बहुत ही कमजोर सूखी शाख पर कूद गया और वह टूट गयी।

---

[85] Elephant Grass – a kind of sharp grass

[86] Guinea Fowl – a kind of turkey or hen

[87] Black Monkey – a kind of monkey who is blackish in color

वह शाख टूटी और एक मुर्गी के घोंसले के ऊपर जा गिरी जिससे उसके सारे अंडे टूट गये। मुर्गी चिल्लायी — "कौ कौ कौ कौ। तुमने मेरे सारे अंडे तोड़ दिये।"

मुर्गी के चिल्लाने की आवाज सुन कर पास में खड़ा मुर्गा उसकी सहायता के लिये आया — "अरे क्या हो गया? क्या हो गया?" पर मुर्गी एक शब्द भी नहीं बोल पायी। उसने अपने टूटे हुए अंडों पर अपने पंख फैला दिये। उसकी ऑखें ऑसुओं से भरी थीं।

यह देख कर कि यह सब क्या हो गया मुर्गा बहुत दुखी हुआ। वह और मुर्गी दोनों अपने अंडों के लिये रोने लगे।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि वह मुर्गा ही है जो रोज सुबह सूरज को जगाता है। उसकी पहली बॉग पर सूरज अपनी एक ऑख बहुत धीरे से खोलता है और तभी एक नये दिन की शुरूआत होती है।

उसकी दूसरी बॉग पर वह अपनी दूसरी ऑख भी खोल कर जाग जाता है। फिर वह एक ऍगड़ाई लेता है और मुस्कुराता है। उसकी मुस्कुराहट और उसके फैले हुए हाथ देख कर दिन आता है और उसके बाद ही दुनियॉ के बाकी के सारे जीव जागते हैं।

पर बहुत दिनों तक, शायद चार बाजार दिन[88] तक, सूरज नहीं जागा सो दिन भी नहीं आया। रात ही चलती रही और चलती

[88] Market Days - one market day means one day.

रही। जीवों ने अपनी ऑखें खोलीं भी पर फिर बन्द कर लीं। सब जीवों को चिन्ता हो गयी। उनको लगा कि शायद सूरज मर गया।

शेर जो सब जीवों का राजा है, उसने अगबारा भगवान[89] के सामने जानवरों की एक मीटिंग बुलायी।

शेर बोला — "हे भगवान, हम लोगों से क्या गलती हो गयी है कि आपने हमसे सूरज छीन लिया है।"

अगबारा बोले — "मैंने तुमसे सूरज नहीं छीना है। मुर्गा उसको जगाना भूल गया है।"

शेर ने मुर्गे से पूछा — "मुर्गे तुमने सूरज को क्यों नहीं जगाया? वह चार बाजार हफ्ते से सोया हुआ है।"

मुर्गा चिल्लाया — "वह बन्दर था। वह शाख पर कूदा। शाख टूट गयी और उसने नीचे गिर कर मुर्गी के सारे अंडे तोड़ दिये। मैं उसी का दुख मना रहा हूॅ। इसी लिये मैंने सूरज को नहीं जगाया।"

शेर बोला — "अच्छा।"

वह बन्दर था जो शाख पर कूदा वह टूट गयी और उसने मुर्गी के सारे अंडे तोड़ दिये
अब मुर्गा दुख मना रहा है और सूरज को नहीं जगाता इसलिये दिन नहीं आता

फिर शेर ने बन्दर की तरफ देखा। बन्दर बहुत ही परेशान था। शेर ने बन्दर से कहा — "बन्दर, क्योंकि तुम जानवरों के राज्य के चौकीदार हो इसलिये तुमको ज़्यादा अच्छी तरह से मालूम

[89] Agbara God

होना चाहिये। तुमको उन चीज़ों को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहिये जिनकी तुमको रखवाली करनी है। तुम उस शाख पर इतनी ज़ोर से कूदे ही क्यों कि वह टूट गयी?"

बन्दर बोला — "राजा अमर रहे। वह जीनिया मुर्गी थी जो इतनी जोर से चीखी कि मुझे लगा कि हम सब खतरे में हैं। इस लिये मैं अपना बोलने वाला ढोल बजाने जा रहा था कि मैं उस शाख पर कूद गया।"

यह सुन कर शेर ने अगबारा से कहा —

वह जीनिया मुर्गी थी जो बन्दर को सावधान करने के लिये चीखी जो शाख पर कूदा
शाख गिर गयी और जिसने मुर्गी के सारे अंडे तोड़ दिये
अब मुर्गा दुख में है और वह सूरज को नहीं जगाता और इसलिये दिन नहीं आता

फिर शेर ने जीनिया मुर्गी से पूछा — "तुम इतनी ज़ोर से क्यों चिल्लायीं जिससे बन्दर को लगा कि कोई खतरा है?"

जीनिया मुर्गी बोली — "ओ राजा, इसका जिम्मेदार तो खरगोश है। मैं तो अपने बच्चों के साथ अपने घोंसले में थी जब यह मेरे घोंसले में आया। इसने मेरा घोंसला तोड़ दिया और मुझे और मेरे बच्चों को डरा दिया। इससे मेरी चीख निकल गयी और बन्दर भी डर गया।"

शेर को लगा कि जीनिया मुर्गी तो बिल्कुल ठीक कह रही थी। उसने सारा हाल पहले अपने दिमाग में दोहराया और फिर जा कर अगबारा से बोला —

वह तो खरगोश था जिसने जीनिया मुर्गी को डराया
जो बन्दर को सावधान करने के लिये चीखी जो शाख पर कूदा
शाख गिर गयी और जिसने मुर्गी के सारे अंडे तोड़ दिये
अब मुर्गा दुख में है और वह सूरज को नहीं जगाता और दिन नहीं आता

इसके बाद शेर ने खरगोश को बुलाया और उसको कहा अगर वह अपनी सफाई में कुछ कहना चाहता था। खरगोश आगे आया। उसकी मूँछें खड़ी हुईं थीं, कान भी ऊपर को खड़े हुए थे और उसकी नाक जोर जोर से हिल रही थी।

खरगोश बोला — "राजा अमर रहे। वह अजगर था। मैं तो अपने बिल में था जब वह मेरे घर में बिना बुलाये आया और उसका मुँह पूरा का पूरा खुला हुआ था। मैं क्या करता।

मैं डर गया। मैं क्या करता सिवाय अपने आपको बचाने के□ सो मैं जितना तेज़ दौड़ सकता था मैदान में से हो कर दौड़ गया। मेरा जीनिया मुर्गी को डराने का कोई मतलब नहीं था।"

शेर ने फिर अगबारा को यह सब बताया —

हे भगवान वह तो अजगर था जिसने खरगोश को डराया
जिसने जीनिया मुर्गी को डराया जो बन्दर को सावधान करने के लिये चीखी
जो शाख पर कूदा तो शाख गिर गयी और जिसने मुर्गी के सारे अंडे तोड़ दिये
अब मुर्गा दुख में है और वह सूरज को नहीं जगाता और दिन नहीं आता

सो अब अजगर की बारी थी यह बताने की कि वह खरगोश के बिल में क्यों घुसा।

वह बोला — "वह तो मिसेज शराब निकालने[90] वाली थी। मैं तो आराम से सो रहा था जब उसने मेरी पूँछ पर पैर रखा। उसने मुझे अपने बड़े चाकू से चौंका दिया।

मैंने अपनी कुंडली खोली और अपनी हिफाजत के लिये खरगोश के बिल में घुस गया। मैं उसको खाने के लिये वहाँ नहीं गया था।"

शेर बोला —

ओ भगवान, वह तो मिसेज शराब निकालने वाली थी
जिसने अजगर को डराया फिर जिसने खरगोश को डराया
जिसने जीनिया मुर्गी को डराया
जो बन्दर को सावधान करने के लिये चीखी जो शाख पर कूदा
शाख गिर गयी और जिसने मुर्गी के सारे अंडे तोड़ दिये
अब मुर्गा दुख में है और वह सूरज को नहीं जगाता और दिन नहीं आता

मिसेज न्वान्क्वो जो यह सब बड़े ध्यान से सुन रही थी अपनी सफाई देने के लिये आगे बढ़ी कि हिरन बोला — "पहले अपना वह बड़ा चाकू दूर रख दो इससे मुझे डर लगता है।"

मिसेज न्वान्क्वो ने अपना बड़ा चाकू दूर रखा और शेर की तरफ मुँह करके बोली — "वह मेरा पति था। मैं तो पाम के पेड़ के नीचे खड़ी थी जब उसका बड़ा चाकू मेरे ऊपर गिरने वाला था। अगर मैं वहाँ से जल्दी से न हट जाती तो वह बड़ा चाकू मेरे सिर पर ही गिर गया होता।"

[90] Mrs Wine Tapper

हिरन बोला — "मैंने तुमसे कहा था न कि ये लम्बे चाकू बहुत खतरनाक होते हैं।"

अब शेर शराब निकालने वाले की तरफ घूमा और बोला — "तुम आदमी लोग हमेशा मुझे तंग करने के लिये आ जाते हो। अब क्या तुम अपनी पत्नी को मारना चाहते थे□तुम्हें अपनी सफाई में क्या कहना है?"

न्वान्क्वो बोला — "हम यहॉ किसी को भी परेशान करने नहीं आये थे। मैं तो पाम की कुछ गिरियॉ अपने खाने के लिये तोड़ रहा था कि एक मच्छर मेरे कान के पास आ कर भिनभिनाने लगा।

जब मैंने उससे जाने के लिये कहा तो वह गया नहीं। मैं उसको भगाना चाहता था कि मेरे हाथ से वह लम्बा चाकू फिसल गया। मैं अपनी पत्नी को न तो मारना ही चाहता था और न डराना ही चाहता था।

ओह वह तो मच्छर था जो शराब निकालने वाले के कान पर भिनभिनाया
जिसने वह लम्बा चाकू गिरा दिया जिससे वह मिसेज शराब निकालने वाली डर गयी
जिसने अजगर को डराया फिर जिसने खरगोश को डराया

जिसने जीनिया मुर्गी को डराया जो बन्दर को सावधान करने के लिये चीखी
जो शाख पर कूदा शाख गिर गयी और जिसने मुर्गी के सारे अंडे तोड़ दिये
अब मुर्गा दुख में है और वह सूरज को नहीं जगाता और दिन नहीं आता

शेर अब मच्छर की तरफ घूमा पर मच्छर जो एक डंडी पर बैठा था कुछ नहीं बोला। उसकी तो टॉगें कॉपने लगीं। वह तो डर के मारे एक शब्द भी नहीं बोल सका।

भगवान अगबारा ने उससे पूछा — "तुमने उसके कानों में क्यों भिनभिनाया?" अगबारा की ज़ोर की आवाज सुन कर वह डंडी चरचरा गयी और वह मच्छर उड़ गया।

उसने वहॉ बैठे सब जानवरों का चक्कर लगाया और यह कहने की कोशिश की उस समय क्या हुआ था पर वह इतना डरा हुआ था कि उसने जब भी कुछ कहने के लिये अपना मुँह खोला तो उसके मुँह से कुछ भी नहीं निकला।

सारे जानवरों ने केवल उसके पंखों की ही आवाज सुनी। वहॉ बैठे सारे जानवर चिल्लाये — "न्याय करो। मच्छर को सजा दो।"

अगबारा भी मच्छर से बहुत नाराज थे सो उन्होंने उसको शाप दिया — "क्योंकि तुमने सबकी बहुत बेइज़्ज़ती की है, तुमने मेरे सवालों का जवाब भी नहीं दिया है इसलिये आज से तुम कुछ भी नही बोल पाओगे। आज से तुम केवल भिनभिनाओगे।"

फिर अगबारा मुर्गे की तरफ घूमा — "ओ मुर्गे, तुम अबसे कभी भी सूरज को जगाने से मना नहीं करोगे। अगर कोई तुमको तंग भी करे तो तुम उसको अपने राजा के पास ले कर आओगे। वहॉ तुमको न्याय मिलेगा।"

यह सुन कर मुर्गा सन्तुष्ट हो गया। उसको लगा कि उसके साथ न्याय हुआ है। तुरन्त ही उसने अपना सिर उठाया, अपनी गरदन थोड़ी सी झुकायी, पूर्व की तरफ घूमा और बोला — "कुँकडू कू।" और करीब करीब उसी समय सूरज जाग गया और दिन आ गया।

उस दिन के बाद से न तो कभी मुर्गा सूरज को जगाने में फेल हुआ और न ही मच्छर को अपनी बोली वापस मिली। बस वह तो आदमियों के कानों के पास भिनभिनाने के रूप में उनको इलजाम लगाते पाये जाते हैं।

आज भी सूरज मुर्गे की बॉग से जागता है। कभी कभी मुर्गा ध्यान नहीं देता है और सूरज को जगाना भूल जाता है। सूरज तब सोने के लिये जल्दी चला जाता है हॉलाकि उसको आसमान में होना चाहिये।

उस समय लोग गड़बड़ा जाते हैं और शरण के लिये जगह ढूँढते हैं। वे सोचते कि शायद अब दुनियॉ खत्म होने वाली है। गोरे लोग उसको ग्रहण बोलते हैं।[91]

[91] This description shows that on the day of Solar Eclipse rooster does nor crow. I have never known this, so I have never noticed it. Can anyone help and confirm this?

37 तुमने बुलाया है[92]

एक बार नाइजीरिया के एक जंगल में एक कछुआ और एक बबून बहुत अच्छे दोस्त थे और अक्सर ही खाना एक साथ खाया करते थे।

उन दिनों जानवरों की दुनियॉ में बहुत बड़ा अकाल पड़ा हुआ था और किसी को भी खाना काफी नहीं मिल पा रहा था।

ऐसे समय में भी एक दिन बबून ने कछुए के साथ एक मजाक करने की सोची और उसको अपने घर खाने पर बुलाया।

"खट खट खट खट।"

कछुए ने पूछा — "कौन है।"

बबून बोला — "मैं हूँ।"

कछुआ बोला — "यह मैं कौन? क्या तुम्हारा कोई नाम नहीं है?"

बबून बोला — "मैं तुम्हारा दोस्त... ।"

[92] You Asked For It (Tale No 37) – an Igbo folktale from Nigeria, Africa.

कछुआ ने उसे चिढ़ाया — "अरे कौन सा दोस्त?"

बबून कुछ गुस्से से बोला — "मुझे नहीं लगता तुम्हारा कोई दोस्त है भी। कई दोस्तों को तो छोड़ दो।"

कछुआ हॅसते हुए बोला — "आओ बबून, मैं तो यूॅ ही ज़रा मजाक कर रहा था।"

बबून ने अन्दर आ कर पूछा — "आज कल तुम इस अकाल के दिनों में कैसे गुजारा कर रहे हो?"

कछुआ बोला — "बहुत ही मुश्किल हो रही है। ऐसा लग रहा है कि बस मैं तो मर ही जाऊॅगा। मेरा अनाज का भंडार घर खाली है और अब तो पेड़ की छाल भी मुझे अच्छी लगती है।"

बबून मुस्कुराया जैसे उसने गोरिल्ला के साथ कुश्ती का कोई मुकाबला जीत लिया हो। और अन्दर तो वह इतनी ज़ोर से हॅसा कि उसकी थोड़ी सी हॅसी बाहर भी निकल गयी और कछुए ने भी उसे सुन लिया।

बबून उछल उछल कर हॅसा — "हो हो हो हो।" और बोला — "आज तुम्हारी किस्मत बहुत अच्छी है कछुए दोस्त। आज शाम का खाना तुम मेरे साथ खाओ।"

कछुआ खुश हो कर बोला — "ओह बबून, यह तो बड़ी अच्छी बात है।"

बबून आगे बोला — "आज तुम दोपहर का खाना मत खाना ताकि तुम मेरे घर ज़्यादा खाना खा सको। इस तरह से तुम्हारे पास

मेरे घर में वह खाना खाने के लिये ज़्यादा जगह रहेगी जो मैं खास तुम्हारे लिये शाम को बनाने वाला हूँ। यह मेरी एक खास चीज़ है जो मेरे परिवार में बहुत सालों से बनती चली आ रही है।"

यह सुन कर कछुए के मुँह में पानी भर आया और वह बबून के घर का खाना खाने के लिये बेचैन हो उठा।

कछुआ बोला — "अच्छा बबून मेरे दोस्त, अब तुम मुझको ज़्यादा मत तरसाओ। बस अब तुम यहाँ से भागते नजर आओ और घर जा कर हमारे खाने की तैयारी करो। अब हम शाम को खाने पर मिलते हैं।"

बबून तुरन्त ही जितनी जल्दी भाग सकता था वहाँ से अपने घर भाग गया और खाना बनाने का सामान जुटाने में लग गया।

इस बीच कछुआ भी उसके पीछे पीछे हो लिया। बबून का घर कछुए के घर से क्योंकि थोड़ी दूर पर था तो कछुए ने सोचा कि क्यों न थोड़ा जल्दी ही बबून के घर के लिये रवाना हुआ जाये। क्योंकि उसको पहुँचने में तो देर लगती।

जब वह गर्मी में रेंगता जा रहा था तो उसको लगा कि वह वहाँ न जाये और घर वापस चला जाये क्योंकि गर्मी बहुत थी पर वह यह याद करके चलता रहा कि बबून ने उसको बढ़िया खाना खिलाने का वायदा किया था।

सो आखिरकार वह बबून के घर आ पहुँचा।

बबून ने उसको देख कर कहा — "आओ दोस्त।"

कछुए ने पूछा — "धन्यवाद दोस्त। क्या खाना तैयार है?"

बबून बोला — "नहीं, अभी नहीं। आखिरी चीज़ें डालने के लिये बस मैं तुम्हारा ही इन्तजार कर रहा था। इसके अलावा मैं उसको ठंडा भी नहीं होने देना चाहता था। तुम बैठो बस मैं खाना तैयार कर के अभी लगाता हूँ।"

कछुए ने पूछा — "मैं तुम्हारी कोई सहायता करूँ?"

बबून बोला — "नहीं नहीं बिल्कुल नहीं। बस तुम आराम से बैठो। मैं खाना अभी ले कर आया। आज तुम मेरे मेहमान हो।"

सो कछुआ आराम से बैठ गया और बबून खाना बनाने चला गया। जब कछुआ इन्तजार कर रहा था तो उसको खाने की बहुत ही अच्छी खुशबू आ रही थी।

उसने सोचा — "क्या यह मुर्गी का रसा है या फिर मक्का की रोटी? कितना समय हो गया ये सब चीज़ें खाये हुए।"

कुछ देर बाद बबून आया और बोला — "आओ दोस्त खाना तैयार है।"

"अरे वाह। चलो। मैं तो इस लम्बे रास्ते से आते आते थक गया हूँ। तुम मेरे घर से काफी दूरी पर रहते हो। या पता नहीं गर्मी और भूख दोनों ने ही शायद इस रास्ते को ज़रा ज़्यादा ही लम्बा बना दिया था।"

"कोई बात नहीं, तुम चिन्ता मत करो और खाना खाओ। देखो वह ऊपर रखा है खाना। चढ़ो और ले लो।" इतना कह कर बबून

ने पेड़ के ऊपर की तरफ इशारा किया जहॉ उसने खाना लगाया हुआ था।

कछुआ सोच रहा था कि वह ऊपर कैसे चढ़े। बबून तो पहले ही वहॉ चढ़ चुका था और उसने खाना खाना शुरू भी कर दिया था।

कछुआ नीचे से ही बोला — "दोस्त, मैं इतनी ऊपर तो चढ़ नहीं सकता तुम थोड़ा सा खाना मेरे लिये ऊपर से ही नीचे फेंक दो।"

"नहीं, मैं यह तो सह सकता हूॅ कि तुम मेरे साथ खाना न खाओ पर मैं इतना अच्छा खाना नीचे फेंक कर बरबाद नहीं कर सकता।"

कछुआ बोला — "तो मैं तो उतना ऊपर चढ़ नहीं सकता तुमको तो यह मालूम ही है।"

"यह तो बड़े शर्म की बात है। खाना तो यहीं इसी पेड़ की शाख पर रखा है। यही मेरी खाने की मेज है। अगर तुमको खाना खाना है तो आओ और ले लो।"

कछुए ने सोचा यह तो बड़ी बेरहमी और बेशर्मी की बात है। फिर भी उसने उस पेड़ पर चढ़ने की कोशिश की पर जब तक वह वहॉ पहुॅचा तब तक बबून ने वह सारा खाना खत्म कर लिया था।

जब बबून ने खाना खा लिया तो कछुए ने अपनी छड़ी उठायी और बड़े दर्द के साथ वापस अपने घर की तरफ चल दिया। उसकी

समझ में नहीं आ रहा था कि वह गरमी थी या भूख थी या फिर बबून का धोखा था जो उसको परेशान कर रहा था।

वह जब तक अपने घर पहुँचा तब तक उसे बहुत ज़ोर की प्यास लग आयी थी और उसके पैर गर्म रेत से जल रहे थे। वह घर आ कर ठंडा पानी पी कर लेट गया और बबून से इसका बदला लेने के बारे में बहुत देर तक सोचता रहा।

कई बाजार हफ्ते[93] बाद बबून को कछुए का खाना खाने के लिये बुलावा आया। पहले तो उसने सोचा कि शायद कछुआ उससे उस दिन का बदला लेने की सोच रहा हो पर फिर उसने सोचा कि कछुए ने उस दिन की घटना को मजाक में ही लिया होगा।

इसके अलावा कछुए के पास तो कोई ऐसी जगह ही नहीं है जहाँ वह खाना रख सके और मैं वहाँ न पहुँच सकूँ। सो उसने सोचा कि वह उसका बुलावा मान लेगा।

कछुए का घर बहुत दूर था। बबून ने भी कछुए की तरह अपनी यात्रा उस खाने के स्वाद से ही शुरू की जो उसके मेजबान कछुए ने उसको खिलाने का वायदा किया था।

गर्मी वाकई बहुत थी। यह उस दिन से भी कहीं ज़्यादा थी जब उसने कछुए को खाने के लिये बुलाया था क्योंकि अब तो जंगलों में आग भी लगनी शुरू हो गयी थी।

---

[93] In many African villages markets are still organized on weekly basis that is why it is called market week.

काफी घास फूस और झाड़ियॉ सूख चुकी थीं और आग की वजह से सारी जमीन काली हो रही थी।

उसके और कछुए के घर के बीच में एक झील पड़ती थी और झील के बाद एक मैदान था जो झाड़ियों के जला देखने की वजह से सारा काला हो गया था।

बबून ने उस झील को बिना किसी मुश्किल के पार कर लिया। जब वह कछुए के घर पहुॅचा तो उसने आराम की सॉस ली कि आखिर वह कछुए के घर आ ही गया था।

उसने देखा कि कछुआ एक बर्तन में कुछ चला रहा था। उसे लगा कि वह दलिया रहा होगा। वहॉ पहुॅच कर वह कछुए से बोला — "लगता है कि तुम तो बहुत ही अच्छे रसोइये हो।"

कछुए ने उसको घर के अन्दर लाते हुए कहा — "आओ बबून भाई, मुझे लग रहा है कि तुमको यहॉ समय पर आने में कोई मुश्किल नहीं हुई। मुझे बहुत खुशी है कि तुम आ गये। आओ बैठो। मैं अभी खाना लगाता हूॅ।"

कछुए ने बर्तन में से खाना निकाला और पेड़ के एक कटे हुए तने पर सजा कर लगा दिया और बबून उस पेड़ के तने के पास बैठ गया।

वह खाना खाना शुरू करने ही वाला था कि कछुए ने उसके हाथ देखे तो वह चिल्लाया — "रुक जाओ। क्या तुमको खाने का

ढंग भी नहीं आता? तुम्हारे तो हाथ ही बहुत काले हो रहे हैं। और ये तो उतने ही काले है जितना कि कोई पकाने वाला बर्तन। मेरा तो दो साल का बच्चा भी यह जानता है कि खाना कैसे खाना चाहिये।"

यह सुन कर बबून ने खाने से तुरन्त ही अपने हाथ खींच लिये और उनकी तरफ देखा। उसको भी लगा कि उसके हाथ तो वाकई बहुत गन्दे थे।

वह बोला — "मुझे लगता है कि ये मेरे हाथ गन्दे तब हो गये जब मैं वह मैदान पार कर के यहाँ आ रहा था।"

"यकीनन ये तभी गन्दे हुए होंगे। अब तुम झील पर जाओ और अपने हाथ धो कर आओ तब तक मैं खाने के लिये तुम्हारा इन्तजार करता हूँ।"

बबून भागा भागा उस काले मैदान में से हो कर झील पर गया, अपने हाथ धोये और वापस लौटा। पर जब वह वापस लौट रहा था तब भी उसको वही काला मैदान पार करके आना था।

सो जब तक वह कछुए के पास आया उसके हाथ फिर से काले हो गये थे। अबकी बार उसके हाथ पहले से भी ज़्यादा काले थे क्योंकि वे गीले थे।

कछुआ ने उसको चिढ़ाया — "दोस्त तुम्हारे हाथ तो पहले से भी ज़्यादा गन्दे हैं। क्या बात है? ऐसा लगता है कि यह कालिख

तुम्हें बहुत भा गयी है। तुम कालिख से कुश्ती लड़े थे या फिर उसमें तैरे थे?

जाओ फिर से जाओ और साफ हो कर आओ। और अच्छा हो अगर तुम जल्दी से आ जाओ क्योंकि नहीं तो मेरा यह खाना बस अब खत्म होने ही वाला है।"

सो बबून अपने हाथ धोने के लिये फिर से झील की तरफ भागा। उसको भूख भी बहुत लग रही थी। पर जब भी उसने कछुए के घर तक पहुँचने के लिये वह काला मैदान पार किया उसके हाथ उस मैदान की कालिख से काले हो गये।

इस बीच कछुआ अपने घर में दावत खा रहा था और खाना भी अब करीब करीब खत्म होने पर आ रहा था।

जब तक बबून तीसरी बार कछुए के घर आया खाना खत्म हो गया था पर हाथ उसके अभी भी काले ही थे। अब उसकी समझ में आ गया कि यह मजाक कछुए ने उससे बदला लेने के लिये किया था।

गुस्से से भरा भूखा बबून कछुए को गालियाँ देता हुआ अपने घर लौट आया।

कछुए ने अपना खाना खत्म किया और केले के पत्ते ओढ़ कर लेट गया। इस तरह से बबून से अपना बदला लिया।

कछुआ बोला — "दोस्तों, न तो तुमको खिलाड़ी वाला खेल खेलना चाहिये और न ही कभी चीते को उसकी पूँछ से पकड़ना चाहिये। तुम्हारी बड़ी हिम्मत है जो तुमने ऐसा किया।

ज़िन्दगी भर मैंने उन लोगों को धोखा दिया है जो ज़िन्दगी भर वापस मुझे धोखा देने का प्लान बनाते रहे हैं। और तुमने मुझे पहले दिन ही धोखा दे दिया? तुम क्या अपने आपको कुछ ज़्यादा ही होशियार समझते हो?"

38 शाही मछली[94]

एक बार कुछ छोटी छोटी मछलियॉ नदी से बहुत दूर एक छोटे से तालाब में रहतीं थी। क्योंकि वह नदी उस तालाब से बहुत दूर थी इसलिये इन छोटी मछलियों को बड़ी बड़ी मछलियों से डरने की कोई जरूरत नहीं थी।

बस उनको तभी परेशानी होती थी जब गॉव के बच्चे उस तालाब में मछलियॉ पकड़ने के लिये अपना कॉटा डालते थे।

पर मछलियॉ क्योंकि यह सब जानती थीं इसलिये यह उनको परेशानी नहीं लगती थी। बल्कि उनको वे लड़के अच्छे लगने लगे थे क्योंकि वे अपने साथ उनके खाने के लिये कीड़े ले कर आते थे।

लड़कों के मछली पकड़ने वाले कॉटे बहुत बड़े होते थे सो वे उनको निगल तो नहीं सकतीं थीं, बस वे उन कीड़ों को ही थोड़ा थोड़ा खाती रहतीं थीं जो उन कॉटों के चारों तरफ लगे रहते और उनको खाने के बाद कॉटों को बिना कीड़ों के नंगा छोड़ जातीं।

ज़्यादा कीड़े खाने के लिये वे उन कॉटों को पकड़ लेतीं और जब वे लड़के उन कॉटों को खींचते तो वे उनमें से निकल कर भाग जातीं।

---

[94] The Majestic Fish (Tale No 38) – an Igbo folktale from Nigeria, West Africa

जब लड़कों को अपने कॉटों में कोई मछली दिखायी नहीं देती तो वे अपने कॉटों में और चारा लगाते और उनको फिर से मछली पकड़ने के लिये तालाब में डाल देते।

सब मछलियॉ अपनी छोटी सी दुनियॉ मे खुश खुश रह रहीं थीं कि एक बारिश के मौसम में एक दिन बहुत पानी बरसा और उस नदी में बाढ़ आ गयी। उससे किसानों के खेतों में भी पानी भर गया और उस छोटे तालाब में भी।

जब पानी थोड़ा कम हुआ तो वहॉ कीचड़ हो गयी, पानी चला गया और वे छोटी मछलियॉ फिर से अपने छोटे तालाब में आ गयीं। पर इस बार वे अकेली नहीं थीं उनके तालाब में एक बहुत बड़ा नर मछली आ गया था।

छोटी मछलियों ने उस बड़े नर मछली से दोस्ती करनी चाही पर वह उन छोटी मछलियों से दोस्ती करना नहीं चाहता था। वह तो बस अपने ही में मस्त रहता था।

एक दिन उसने छोटी मछलियों से कहा — "क्या तुम छोटी छोटी मछलियॉ इस पानी को झॅझोड़ना बन्द करोगी? मैं ज़रा धूप खाने और सोने की कोशिश कर रहा हूॅ।" कह कर उसने घूम कर तालाब के किनारे की तरफ मुॅह कर लिया।

अब क्योंकि वह नर मछली काफी बड़ा था उसके घूमने से तालाब का पानी इतने ज़ोर से हिल गया कि वे छोटी मछलियॉ आपस में और तालाब के किनारे से बहुत ज़ोर से टकरा गयीं।

उस बड़े नर मछली और छोटी मछलियों के सम्बन्धों में कोई सुधार नही हो रहा था। छोटी मछलियॉ हमेशा उसको नजर अन्दाज करना चाहतीं पर वह तालाब इतना छोटा था और वह बड़ा मछली इतना बड़ा था कि वे अक्सर ही उससे टकरा जातीं।

सो एक दिन एक छोटी मछली ने उस बड़े मछली से कहा — "क्या तुमको ऐसा नहीं लगता कि तुमको उस बड़ी नदी में चले जाना चाहिये जहॉ तुम्हारे जैसी मछलियॉ रहती हैं?

शायद तुमको वहॉ अपने जैसी मछलियों के साथ रहने में कुछ अच्छा लगे। मुझे ऐसा लगता है कि तुमको यहॉ रहने में अच्छा नहीं लगता और मैं तुमको इस बारे में कुछ गलत भी नहीं समझती।"

यह सुन कर उस बड़े मछली के अहम को थोड़ी चोट पहुॅची। उसने खूब सारी हवा अपने फेंफड़ों में भरी जिससे उसका शरीर और भी बड़ा हो गया और वह और भी ज़्यादा शाही दिखने लगा।

"ओह हॉ। शायद तुम ठीक कहती हो।"

छोटी मछली आगे बोली — "यकीनन। क्या यह साफ साफ दिखायी नहीं दे रहा है कि तुम किसी शाही खानदान के हो और हम छोटी मछलियॉ तो कभी तुम्हारे पंख के बराबर भी नहीं हो पायेंगी, एक तालाब में तुम्हारे साथ रहने की तो बात ही छोड़ो।

तुम्हारी मूॅछें और जिस शान से तुम चलते हो वह सब यह बताता है कि तुम किसी शाही खानदान के हो।"

कई दिनों तक उस तालाब में उस बड़े मछली के बारे में बात होती रही। छोटी मछलियॉ उसके अहम की तारीफ करती रहीं। उस बड़ी मछली ने भी सोचा कि उस छोटी मछली ने उसे ठीक ही सलाह दी थी सो उसने उसे मानने का फैसला कर लिया।

उसने छोटी मछलियों से कहा — "तुम लोग ठीक कहती हो। मुझे लगता है कि तुमने ठीक ही कहा है। बहुत हो गया तुम छोटी छोटी मछलियों के साथ रहते रहते और तुम्हारी बचपने वाली बातें सुनते सुनते।

सो अगली बार जब नदी में बाढ़ आयेगी और बाढ़ का पानी यहॉ तक आयेगा तो मैं यहॉ से चला जाऊॅगा। मुझे उस बड़ी नदी में अपने जैसी बड़ी और शाही मछलियों के साथ ही रहना चाहिये।"

यह सुन कर बहुत सारी छोटी मछलियॉ बहुत खुश हुईं हालॉकि उनमें से कुछ ने सोचा कि यह बड़ी मछली वहॉ से जा कर बहुत बड़ी गलती करेगा। और कुछ ने तो उसको इस बारे में दोबारा सोचने की भी सलाह दी। कुछ ने उसके इस विचार की बड़ी तारीफ की।

कई बाजार हफ्तों के बाद बारिश फिर से आयी और उसके साथ आयी बाढ़ भी। वह तालाब और आस पास की चारों तरफ की सारी जमीन पानी से भर गयी। जहॉ तक नजर जाती थी पानी ही पानी फैला पड़ा था।

कुछ मछलियॉ तो उस पानी में उसके तेज़ बहाव की वजह से चक्कर खा रहीं थीं। वे जब तालाब की तरफ आयीं तो उन्होंने तालाब के किनारों को कस कर पकड़ लिया ताकि वे वहॉ से जा न सकें। पर उस बड़े नर मछली ने ऐसा नहीं किया।

वह धीरे से तालाब की सतह तक पहुँच गया और छोटी मछलियों को बाई बाई कह कर बाढ़ के सहारे सहारे समुद्र की तरफ चल दिया।

जैसे जैसे वह बाढ़ के सहारे गया तो उसने देखा कि सारी चीज़ें उस तालाब के मुकाबले में साइज़ में बहुत बड़ी बड़ी थीं। झाड़ियॉ पेड़ों के बराबर ऊँची खड़ी थीं। चट्टानें भी बहुत ऊँची ऊँची थीं बिल्कुल पहाड़ जैसी।

यहॉ तक कि वहॉ का पानी भी अलग था। उसको लगा कि वहॉ का पानी का स्वाद भी कुछ अजीब सा था।

उस सबको देख कर तो वह नर मछली बहुत ही खुश हो गया कि अब वह एक नयी ज़िन्दगी शुरू करेगा। उसको लगा कि "मैंने यह सब पहले क्यों नहीं सोचा। मैं तो इन शाही मछलियों से मिलने के लिये बिल्कुल भी इन्तजार नहीं कर सकता।"

जैसे जैसे वह अपनी नयी ज़िन्दगी के बारे में सोच रहा था कि वह दो बड़ी चट्टानों के बीच से गुजरा। वह बहुत थक चुका था सो उसने ज़रा सा आराम करने की सोची।

पर जैसे ही वह आराम करने के लिये रुका तो उसको लगा कि पानी का बहाव वहॉ पर बढ़ कर गोल गोल घूम रहा था। सो वह अपने आप को एक जगह चिपक कर रुकने के लिये रुका तो उसने देखा कि उससे कहीं बड़ी एक मछली उसकी ऑखों में घूर रही थी।

वह उससे बचने की सोच ही रहा था कि एक और उससे भी बड़ी मछली उसके पास आ गयी। उसने उससे पूछा — "तुम जैसी छोटी मछली यहॉ क्या कर रही है□हमारे रास्ते से हट जाओ कहीं ऐसा न हो कि हम तुम्हारे ऊपर चढ़ जायें।"

पहली वाली मछली ने पूछा — "क्या हम इसको खा सकते हैं?"

दूसरी वाली मछली जो लगता था कि पहली वाली की मॉ थी बोली — "यह तो तुम्हारे लिये भी बहुत छोटा है।" उसके बाद उनमें से एक ने उसको अपने रास्ते से दूर खदेड़ दिया। वह बड़ा नर मछली उन दोनों चट्टानों के बीच में जा कर छिप गया।

यह सब देख कर उसको लगा कि "मुझे अपने पुराने वाले तालाब में वापस जाना चाहिये। और यह काम मुझे जल्दी ही कर लेना चाहिये जब तक यह पानी है नहीं तो कोई दूसरी मछली आ कर मुझे ज़िन्दा ही खा जायेगी।"

जब पानी कुछ शान्त सा हुआ तो वह बहाव के ऊपर की तरफ उस तालाब की तरफ तैरा।

वह सारे रास्ते यही सोचता रहा कि "अच्छा हो मुझे वह तालाब मिल जाये और अगर वह मुझे मिल गया तो मैं उसी में खुश रहूँगा और उसकी तारीफ भी करूँगा। मैं वहाँ उन मछलियों को अपना दोस्त बना लूँगा और उनसे मिल जुल कर रहूँगा।"

बहाव के ऊपर की तरफ तैरना मुश्किल काम था बजाय बहाव के साथ तैरने के सो वह पानी के थोड़ा नीचे की तरफ तैर रहा था।

धीरे धीरे वह अपनी जानी पहचानी जगह आ गया और आखीर में वह अपने तालाब में आ गया। वहाँ आ कर वह उसकी तली में हारा थका हॉफता सा लेट गया।

एक छोटी मछली ने उसको देखा तो बोली — "देखो तो कौन वापस आया है। लगता है कि वह बड़ी नदी भी इसको बड़ी नहीं लगी।"

पर वह बड़ा नर मछली वहीं पड़ा रहा। उसने अपने मन में सोचा "तुम जीत गयीं। अब तुम जो चाहो कहो। अगर मुझे यह पता होता कि बड़ी नदी कैसी होती है तो मैं यहाँ से कभी जाता ही नहीं।"

उस दिन के बाद से छोटी मछलियाँ वहाँ आराम से खेलती रहीं। बड़ी मछली ने उनको कभी तंग नहीं किया और न ही उसने कभी उन छोटी मछलियों के मुकाबले में अपने आपको शाही महसूस किया। वह भी उनके साथ खेलता रहा और वे सब खुशी खुशी मिल जुल कर रहते रहे।

39 बादलों में मॉ[95]

एक बार जानवरों के देश में बहुत ही भयानक अकाल पड़ा। बहुत दिनों से बारिश नहीं हुई थी। सारे जानवरों के शरीरों की हड्डियॉ दिखायी देने लगीं थीं।

इस अकाल से बचने के लिये और अपनी जाति को बचाने के लिये सारे जानवरों ने एक मीटिंग की और उसमें अपनी अपनी मॉओं को खाने के लिये देने का निश्चय किया।

उस समय वे सब अकाल से बहुत बुरी तरह से घिरे हुए थे सो बहुत से जानवरों ने तो अपनी मॉओं को खाने के लिये दे भी दिया था।

हालॉकि वे सभी अपनी अपनी मॉओं को बहुत प्यार करते थे फिर भी उनको लगा कि वह अकाल उनके लिये कोई बहुत बड़ी आफत थी जो उनकी मॉओं की बलि मॉग रही थी।

कुछ जानवरों ने अपने इस काम को यह कह कर ठीक बताया कि अकाल की यही इच्छा थी। और यह तो पुरानी रीति है कि बेटा ही मॉ को दफन करता है।

खरगोश बोला — "हॉ वह तो ठीक है कि बेटा मॉ को दफन करता है पर उसको खाता तो नहीं न।"

---

[95] The Mother in the Clouds (Tale No 39) – a folktale from Sierra Leone, West Africa.

खरगोश अपनी मॉ को बहुत प्यार करता था। वह बहुत जल्दी ही इस बात के खिलाफ हो गया कि मॉओं को खाने के लिये दिया जाये। उसको अपनी मॉ को खाने के लिये देने का विचार कुछ जमा नहीं।

जितना ज़्यादा वह इस बारे में सोचता रहा उतना ही वह उसको बेमतलब लगता रहा। उसने उसी समय यह निश्चय कर लिया कि वह अपनी मॉ को किसी भी कीमत पर बचा कर ही रहेगा। वह उसको किसी को भी खाने नहीं देगा।

एक दिन खरगोश ने अपनी मॉ से कहा — "मॉ, यह तो तुम को मालूम ही है कि बहुत जल्दी तुमको खाने के लिये देने की मेरी भी बारी आने वाली है, मगर मैं ऐसा नहीं करूॅगा।"

उसकी मॉ बोली — "पर बेटा वे मेरे पीछे आयेंगे। तुम मुझे कैसे बचाओगे?"

खरगोश बोला — "हॉ, आयेंगे तो। पर मेरे पास एक तरकीब है। मैं तुमको बादलों में छिपा दूॅगा। जब तक अकाल खत्म होगा तब तक तुम वहीं रहना।

यह रस्सी तुम अपने साथ लेती जाओ। जब मैं तुम्हारे लिये कुछ खाना ले कर आऊॅगा तब मैं एक गाना गाऊॅगा।

उस समय तुम यह रस्सी नीचे फेंक देना और मैं इस रस्सी के सहारे तुम्हारा खाना ले कर ऊपर आ जाऊॅगा। जब मैं वहॉ से वापस आ जाऊॅ तो तुम यह रस्सी तुरन्त ही ऊपर खींच लेना।"

खरगोश की मॉ को उसकी यह तरकीब बहुत अच्छी लगी। उसको इस बात की भी बहुत खुशी हुई कि उसका बेटा उसका कितना ख्याल रखता है और अब उसको मरना नहीं पड़ेगा।

उस दिन काफी रात बीत जाने पर खरगोश अपनी मॉ को जंगल में एक अकेली जगह ले गया। वहॉ वे दोनों एक बहुत ही ऊॅचे पेड़ पर चढ़े और फिर वहॉ से बादलों में चले गये। वहॉ उसने अपनी मॉ को बादलों में छिपा दिया।

फिर दोनों ने मिल कर अपने छिपे हुए इशारों और रस्सी को नीचे गिराने और ऊपर खींचने की रिहर्सल की। जब खरगोश इस सबसे सन्तुष्ट हो गया तो वह नीचे उतर आया। नीचे आ कर उसने वह पेड़ काट दिया और दूसरे जानवरों में जा कर मिल गया।

उस दिन के बाद से जब भी जानवर किसी की मॉ को खाते तो खरगोश अपने खाने के हिस्से को दो हिस्सों में बॉटता। एक हिस्से को वह खुद खा लेता और दूसरा हिस्सा बचा कर रख लेता।

जब सारे जानवर चले जाते तो वह बचाया हुआ खाने का दूसरा हिस्सा अपनी मॉ के लिये ले जाता। जंगल में जा कर वह उसको यह गाना गा कर पुकारता —

मॉ खरगोश, मॉ खरगोश, रस्सी भेजो, रस्सी भेजो
क्योंकि तुम्हारा बेटा तुम्हारे लिये खाना ले कर आया है
मॉ खरगोश, मॉ खरगोश, रस्सी भेजो, रस्सी भेजो

यह गाना सुन कर मॉ खरगोश ऊपर से रस्सी नीचे फेंक देती। खरगोश उस रस्सी को ठीक से पकड़ता और जब उसे यकीन हो जाता कि उसने उसे ठीक से पकड़ लिया है तब वह फिर एक गाना गाता —

मॉ खरगोश, मॉ खरगोश, रस्सी खींचो, रस्सी खींचो
क्योंकि तुम्हारा बेटा तुम्हारे लिये खाना ले कर आया है
मॉ खरगोश, मॉ खरगोश, रस्सी खींचो, रस्सी खींचो

मॉ खरगोश फिर वह रस्सी ऊपर खींच लेती। जब खरगोश बादलों में गायब हो जाता तो वह अपनी मॉ को खाना खिलाता। वह उसको यह भी बताता कि धरती पर क्या हो रहा था और कैसे अकाल खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहा था।

फिर वह नीचे उतर आता और उसकी मॉ रस्सी ऊपर खींच लेती। उसके बाद वह फिर जंगल में दूसरे जानवरों के पास चला जाता। यह सब काफी दिनों तक चलता रहा।

क्योंकि यह देखना बन्दर का काम था कि अपनी मॉ को देने की बारी कब किस जानवर की आती है सो एक दिन उसने खरगोश से कहा — "अपनी मॉ को खाने के लिये देने की कल तुम्हारी बारी है।"

खरगोश आश्चर्य से बोला — "क्या फिर से? तुमको तो मालूम है कि मेरे एक ही मॉ है और हम लोगों ने उसे बहुत पहले ही खा लिया है।"

बन्दर को भी यह सुन कर आश्चर्य हुआ वह बोला — "नहीं तो, हमने तो उसे अभी तक नहीं खाया।"

खरगोश बोला — "हॉ, हमने खाया है। इस बात को क्योंकि काफी दिन हो गये हैं इसलिये शायद तुम उसे भूल गये हो।"

बन्दर को अपने ऊपर पूरा विश्वास था कि खरगोश की मॉ को अब तक नहीं खाया गया है। बन्दर के अलावा किसी और जानवर को भी यह याद नहीं था कि उन्होंने खरगोश की मॉ को खाया था या नहीं।

सो उस समय तो उन्होंने उसको छोड़ दिया और लाइन में जो दूसरा जानवर था उसको उसकी मॉ को लाने को बोल दिया पर उस दिन के बाद से उन सबने खरगोश के ऊपर नजर रखना शुरू कर दिया।

उसी दिन शाम को खरगोश जैसे पहले अपनी मॉ के लिये खाना ले कर जाता था अपना बचा हुआ आधा खाना ले कर अपनी मॉ को खिलाने के लिये चला।

जंगल में पहुॅच कर उसने रस्सी नीचे गिराने के लिये गाना गाया और जब वह रस्सी उसने ठीक से पकड़ ली तो फिर उसको ऊपर खींचने के लिये गाना गाया। खरगोश ऊपर चला गया।

इस बीच बहुत सारे जानवर वहीं आस पास झाड़ियों में छिपे हुए उसको देख रहे थे पर बेचारे खरगोश को तो यह सब पता ही नहीं था।

बन्दर बोला — "ओह, अब हमको पता चला कि इसने अपनी मॉ को कहॉ छिपा रखा है। जब कोई चालाक आदमी मरता है तो उसको चालाक आदमी के पास ही दफनाया जाता है।"

नर गिलहरी बोला — "उसने हर एक की मॉ को तो खाया पर अपनी मॉ को खाने के लिये नहीं दिया। अब हमने उसे पकड़ लिया है अब वह अपनी मॉ को नहीं बचा सकता। मुझे पूरा यकीन है कि अब तक उसकी मॉ खा खा कर खूब मोटी हो गयी होगी और रसीली भी।"

वे सब धीरज से खरगोश के लौटने का इन्तजार करते रहे। थोड़ी ही देर में खरगोश उसी रस्सी के सहारे वापस लौट आया।

जैसे ही वह वहॉ से चला गया बाकी के जानवरों ने निश्चय किया कि वे अगले दिन आ कर उसकी मॉ को ले जायेंगे। ऐसा सोच कर उस समय वे भी सब अपने अपने घर चले गये।

अगले दिन बन्दर ने चिपमंक[96] को अपनी मॉ को खाने के लिये देने के लिये बुलाया। यह उसने इस लिये किया था कि जानवर चाहते थे कि सबको थोड़ा थोड़ा खाना ही मिले।

[96] Chipmunk is a type of squirrel with stripes mostly found in North America. See its picture above.

उन्होंने यह भी निश्चय किया कि वे अपना सारा खाना खत्म नहीं करेंगे। यह इसलिये भी था ताकि वे खरगोश को अपनी माँ के लिये बचा हुआ खाना इकट्ठा करने के लिये कुछ समय दे सकें।

जानवरों ने कुछ कौर खाये और वे सब खरगोश से पहले ही वहाँ चले गये जहाँ से खरगोश अपनी माँ को बुलाया करता था।

शेर बड़े खरगोश[97] के कान में फुसफुसाया — "तुम पुकारो उसे।"

सो बड़े खरगोश ने गीत गाया —

माँ खरगोश, माँ खरगोश, रस्सी भेजो, रस्सी भेजो
क्योंकि तुम्हारा बेटा तुम्हारे लिये खाना ले कर आया है
माँ खरगोश, माँ खरगोश, रस्सी भेजो, रस्सी भेजो

तुरन्त ही बादलों में से एक रस्सी गिरी। सारे जानवरों ने उस रस्सी को पकड़ लिया। शेर सबसे पहले चढ़ा और बाकी के जानवर बाद में चढ़े। और बड़े खरगोश ने फिर गाया —

माँ खरगोश, माँ खरगोश, रस्सी खींचो, रस्सी खींचो
क्योंकि तुम्हारा बेटा तुम्हारे लिये खाना ले कर आया है
माँ खरगोश, माँ खरगोश, रस्सी खींचो, रस्सी खींचो

[97] Translated for the word "Hare" – Hare is different from Rabbit in size and look. It is not a domestic animal and live on the ground as opposed to Rabbit who lives in burrows. See its picture above.

जैसे ही मॉ खरगोश ने यह गाना सुना उसने वह रस्सी खींचनी शुरू कर दी। अब क्योंकि उस रस्सी पर तो बहुत सारे जानवर लदे हुए थे तो वह रस्सी उसके लिये खींचनी बहुत भारी हो गयी।

उस बेचारी ने यह सोचते हुए बहुत ज़ोर लगा कर वह रस्सी खींची कि शायद उसका बेटा आज उसके लिये बहुत सारा खाना ले कर आया है। उसने अपने नाखून बादलों में गड़ा रखे थे ताकि वह रस्सी कहीं उसके हाथ से छूट न जाये।

पर वह उस रस्सी को खींचने के लिये जितना ज़्यादा ज़ोर लगा रही थी वह रस्सी उसको उतनी ही ज़्यादा भारी लग रही थी।

जैसे ही शेर उसके पास तक पहुँचा क्योंकि सबसे पहले वही चढ़ा था, खरगोश वहॉ आ गया और देखा कि वहॉ क्या हो रहा था।

उसने तुरन्त ही एक और गाना गाया —

मॉ खरगोश, मॉ खरगोश, रस्सी काटो, रस्सी काटो
क्योंकि जानवर तुमको मारने आ रहे हैं
मॉ खरगोश मॉ खरगोश, रस्सी काटो, रस्सी काटो

तुरन्त ही खरगोश की मॉ ने एक तेज़ चाकू से वह रस्सी काट दी और सारे के सारे जानवर बादलों से नीचे गिर पड़े। कुछ की टॉग टूट गयी, कुछ की कमर टूट गयी और कुछ तो मर भी गये।

उसके बाद खरगोश ने अपनी मॉ से फिर से रस्सी फेंकने के लिये कहा। मॉ ने फिर से रस्सी फेंक दी।

खरगोश से जितने मरे हुए जानवर उठाये जा सकते थे उसने उतने जानवर उठाये और उनको ले कर बादलों में चला गया और उसने और उसकी मॉ ने उन सबको तब तक खाया जब तक धरती पर अकाल खत्म नहीं हो गया।

इस तरह अपनी हाशियारी से खरगोश ने अपनी मॉ को भी बचाया और मुसीबत के समय में अकाल का सामना भी किया।

40 सबसे बड़ा चोर कौन[98]

एक बार एक सरदार ने अपने राज्य में यह मुनादी पिटवा दी कि "हम अपने राज्य के लोगों के बारे में यह जानना चाहते हैं कि कौन आदमी क्या काम कर सकता है।

हमको इस बात से कोई मतलब नहीं है कि कोई क्या करता है। सबकी अपनी अपनी खासियत है, अच्छी है या बुरी है पर हमें अपने राज्य के लोगों की ये खास खासियत जाननी चाहिये ताकि हम को जब जरूरत पड़े तो हम उनकी उन खासियतों को इस्तेमाल कर सकें।"

सो गॉव के सारे लोग अपने काम के हिसाब से एक जगह इकट्ठा हो गये और अपना अपना काम लिखवाने लगे।

कुछ उनमें लोहा गलाने वाले थे, कुछ किसान थे, कुछ लकड़ी काटने वाले थे, कुछ बढ़ई थे, आदि आदि। उनमें कुछ झूठ बोलने वाले और कुछ चोर भी थे।

वहॉ उस गॉव के बाहर से पूर्व दिशा के एक गॉव से एक आदमी आया जिसको उसके गॉव वालों ने चोरी की वजह से निकाल दिया था क्योंकि वह लोगों की उपज से ले कर उनकी चॉदी तक चोरी कर लेता था।

[98] Who is the Greatest Thief? (Tale No 40) – a folktale from Sierra Leone, West Africa.

उसी समय उसी गॉव में एक और आदमी भी आया जो उस गॉव के बाहर से पश्चिम दिशा से आया था। वह भी अपने गॉव का मशहूर चोर था। जल्दी ही उन दोनों में अपने अपने काम को ले कर बहस शुरू हो गयी।

पूर्व दिशा वाला चोर बोला — "मुझसे ज़्यादा अच्छी तरीके से कोई नहीं चुरा सकता। मैं चोरी करने में इतना अच्छा हूॅ कि मैं तो सरदार से भी इतनी अच्छी तरह से चोरी कर सकता हूॅ कि न तो उसको और न ही उसके चौकीदारों को पता चलेगा।"

इस पर पश्चिम दिशा वाला बोला — "अगर तुम चोरी करने में इतने अच्छे हो तो तुमको तुम्हारे गॉव वालों ने क्यों निकाल दिया? मैं चोरी करने वालों में सबसे अच्छा हूॅ।"

पास में खड़ा एक आदमी बोला — "हम सभी अपने अपने गॉवों में अपने अपने कामों में सबसे अच्छा होने का दावा करते हैं। अगर तुमको लगता है कि तुम दूसरों से ज़्यादा अच्छे हो तो साबित करके दिखाओ।"

इस बीच में उन लोगों की बातें सुनने के लिये वहॉ कुछ भीड़ इकट्ठी हो गयी। उसी समय सरदार ने सब लोगों का ध्यान खींचा कि उसने उन सबको वहॉ क्यों बुलाया था।

पूर्व दिशा वाले चोर ने सरदार को इज़्ज़त से सलाम किया और दूसरे चोर की तरफ इशारा करके बोला — "सरदार अमर रहे। यह

आदमी आपका समय बर्बाद करने आया है। मैं सबसे अच्छा चोर हूँ और इसको आपको इसके गॉव वापस भेज देना चाहिये।"

सरदार ने दोनों चोरों की सफाइयॉ सुनीं कि उनमें से कौन अच्छा चोर था।

जब वे दोनों एक दूसरे की तरफ इशारा कर कर के बातें कर रहे थे तो पूर्व के गॉव वाले चोर ने एक चील को एक बहुत ही ऊँचे पेड़ की चोटी पर बैठते देखा।

उसको लगा कि वह वहॉ अपने अंडों को सेने के लिये बैठी थी। वह बोला — "सरदार अमर रहे। इस मामले को हमेशा के लिये तय करने के लिये मैं उस पेड़ पर चढ़ जाऊँगा और उस चील के अंडे चुरा कर आपको ला कर दे दूँगा।"

सरदार बोला — "ठीक है। तुम लाओ उनको और मैं तुमको सबसे अच्छा चोर घोषित कर दूँगा।"

यह सुन कर वह पूर्व वाला चोर उस पेड़ की तरफ चल दिया जिस पर वह चील बैठी थी। वह बड़ी सावधानी से बिना कोई आवाज किये हुए उस पेड़ पर चढ़ा।

उसने एक एक करके उस चील के अंडे चुराये और अपनी जेब में रख लिये। चील को पता भी नहीं चला कि वह वहॉ था।

अंडे चुरा कर वह धीरे से और बिना कोई आवाज किये पेड़ से नीचे उतरा और नीचे आ कर बड़े घमंड से सरदार से बोला —

"देखिये सरदार, मेरी जेब में देखिये। वहॉ उस चील के अंडे हैं जो मैंने उसके घोंसले से बड़ी चालाकी से चुराये हैं।"

सरदार बोला — "मुझे यकीन है कि तुम उनको चुरा लाये हो। अब तुम उनको मेरे और मेरे सलाहकारों के सामने दिखा और दो ताकि मैं तुमको सबसे अच्छा चोर घोषित कर सकूॅ।"

चोर ने वे अंडे निकालने के लिये अपनी जेब में हाथ डाला तो उसमें तो उसे अंडों की बजाय पत्थर के टुकड़े मिले। उसने सब जगह ढूॅढ लिया पर उसको वे अंडे कहीं भी नहीं मिले।

चोर यह देख कर बड़ा शर्मिन्दा हुआ। वह तो हैरान रह गया कि उसने तो अंडे चुराये थे फिर वे कहॉ गये।

सरदार गरजा — "तुमने अंडे चुराये भी थे या फिर तुम ऐसे ही शेखी बघार रहे हो? तुम क्या सोचते हो कि तुम हमको बेवकूफ बना लोगे?"

फिर उसने अपने आदमियों से कहा — "इस चोर को जंजीरों से बॉध दो। इसको हमें धोखा देने के जुर्म की सजा मिलनी ही चाहिये।"

सरदार उसको सजा देने ही वाला था पश्चिम के गॉव वाले चोर ने अपनी जेब में हाथ डाला और चील के अंडे निकाल कर उसके सामने रख दिये।

अंडे उसके सामने रखते हुए वह बोला — "ये रहे आपके चील के अंडे। मैंने ही इन अंडों को उसकी जेब से चोरी कर लिया था और इनकी जगह उसकी जेब में पत्थर के टुकड़े रख दिये थे।"

यह देख कर तो सरदार, उसके सलाहकार और आस पास खड़े सारे लोगों ने आश्चर्य से दाँतों तले उँगली दबा ली।

तुम लोग क्या सोचते हो कि उन दोनों में बड़ा चोर कौन था? वह जिसने चील के घोंसले में से अंडे चुराये या वह चोर जिसने पहले चोर की जेब से अंडे चुराये?

41 सूअर की थूथनी छोटी क्यों[99]

यह कुछ ज़्यादा पुरानी बात नहीं है जब सूअर के भी हाथी जैसी लम्बी सूँड़ हुआ करती थी। और उसको अपनी उस लम्बी सूँड़ पर बड़ा नाज़ था।

उससे वह पानी ले कर अपने आप नहा सकता था, अपने बागीचे में पानी दे सकता था, कोई डराने वाली धुन भी निकाल सकता था और उसको घुमा कर वह उससे गॉठ भी बॉध सकता था।

उन दिनों सूअर एक पैसा उधार देने वाले का काम भी करता था। इस काम में वह इसलिये भी बहुत मशहूर हो गया था कि किसी ने अभी तक उसके पैसे नहीं मारे थे।

वह अपनी सूँड़ से सूँघता और जो भी अपराधी होता उसको उसके छिपी हुई जगह से घसीट लाता। इसलिये उसको अपनी सूँड़ पर बहुत ही घमंड था।

एक बार अनन्सी ने अपने बेटे का दहेज[100] देने के लिये सूअर से कुछ पैसे उधार लिये और क्योंकि अनन्सी को अपनी इज़्ज़त बना

---

[99] Why Pig Has a Short Snout (Tale No 41) – A folktale from Ghana, Africa.
This story taken from the book : "The Pot of Wisdom: Ananse Stories". By Adwoa Badoe.
Toronto: Douglas & McIntyre. 2011. 63 p.

[100] Dowry for the son – in many cultures it is a custom that at the time of marriage the boy's father pays the dowry to the girl's father. There it is called the "Bride Price".

कर रखनी थी इसलिये उसने और भी बहुत सारा पैसा उधार लिया था।

एक महीना बीत गया। अनन्सी का सूअर को पैसा वापस करने का समय आ गया था पर ऐसा लगता था कि अनन्सी तो पैसा ले कर वापस करना ही भूल गया था।

सो एक दिन सूअर अनन्सी के घर की तरफ गया और बोला — "मैं अपनी लम्बी सूँड़ के साथ तुमको ढूँढने आ गया हूँ।"

पर जब वह अनन्सी के घर पहुँचा तो अनन्सी ने उससे प्रार्थना की कि वह उसको एक हफ्ते का समय और दे दे। उसने कहा — "तब तक मैंने जिन जिन को पैसा उधार दे रखा है वे भी मेरा पैसा वापस कर देंगे और फिर मैं तुम्हारा पैसा वापस कर दूँगा।"

सूअर ने उसको धमकी दी — "तुम्हारे लिये यही अच्छा होगा कि तुम एक हफ्ते बाद मेरा पैसा वापस कर दो नहीं तो मैं तुम्हारी ज़िन्दगी दूभर कर दूँगा।"

कह कर उसने अपनी सूँड़ हवा में हिलायी और दूसरों से पैसा वसूल करने चल दिया।

अगले हफ्ते सूअर फिर आया — "मेरा पैसा अनन्सी, मुझे मेरा पैसा वापस चाहिये।"

अनन्सी पास में गड़े एक बॉस के डंडे के नीचे की तरफ देखता हुआ बोला — "तुमने तो मुझे डरा ही दिया। देखो मैंने तुम्हारा पैसा

इस बॉस के डंडे के नीचे रख दिया है। अब मुझे देखना यह है कि मैं उसको अब निकालूँ कैसे।"

सूअर ने कहा — "मैं निकाल लूँगा। यह मेरी गलती थी जो मैंने तुमको पैसा उधार दिया। अब मैं अपनी सूँड़ नीचे डाल कर उसे अपने आप ही निकाल लूँगा।"

कह कर सूअर ने अपनी सूँड़ उस बॉस के डंडे के नीचे डाल दी पर वहाँ उसको कुछ मिला ही नहीं। अब वहाँ कुछ होता तो मिलता न। तो वह बोला — "यहाँ तो कुछ भी नहीं है।"

अनन्सी बोला — "थोड़ा और गहरा जाओ।" सो सूअर थोड़ा और नीचे तक गया। पर जब उसने देखा कि उसकी सूँड़ और नीचे तक नहीं जा सकती तो उसने उसे ऊपर खींचने की कोशिश की पर वह उसे ऊपर भी नहीं खींच सका। वह तो उस गड्ढे में फँस गयी थी।

उसने अपना सिर इधर हिलाया उधर हिलाया पर कुछ नहीं हुआ। वह अपनी सूँड़ नहीं निकाल सका। वह इधर लेटा उधर सिर पटका पर फिर भी वह अपनी सूँड़ नहीं निकाल सका।

वह चिल्लाया — "अरे कोई मेरी सहायता करो।"

पर अनन्सी तो तब तक अपने जाले में जा कर छिप गया था और दूसरा कोई उसकी कोई सहायता करने को वहाँ तैयार नहीं था। तो फिर सूअर को यह काम भी खुद ही करना पड़ा। उसने

एक बार ज़ोर से अपना सिर हिला कर अपनी सूँड़ को ऊपर खींचा।

इस सूँड़ खींचने में बॉस का वह डंडा भी उसकी सूँड़ के साथ साथ उखड़ गया। सूअर की सूँड़ टूट गयी थी। पर अफसोस कि वह फिर नहीं बढ़ी।

उधर अनन्सी ने भी उसका पैसा नहीं चुकाया

इस तरह सूअर ने अपनी सूँड़ भी खोयी और उसका पैसा भी मारा गया। सूअर ने उसको अपने पैसे के लिये फिर कभी तंग नहीं किया। इस तरह से अनन्सी ने सूअर से अपनी जान बचायी।

Classic Books of African Folktales in Hindi

Translated by Sushma Gupta

1901 **Zanzibar Tales.**
No 1 by George W Bateman. 10 tales. The 1st African Folktale book.

1910 **Folktales From Southern Nigeria.**
No 15 By Elphinstone Dayrell. London: Longman Green & Co. 40 tales.

1917 **West African Folk-Tales**
No 20 By William H Barker and Cecilia Sinclair. Lagos: Bookshop. 35 tales.

1947 **The Cow Tail Switch and Other West African Stories.**
No 14 By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt. 143 p.

1962 **Fourteen Hundred Cowries and Other stories.**
No 8 By Abayomi Fuja. Ibadan: OUP. 31 tales

1998 **African Folktales.**
No 12 By Alessandro Ceni. 18 tales.

2001 **Orphan Girl and Other Stories.**
No 13 By Buchi Offodile. 41 tales

2002 **Nelson Mandela's Favorite African Tales**.
No 7 ed Nelson Mandela. 32 tales

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें हिन्दी में
हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. **1901**. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। **2022**

2. Serbian Folklore.
Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. **1874.** 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंगेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। **2022**

"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich. London : George and Harry. 1914 (1916, 1921). it contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

3. The King Solomon: Solomon and Saturn
राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी **2019**

4. Folktales of Bengal.
By Rev Lal Behari Dey. **1889**. 22 tales.
बंगाल की लोक कथाऐं — लाल बिहारी डे। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट। । **2020**

5. Russian Folk-Tales.
By Alexander Nikolayevich Afanasief. **1889**. 64 tales. Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। **2022**। तीन भाग

6. Folk Tales from the Russian.
By Verra de Blumenthal. **1903**. 9 tales**.**
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। **2022**

7. Nelson Mandela's Favorite African Folktales.
Collected and Edited by Nelson Mandela. **2002**. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं। **2022**

8. Fourteen Hundred Cowries.
By Fuja Abayomi. Ibadan: OUP. **1962**. 31 tales.
चौदह सौ कौड़ियॉ – फूजा अबायोमी। **2022**

9. Il Pentamerone.
By Giambattista Basile. **1634**. 50 tales.
इल पैन्टामिरोन – जियामबतिस्ता बासिले। **2022**। **3** भाग

10. Tales of the Punjab.
By Flora Annie Steel. **1894**. 43 tales.
पंजाब की लोक कथाऐं – फ्लोरा ऐनी स्टील। **2022**। **2** भाग

11. Folk-tales of Kashmir.
By James Hinton Knowles. **1887**. 64 tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं – जेम्स हिन्टन नोलिस। **2022**। **4** भाग

12. African Folktales.
By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. **1998**. 18 tales.
अफ्रीका की लोक कथाऐं – अलेसान्ड्रो सैनी। **2022**

13. Orphan Girl and Other Stories.
By Offodile Buchi. **2001**. 41 tales
लावारिस लड़की और दूसरी कहानियॉ – ओफ़ोडिल बूची। **2022**

14. The Cow-tail Switch and Other West African Stories.
By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt and Company. **1947**. 143 p.
गाय की पूँछ की छड़ी – हैरल्ड कूरलैन्डर और जौर्ज हरज़ौग। **2022**

15. Folktales of Southern Nigeria.
By Elphinston Dayrell. London : Longmans Green & Co. **1910**. 40 tales.
दक्षिणी नाइजीरिया की लोक कथाऐं – ऐलफिन्स्टन डैरैल। **2022**

16. Folk-lore and Legends : Oriental.
By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. **1889**. 13 Folktales.
अरब की लोक कथाऐं – चार्ल्स जौन टिबिट्स। **2022**

17. The Oriental Story Book.
By Wilhelm Hauff. Tr by GP Quackenbos. NY : D Appleton. **1855**. 7 long Oriental folktales.
ओरिऐन्ट की कहानियों की किताब – विलहैल्म हौफ़। **2022**

18. Georgian Folk Tales.
Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales. Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.
जियोर्जिया की लोक कथाऐं – मरजोरी वारड्रौप। **2022**। **2** भाग

19. Tales of the Sun, OR Folklore of South India.
By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. **1890**. 26 Tales
सूरज की कहानियॉ या दक्षिण की लोक कथाऐं — मिसेज़ हावर्ड किंग्सकोटे और पंडित नतीसा सास्त्री। **2022**।

20. West African Tales.
By William J Barker and Cecilia Sinclair. **1917**. 35 tales. Available in English at :
पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाऐं — विलियम जे बार्कर और सिसीलिया सिन्क्लेयर। **2022**

21. Nights of Straparola.
By Giovanni Francesco Straparola. **1550, 1553**. 2 vols. First Tr: HG Waters. London: Lawrence and Bullen. **1894**.
स्ट्रापरोला की रातें — जियोवानी फ्रान्सैस्को स्ट्रापरोला। **2022**

22. Deccan Nursery Tales.
By CA Kincaid. **1914**. 20 Tales
दक्कन की नर्सरी की कहानियॉ – सी ए किनकैड। **2022**

23. Old Deccan Days.
By Mary Frere. **1868 (5th ed in 1898**) 24 Tales.
पुराने दक्कन के दिन – मैरी फ्रैरे। **2022**

24. Tales of Four Dervesh.
By Amir Khusro. **Early 14th century**. 5 tales. Available in English at :
किस्सये चहार दरवेश — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**

25. The Adventures of Hatim Tai : a romance (Qissaye Hatim Tai).
Translated by Duncan Forbes. London : Oriental Translation Fund. **1830.** 330p.
किस्सये हातिम ताई — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**।

26. Russian Garland : being Russian folktales.
Edited by Robert Steele. NY : Robert McBride. **1916**. 17 tales.
रूसी लोक कथा माला — अंग्रेजी अनुवाद – ऐडीटर रोबर्ट स्टीले। **2022**

27. Italian Popular Tales.
By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. **1885**. 109 tales.
इटली की लोकप्रिय कहानियॉ — थोमस फ्रैडैरिक केन। **2022**

28. Indian Fairy Tales
By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 1892. 29 tales.
भारतीय परियों की कहानियॉ — जोसेफ जेकब्स। **2022**

29. Shuk Saptati.
By Unknown. c 12th century. Tr in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911. Under the Title "The Enchanted Parrot".
शुक सप्तति — । **2022**

30. Indian Fairy Tales
By MSH Stokes. London : Ellis & White. **1880.** 30 tales.
भारतीय परियों की कहानियॉ — ऐम ऐस ऐच स्टोक्स। **2022**

31. Romantic Tales of the Panjab
By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. **1903**. 422 p. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियॉ — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

32. Indian Nights' Entertainment
By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. **1892**. 426 p. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

33. Il Decamerone
By Giovanni Boccaccio. **1353**. 100 Tales.
इल डैकामिरोन — जिओवानी बोकाकिओ। **2022**

34. Indian Antiquary 1872
A collection of scattered folktales in this journal. 1872.

35. Short Tales of Punjab
By Charles Swynnerton. Collected from his two books "Romantic Tales of the Panjab" and "Indian Nights' Entertainment". **1903 and 1892** respectively.
पंजाब की लघु कथाऐं —।

36. Cossack Fairy Tales and Folk Tales.
Translated in English By R Nisbet Bain. George G Harrp & Co. **c 1894**. 27 Tales.
कोज़ैक की परियों की कहानियॉ — अनुवादक आर निस्बत बैन। **2022**

Facebook Group :
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2021** तक इनकी **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022